



देश 2025-26



देश संपादकीय बोर्ड 2025–26



आचार्य राजेन्द्र कुमार पाण्डेय
(संरक्षक)



डॉ. प्रेम प्रकाश शर्मा
(प्रधान संपादक)



आचार्य ललित मोहन (सिंधी)
(संपादक)



आचार्य छोटू राम मीणा (हिन्दी)
(संपादक)



पुरुषोत्तम दास (अंग्रेजी)
(संपादक)



डॉ. सनेहलता पवार (संस्कृत)
(संपादिका)



आचार्या अंतरा चौधुरी (बांग्ला)
(संपादिका)



डॉ. मुनीष कुमार (पंजाबी)
(संपादक)

देश

2025-26

संरक्षक

आचार्य राजेन्द्र कुमार पान्डेय

प्रधान संपादक

डॉ. प्रेम प्रकाश शर्मा

संपादक	विभाग	छात्र-संपादक
आचार्य छोटू राम मीणा	हिन्दी	अर्हत
पुरुषोत्तम दास	अंग्रेजी	अद्रिता चक्रवर्ती
डॉ. सनेहलता पवार	संस्कृत	बाल मुकुंद सिंह
आचार्या अंतरा चौधुरी	बांग्ला	खुशबू कुमारी
डॉ. मुनीष कुमार	पंजाबी	कोमल
आचार्य ललित मोहन	सिंधी	विपिन करनोजिया

ISBN : 978-93-95133-50-0

Year : 2026

**‘देश’ पत्रिका अपने लेखकों के विचारों का आदर करती है।
जरूरी नहीं कि वह उनसे सहमत हों।**

Cover Design : Saswat Naik, Sandeep Kumar, Vrinda Society, Botany Deptt. DBC
Statement Under Cause 19-D

Place of Publication : Deshbandhu College, Kalkaji, New Delhi-110019.

Periodicity of Publication 01, Annual No. of Issue : 53

Printers Name : Parnassus Printers & Publishers

Nationality : Indian

Address : New Delhi-110014, Mobile : 9810054402

Publishers Name : Prof. Rajendra Kumar Pandey (Principal)

Nationality : Indian

Address : Deshbandhu College, Kalkaji, New Delhi-110019.

प्राचार्य की ओर से...

‘देश’ 2025-26 का प्रकाशन समसामयिक मुद्दों को देखने, समझने व उनको हल करने की दृष्टि देती है। रचनाकारों की रचनात्मकता को अपने पाठकों के बीच लाने का कार्य करती है। किसी भी पत्रिका का संपादन एक सामूहिक सहयोग की मांग करता है। सामूहिकता का यह प्रयास ही प्रकाशन की अनिवार्य शर्त है। ‘देश’ बहुभाषिक पत्रिका है। यह महाविद्यालय द्वारा विभिन्न भाषाओं के सम्मान की ओर ध्यान दिलाती है। डॉ. प्रेम प्रकाश शर्मा के प्रधान संपादकत्व में निकलने वाला यह अंक बहुत से अर्थों में संदेश पाठकों तक पहुँचाने में सफल होगा। इसके अंक के संपादन सहयोग हेतु मैं आचार्य छोटू राम मीणा, श्री पुरुषोत्तम दास, डॉ. सनेहलता पवार, डॉ. मुनीष कुमार, आचार्या अंतरा चौधुरी व आचार्य ललित मोहन का धन्यवाद करता हूँ। सभी का आपसी सहयोग ‘देश’ पत्रिका का यह नवीनतम अंक प्रकाशित करने में सफल हुआ है। छः भाषाओं (हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, पंजाबी, बांग्ला, सिन्धी) के छात्र संपादकों को भी धन्यवाद देता हूँ। भाषाई सम्मान की यही भावना ‘देश’ पत्रिका को विशिष्ट बनाती है।



‘देश’ के इस अंक को प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है।

सुंदर व सुनहरे भविष्य की मंगलकामनाओं के साथ।

आचार्य राजेन्द्र कुमार पाण्डेय
प्राचार्य, देशबंधु महाविद्यालय

सेवानिवृत्त संकाय व गैरसंकाय सदस्य

HAPPY RETIREMENT



Balwan Singh
Assistant Office

28.02.2026



Prof. U. P. Tyagi
Professor, Dept. of Physics

28.02.2026



Kuldeep Singh
Laboratory Assistant
Department of Physics

30.11.2025



Mr. Balwan Singh
Lab Asstt.,
Dept. of Physics

31.01.2026



Mr. Prem Chand
Laboratory Assistant
Department of Physics

30.11.2025

देशबंधु महाविद्यालय परिवार आपके सफल, सुखद व स्वस्थ जीवन के साथ दीर्घायु होने की कामना करता है।

संपादकीय

जीवित रहने के लिए श्रम अवश्य करना चाहिए।

सभी संतों ने ये बात कही है।

श्रम से मिलने वाले सुख व चैन को ईश्वर मानने की बात संत रैदास करते हैं।

श्रम को ईश्वर जानि के, जऊ पूजही दिन रैन।
रैदास तिन्हहि संसार मह, सदा मिलही सुख चैन॥



सस्ते श्रमिकों के लिए भारतीय मानव संसाधन पूरी दुनिया में महत्वपूर्ण है। नये अवसर की तलाश ने उनको दुनिया के कोने-कोने में पहुंचाया है। भारतीय समाज की संरचना ने श्रमजीवी दुनिया को एक विशेष दृष्टि से देखने का प्रयास किया है। वैश्वीकरण इस दृष्टिकोण को बदलने के प्रयास में सफल होता हुआ दिखता है। यही श्रम जब शिक्षक और विद्यार्थी करता है तब वो समय की धारा बदल देता है। कम समय में अपना श्रेष्ठ प्रदर्शन करता है। सभी के श्रम ने इस अंक को सार्थकता प्रदान की है।

‘देश’ पत्रिका का यह अंक अपने साथी संपादकों का आभार व्यक्त करता है। इस कार्य को पूरा करने के लिए संपादकों ने बिना किसी देरी के सामग्री संकलन में महत्वपूर्ण योगदान दिया। आप सभी के सहयोग ने ही ‘देश’ अंक की कल्पना को साकार बनाया है। प्रो. छोटू राम मीणा (हिन्दी), श्री पुरुषोत्तम दास (अंग्रेजी), डॉ. सनेहलता पवार (संस्कृत), डॉ. मुनीष कुमार (पंजाबी), प्रो. अंतरा चौधुरी (बांग्ला) व प्रो. ललित मोहन (सिंधी) के साथ-साथ सभी छः भाषाओं के छात्र संपादकों का सहयोग मिलने के परिणामस्वरूप यह संपादन कार्य आसान व सहज रूप से सफल हो पाया। इस अंक के लिए छायाकार के रूप में मुकुंद, घर्माशु शेखर, विपिन करनोजिया व मनस्वी चंद्रा ने महती कार्य किया है। इस अंक के प्रकाशक पारनासुस प्रिंटर्स का भी मैं आभार व्यक्त करता हूँ।

प्राचार्य प्रो. राजेन्द्र कुमार पाण्डेय जी के हरसंभव सहयोग व समर्थन के कारण यह अंक प्रकाशित होकर आप सब पाठकों के बीच आ सका है। इस अंक के सुंदर आवरण चित्र के लिए वृन्दा सोसाइटी, वनस्पति विज्ञान के छात्रों का बहुत-बहुत आभार। आपके आवरण चित्र ने पत्रिका के आकर्षण में चार चांद लगा दिये हैं।

आशा करते हैं कि यह अंक आपको पसंद आयेगा। प्रिय पाठकों के हाथों में मुझे ‘देश 2025-26’ अंक सौंपते हुए अत्यन्त हर्ष का अनुभव हो रहा है।

डॉ. प्रेम प्रकाश शर्मा
प्रधान संपादक ‘देश’

SABRANG 2026



SABRANG 2026



SABRANG 2026



SPORTS DAY 2026



SPORTS DAY 2026



NCC ACTIVITY



NSS ACTIVITY



देश
2025-26

हिंदी विभाग

संपादक : आचार्य छोटू राम मीणा
छात्र संपादक : अर्हत

विषय सूची

अतीत में दो दिन	- आचार्य छोटू राम मीणा	2-9
एक आत्मसाक्षात्कार	- आचार्य संजीव कुमार	10-13
बस एक पेड़	- आयुष्मान राय	14-17
राजमहल का सच	- कविता	18-21
जीत का नशा, लघु कहानी	- विपिन करनोजिया, तान्या वर्मा	22-25
कुछ यादें दरख्तों तले, जीत का हिसाब	- अरिन कुमार शुक्ला, विपिन करनोजिया	26-27
श्रान्ति बचपन का घर, दोस्तों की हस्ती	- स्निग्धा रक्षित, आदित्य कुमार सिंह	28
गरीब की अदालत	- राहुल दीप	29
कविताएँ	- बजरंग विश्नोई, तान्या वर्मा, सुहानी पंजिका, राहुल दीप, निशा, तन्मय श्रीवास्तव, गुंजन	30-34
मुझे याद आता है	- शिल्पी श्रीवास्तव	35
गजल	- अर्हत	36

अतीत में दो दिन

यात्रा करना आसान कहाँ है इसके लिए योजना बनाकर तैयारी करनी पड़ती है। यात्राएं यदि एक बड़े समूह व जिम्मेदारी वाली हो तो यह और अधिक दुरह हो जाती है। नवंबर माह में कॉलेज के विद्यार्थियों के साथ आभानेरी की चांद बावड़ी व भानगढ़ देखने की यात्रा योजना बनी थी। इनकी अनुमति व राहखर्ची की बात स्वीकृत हुई। इसके बाद यात्रा की चिट्ठी उप-प्राचार्य की फाइलों से गुजरते हुए प्रभारी के पास पहुंच गई। तब तक पांचवें सप्ताह के इम्तिहान शुरू हो गए। इसके बाद यात्रा की योजना धूमिल पड़ती चली गई। जनवरी माह के अंतिम सप्ताह में विद्यार्थियों की इम्तिहान खत्म होते ही यात्रा की जो लौ जली थी, वह फिर भभक उठी। इस तरह विश्व विरासत सूची में शुमार चांद बावड़ी की जगह विद्यार्थियों ने जयपुर शहर की यात्रा योजना बना डाली। प्राचार्य प्रो. राजेंद्र कुमार पाण्डेय ने इस यात्रा की अनुमति देकर विभागीय यात्रा के लिए ऐतिहासिक कार्य को आगे बढ़ाने का कार्य किया। फरवरी के अंतिम सप्ताह में हम पांच शिक्षकों के साथ विभाग की तरफ से 40 विद्यार्थियों ने यात्रा करने के लिए दिल्ली से निकले।

इस यात्रा का पहला पड़ाव अलवर में स्थित व दौसा-जयपुर जिलों की सीमाओं में बंधा भानगढ़ जो दुनिया में एशिया का एकमात्र व दुनिया का दूसरा रहस्यमई किला माना जाता है उसके लिए किया। विद्यार्थियों ने रास्ते में वीरानगी को देखकर बोला कि हम यहां क्यों आ गये। यहाँ तो कोई नहीं मिलेगा। लेकिन जैसे-जैसे किले के अंदर जाने से पहले प्राचीन बाजार में बढ़ते गये। बहुत सारे

देशी-विदेशी पर्यटकों के साथ स्थानीय ग्रामीण जो किले में अंदर स्थित लोकदेवता से मन्नत मांगने आये थे मिले व दिखने लगे। इनको देखकर विद्यार्थियों का जो उत्साह ठंडा पड़ गया था। वह वापस कुलांचे मारने लगा। जौहरी बाजार जो तत्कालीन स्थानीय जनता के लिए लगता था। ऐसा लग रहा था जैसे हम उस समय के वस्तु विनिमय वाले हाट के ग्राहक हों, जो कुछ खरीदने के कारण यहां भटक रहे हैं। विद्यार्थियों की चहल कदमी ने उस सौलहवीं सदी के उजड़े हुए बाजार को सचमुच का बाजार बना डाला। यात्राएं हमें इस तरह वर्तमान से भूतकाल में और भूतकाल से भविष्य में ले जाती है। कुछ बताने व गलतियां न दोहराने का मर्म बताती है।

भानगढ़ का यह किला, दिल्ली दरबार के नजदीक होने के कारण जयपुर रियासत के संबंधों को मजबूती प्रदान करने कार्य करता था। इसलिए इस किले को मानसिंह ने अपने भाई माधोसिंह को सौंप दिया था। टिकट लेने के बाद एक स्थानीय गाइड तय कर लिया गया। जो कहानी इस किले के बर्बाद होने की गाइड ने बतायी उसके अलावा भी मेरे पास एक कहानी थी। वह गाइड के पास नहीं थी। एक तांत्रिक के श्राप के कारण यह किला एक दिन में खाली हो गया था। कहा जाता है कि माधोसिंह की रूपवती रानी को एक तांत्रिक प्रेम करने लगा। तांत्रिक रानी रत्नावती को वश में करने के लिए इत्र का प्रयोग करता है। रानी ने भांपकर इत्र की शीशी को पत्थर पर फेंक देती है। इसके बाद तांत्रिक एक पत्थर से टकरा जाता है। मृत्यु

से पहले तांत्रिक ने श्राप दिया कि पूरा शहर तबाह हो जाएगा। यहाँ रहने वाले लोग मर जाएंगे। यही कहा जाता है कि यह किला अचानक एक रात में उजड़ गया। इसके बाद जयपुर में स्थायी राज्य की नींव पड़ी। राजा अपनी जनता को लेकर यहां से जयपुर चला गया। यह कहानी यह भी बताती है कि तांत्रिक शक्तियों का प्रयोग किसी स्त्री को पाने के लिए कर रहा था। ऐसा करने के बाद भी वह पूरे राज्य को श्राप दे देता है। गलत आदमी का श्राप राज्य को कैसे लगा, दूसरा श्राप तो राजा या रानी के द्वारा तप भंग करने पर लगना चाहिए था। निर्दोष जनता को श्राप वाली बात हजम नहीं होती है। इस कहानी को मन नहीं मान रहा था।

एक दूसरी कथा के अनुसार भानगढ़ के बसने से पहले वहाँ गुरु बालूनाथ नामक साधु तपस्या करते थे। उन्होंने शर्त रखी थी कि किले की छाया उनके स्थान पर नहीं पड़नी चाहिए। लेकिन राजा अजब सिंह ने महल को ऊँचा बना दिया जिससे साधु क्रोधित हो गए और श्राप दे दिया।

तांत्रिक व साधु की अपनी मनोवैज्ञानिक शक्तियाँ होती हैं। कुछ ने अपनी शक्तियों का प्रयोग सुंदर स्त्रियों को रिझाने व वश में करने के लिए किया। कुछ ने राजा से अपने लिए विशेष अधिकार रक्षा के लिए किया। लोक की विशेषता यह है कि वह श्राप को सहज रूप से स्वीकार कर उसी कथा का प्रचार करने लग जाता है। यह श्राप एक तरह से वर्जना के संदर्भ में भी है। इतिहास में जर, जरा, जोरू की कथा हर किले से जुड़ी हुई मिलती है। यहां रानी व तांत्रिक की कथा होने के कारण अनुठापन है। इसलिए तांत्रिक की भटकती आत्मा

किसी की तलाश में रात में अलग-अलग आवाजें निकालने का भ्रम है। रात के समय न जाने का कारण प्राकृतिक है। सरिस्का वन्यजीव अभ्यारण्य की जद में आने के कारण यहां आज भी अलग-अलग तरह की आवाजें आने की बात गाइड व स्थानीय जनता द्वारा सुनी जा सकता है। लोक, विश्वास व आस्थाओं को अपनी पीठ पर लेकर चलता है। लोक की यह पीठ अपनी बातों को अगली पीढ़ियों को सौंपती रहती है।

ऐतिहासिक रूप से भानगढ़ किले का भूगोल, 1783 का प्लेग, अकाल, भूकंप व दिल्ली दरबार की लड़ाईयों ने राजा को यह स्थान छोड़ने को मजबूर किया होगा। कोरोना की भयावह यादें एक रात में शहरों के उजड़ने की स्मृति को फिर ताजा कर देती हैं। हमारे विद्यार्थियों ने तर्क दिया कि हिन्दी सिनेमा ऐसे किलों को लेकर एक बाजार का निर्माण करता रहा है। किले के भीतरी परिसर में पांच मंदिर होने के बावजूद भूतों का होना उन्हें गढ़ा हुआ तर्क लगा। मैंने विद्यार्थियों से यही बात कही कि घनघोर अंधेरा होने पर क्या दिया डर के मारे अपनी रोशनी बंद कर देता है। आप सभी मेरे लिए उस दिये के समान हो जो अकेले अंधेरे से लड़ सकता है। यह डर रूपी अंधेरा आपके दिमाग में है, जो आज छंट गया। इसके बाद एक उजड़े हुए शहर के बाजार व आंगन में जाकर आबाद हुए शहर को देखने के लिए निकल गये।

वैश्विक नागरिक होने के कारण हमने यह भी देखा किसी भी बोली भाषा के लोगों को संगीत ही आपस में जोड़ने का अवसर प्रदान कर देता है। यात्रा में संगीत पर्यटकों के लिए दुरियाँ समेट

कर नजदीकियाँ बढ़ाने का कार्य करता है। इन विद्यार्थियों के सीमित दायरों को संगीत की तेज आवाज ने तोड़ा व नये समूह बनाने में सफल हुए। एक तरह से एक दहलीज से दूसरी दहलीज तक खींचकर ले जाने का काम यह संगीत करता है। जयपुर पहुंच कर रात्रि समय में नाहरगढ़ किले से शहर को रोशनी में जगमगाते देखा तो याद आया आज मैं ऊपर आसमां नीचे वाला गाना। लेकिन ऐसा भारत के अनेक शहरों में देखने को मिलता है। रात में वापस आकर दाल, बाटी और चुरमा के साथ हवामहल का बाहर रोशनी में दीदार किया। दुनिया को जब हम पूंजीवाद के दौर में गैरविश्वसनीय नजरिये से देखते हैं। ऐसे में पर्यटक के मन में ठगी व लूट का भाव पहले आता है। व्यवस्था व सुरक्षा का भाव पीछे उनमें जुड़ जाते हैं। जयपुर में ठरहने के ठिया का ऑनलाइन बुक करना और डोरमेट्री की व्यवस्था देखकर मन का खुश हो जाना यात्रा को आनंददायक बनाने का कार्य किया। विकसित देशों में सोलो ट्रेवलर्स के लिए डोरमेट्री का बहुत अच्छे विकल्प मिल जाते हैं। भारत में पर्यटकों के लिए यह सस्ता व आसान तरीका एक भरोसा बनकर उभरेगा ऐसी उम्मीद करते हैं। इसमें दुनिया के तमाम घुमक्कड़ लोगों से दोस्ती करने का भी अवसर मिलता है। धीरे-धीरे यह डोरमेट्री भारतीय पर्यटन के लिए ही नहीं पर्यटकों व घुमक्कड़ों की नई जमात तैयार करने में अपनी भूमिका निभायेगा।

दूसरे दिन सुबह उठकर यात्रा प्रबंधन का जिम्मा संभाले सोनू गुप्ता के साथ जलमहल तक सुबह की सैर करने निकल गया। बाद में हमारी शिक्षक साथी डॉ अग्रवाल की इच्छा थी जयपुर

आये हैं तो गोविंद देवजी के मंदिर चलकर प्रात झांकी देखी जाए। मुझे दो अन्य साथियों की इच्छा देखकर जाना हुआ लेकिन झांकी के बाद बाहर प्रसाद के रूप में खिचड़ी बांटने वाले की ओर मैंने साथियों का ध्यान दिलाया। मुझे सुबह की सैर करने के बाद प्रसाद रूप में अच्छा नाश्ता पसंद आया। इसलिए मैंने बच्चों के नाम की प्रार्थना पर दो बार प्रसाद पाया और निश्चित हो गया।

आमेर का किला देखते समय एक विद्यार्थी ने पूछा कि सर राजा पहाड़ी पर किला बनाकर रहता था और जनता की रक्षा करता था। अब आप यह बतायें कि जनता तो पहाड़ी किले से नीचे समतल जगह रहती थी तो राजा उनकी रक्षा करता था या अपनी रक्षा करता था। प्रजा की रक्षा का यह कौनसा तरीका था। थोड़ा संस्कारित करके मैंने कहा जनता की रक्षा के नाम पर वह अपनी रक्षा जनता से करवाता था। राजा किसी ऊंचे पहाड़ी किले पर रहे यही नियम था। आजकल तो राजा किलों और पहाड़ी में नहीं रहता क्योंकि उसके पास हथियार, सैनिक आदि हैं। लेकिन अब दुनिया में युद्ध एक राजा नहीं बल्कि हथियार बेचने वाले पूंजीपति लड़ते हैं। वह समय था जब केवल सैनिकों के परिवार ही अनाथ हुआ करते थे। साधारण जनता युद्ध से अलग रहती थी। मौटेतौर पर राजा का बदला साधारण जनता से लेने का चलन तैमूरलंग, नादिरशाह ने शुरू किया था।

जयपुर के बाजार ने कुछ विद्यार्थियों पर बहुत बड़ा जादू किया। इसलिए कुछ ने जंतर मंतर के बदले जयपुर में खरीददारी करने का फैसला किया। उनको हमने इस काम के लिए लगभग डेढ़ घंटे

से भी ज्यादा समय दिया। कुछ विद्यार्थियों में पूरा शहर खरीदने की लालसा दहाड़े मारने लगी। मुझे लगा कि इनको बाजार की जादुई माया का आनंद लेने दिया जाए। पर्यटनवृत्ति वाले विद्यार्थियों को जंतर मंतर के लिए भेजकर मैं बाजार खरीद वाले विद्यार्थियों का इंतजार करने लगा। यात्रापिपासुओं व बाजार दर्शन की अलग अलग टोली बनाकर हमने नयी पीढी को बहुत सही तरीके से पहचानने का कार्य किया। इनके बीच में रहकर उनको साधने का यह नया तरीका हमने ढूंढ लिया था। इस तरह अतीत के किले, भानगढ़ का बाजार, जयपुर के ऐतिहासिक अतीत और वर्तमान के बाजार को अपने अंदर समेटते हुए वापस अपने वर्तमान (दिल्ली) में लौट आये।

हिमालय आस्था, प्रकृति और जीवन

हिन्दी ऑनर्स आठवें सेमेस्टर के शोध छात्रों ने अलवर-जयपुर यात्रा के अनुभवों से अलग होकर रहे। अब वे जब यात्रा की बात उनके मन आयी तो वे उत्तराखंड यात्रा की योजना बना कर ले आये। विगत वर्ष उग्रसेन की बावड़ी व हुंमायू का मकबरा के साथ रहीम की दरगाह की यात्रा कर चुके थे। इस वर्ष वे दिल्ली से बाहर पहाड़ में कहीं घुमना चाहते थे। यह चाह उत्तराखण्ड के देवप्रयाग, देवरिया ताल, तुंगनाथ, उखीमठ, कार्तिक स्वामी मंदिर व ऋषिकेश यात्रा की थी। मेरे साथ तीन शिक्षक (डॉ. स्नेहलता, डॉ. सीमा कुमारी व डॉ. नरेंद्र कुमार) ग्यारह विद्यार्थियों को लेकर मार्च के अंतिम सप्ताह में दिल्ली से घुमने निकल गये।

संगम में शहर बनते शहर तीर्थयात्रियों की सुविधा के नाम फलते-फूलते हैं। धीरे-धीरे यह

सुविधा आस्था और भक्ति के नाम पर शहर को अलग स्थान प्रदान करती है। यात्रियों के साथ पर्यटन का अवसर लिये हुए शहर अपने पुराने मिजाज को छोड़कर नये रंग में ढल जाता है। देवप्रयाग को देखने के बाद भागीरथी व अलकनंदा के संगम में आचमन तो मन को शांति देता ही है। पर्यटकों के लिए भी मन में बसे देवप्रयाग का सुंदर दृश्य एक शकुन का काम करता है। संगम का दृश्य हिन्दी सिनेमा, अखबारों, कथाओं, किताबों, चित्रों को देखकर व्यक्ति के मन पर अपनी छवि का निर्माण कर लेता है। दिमाग में बने हुए उस स्थान पर जाते हैं। सचमुच वह स्थान सुंदर है, तो मन में एक आह पैदा करता है कि काश हम बहुत पहले यहाँ आ पाते।

घुमक्कड़, पर्यटक व यात्री तीनों के लिए भागीरथी का ठंडा व स्वच्छ जल मन को मंत्रमुग्ध कर देता है। भागीरथी यहीं संगम से पहले अपनी विशेषता से परिचित करवाती है। दूसरी तरफ वह मैदानी इलाकों में भागी चली जाने की बात कहती है। जैसे उसको प्राणी जगत की प्यास बुझाने की चिंता सता रही हो। उसकी दूसरी बहन अलकनंदा शांत, धीरे श्यामला रंग लिये आराम से भागीरथी से मिलती है। उसको देखकर लगता है जैसे वह अपनी बहन से कह रही हो कि रुको बहन। नीचे जाने की ऐसी भी क्या जल्दी है। प्राणियों में मानव की फितरत को मैं जानती हूँ। तब भागीरथी अलकनंदा से कहती है कि मेरा धर्म मुझे याद है। मुझे दूसरा क्या करता है उसकी परवाह नहीं है। मेरा काम प्राणियों की प्यास व धरा को शस्यश्यामला बनाना है। मानव का कर्म उसके साथ। यह कभी ज्यादा परेशान करेगा तो वह मुझे

यहां आकर देख ले। नमन कर ले। बात समझ में आ जाएगी। लेकिन बहन अभी तू मेरा साथ दे। हम दोनों बहनें इस धरा का उपकार करने के लिए आगे बढ़ें। फिर आगे साथ-साथ बढ़ते हुए नया रूप यहां से धारण करते नया नाम भी स्वीकार कर लेती है।

रास्ते में गढ़वाल में अलकनंदा की धारा किनारे और 2013 में धारा के मध्य बने धारी देवी मंदिर को देखने से नहीं रोक पाये। गहरी हरियाली के बीच लाल व पीले रंग के आकर्षण मंदिर की ओर ध्यान आकर्षित करता है। देवी की मान्यता है यह तीन में तीन रूप बदलती है। सुबह बालिका, दोपहर युवती व सांध्य प्रौढ़ा के रूप में। व्यक्ति की तीन अवस्थाओं का संकेत देवी देती है। बाल को युवा होने का संदेश, युवा को प्रौढ़ होने का संदेश। समय के साथ हम बदलते हैं हमारा शरीर भी थक व जर्जर होता है। किसी व्यक्ति को अपने युवा होने पर गुमान व किसी के प्रौढ़ होने पर मजाक नहीं करने की सलाह देवी से सीख के तौर पर मिलती है। देवी-देवताओं के प्रति ऐसे विश्वास और आस्था ही उनको लौकिक से अलौकिक बनाते हैं।

ठहराव के लिए सारी गांव रखा गया था। यहां पहाड़ी पर देवरिया ताल को देखना था। बारिश के कारण देवरिया ताल नहीं देख पाये। यात्रा में कुछ स्थान अनदेखे भी छोड़ देना चाहिए जिससे आप फिर दुबारा वहां जा सके। देवरिया ताल कभी बुलायेगा तो फिर कभी वहां जायेंगे। ट्रैक को बीच रास्ते में छोड़कर वापस आना पड़ा। बारिश में चाय की टापरी में मैगी व चाय का आनंद लिया। मैगी ने पहाड़ों में अपने मजबूत पांव पसार लिया है।

कहीं भी जाये मैगी आपको मिल ही जाएगी। चाय व मैगी बना रही महिला से हमने पर्यटक के बारे में जानना चाहा। क्या पहले भी इतने ही लोग यहां घुमने आते थे। तब उसने बताया कि यह लगभग 2017-18 के बाद से शुरू हुआ है। कोरोना के बाद तो यहां बहुत ज्यादा लोग आने लगे हैं। वह बताती है कि इसलिए यहां लॉज, होमस्टे, चाय व मैगी कोना, होटल बनते जा रहे हैं। यहां आने वाले पर्यटक सुविधाएं मांगते हैं तो उसके लिए कुछ सस्ता सुविधाजनक ठिया मिल सके। चाय व मैगी के ठिया बनाने के लिए बहुत ज्यादा निर्माण की जरूरत नहीं पड़ती है। बहुत सस्ता भी पड़ता है। टीन व लोहे के सहारे एक सप्ताह में ऐसी व्यवस्था बन जाती है। बाद में इस महिला ने बताया कि वह स्वयं एक लोअर शिक्षिका है। छुट्टियों में अपने पति की मदद करती है। सहयोग व परिवार की आर्थिक दशा सुधारने के लिए ऐसा करना एक अच्छे व सहयोगी साथी की पहचान है।

दूसरी सुबह तुंगनाथ ट्रैक के लिए जाना नये अनुभवों संजोने वाला था। चौपटा से तुंगनाथ मंदिर की 3-4 किलोमीटर की चढ़ाई चढ़ने से पहले बर्फ में चलने की सुविधाओं को बंटोरना था। ट्रैक शुरू करने के स्थान पर सुविधाओं से सजा बाजार सामान्य जनसुविधाओं से अनभिज्ञ लगा। हमें पुरुषों को खुले में मूत्रविसर्जित करते देखा। साधारण रूप से पुरुष ऐसा काम खुले स्थान पर कर लेता है। स्त्रियों के लिए यह भारी समस्या है। आसपास के माहौल में उनकी परेशानी को यहां के बाजार वाले समझना नहीं चाहते। देश-विदेश से आने वाले पर्यटक व यात्रियों के लिए सशुल्क व्यवस्था करने की जरूरत उनको नहीं लगी। लॉज की व्यवस्था

तो है, लेकिन सभी के लिए वह सहज नहीं कहे जा सकते हैं।

यह मंदिर केदारनाथ वन्यजीव अभ्यारण्य में आता है। हिमालय की तीर्थयात्राएं शिव की कथाओं के बिना पूरी नहीं होती है। तीर्थयात्रियों के लिए कथाएं कठिनाईयों व दुख को सुख में बदल देने का काम करती है। पर्यटक, प्रकृति की विविधता के आगे नतमस्तक हो जाता है। उसकी थकान को प्रकृति अपने नये रंग बिखेर कर गायब करने का काम करती है। हिमालय, आस्था व प्रकृति के संगम का निर्माण करता है। यहां पर्यटकों व तीर्थयात्रियों का संगम होता है। कहा जाता है कि कैलाश पर शिव की प्रार्थना करने वाले पांडव जब यहां आते हैं तो शिवजी की भुजाएं उनको मिलती है। पंचकेदार के रूप में मान्यता है कि अलग-अलग स्थानों पर शिव पांडवों को चकमा देकर शिव कहीं दूसरी जगह चले जाते हैं। शिव पांडवों के पाप से बचने के लिए ऐसा करते हैं। पांडव यहां पहुंचकर शिव की भुजाओं की पूजा करते हैं। इन कथाओं में काल्पनिकता जितनी हो यात्रियों को बार-बार अपनी ओर बुलाने का काम करती है। यदि यात्राओं में से इन पौराणिक कथाओं को बाहर कर दें तो कितने तीर्थयात्री व पर्यटक यहां पर आयेगें।

वन्यजीव अभ्यारण्य में कचरा फैलाने की सख्त मनाही है लेकिन ट्रैक पर जाते समय बर्फ में बिखरी प्लास्टिक की बोतलें, गुटके के रैपर्स, चॉकलेट के रैपर्स, सिगरेट के टुकड़े आदि साफ दिखाई देता है। बर्फ मानव द्वारा फेंकी गयी गंदगी को कहां छुपाती है। जैसे यह कथा है कि एक नदी से पूछा गया कि तुम इतना कचरा क्यों लेकर

जाती हो। नदी कहती है कि मैं कहां अपने पास रखती हूँ। मैं समन्दर में फेंक देती हूँ। समन्दर से यही सवाल पूछा तो उसने कहा मैं कहां इसको अपने पास रखता हूँ। मैं बादल को दे देता हूँ। बादल से पूछा तो उसने बताया कि मैं कहां अपने पास रखता हूँ। मैं तो बारिश बनाकर वापस धरती पर भेज देता हूँ। आजकल इसी कारण से अम्लीय वर्षा होती है। पर यह बात कचरा फैलाने वाला इंसान कहां समझता है। वह अपनी मर्जी करता है। नदी, समन्दर, बादल सोचते हैं कि जह हम अपनी मर्जी चलाते हैं, तो वह हमें हाथ-पैर जोड़ता है, दूर-दूर तक तीर्थ पर आता है, अरदास करता है, पछतावा जताता है। सारे टोने टन मन करता है। झाड़ू फूंक करने का ढोंग करता है। वह कार्य नहीं करता जो सच में करना होता है।

तुंगनाथ ट्रैक शुरू करते समय लाल फूलों वाले आदमकद व विशाल अल्पाइन वृक्षों को देखकर उनको मैंने नमन किया। बर्फ की पट्टी दिखते ही यह आदमजात व विशालता खत्म होती चली गई। अल्पाइन ने बर्फ के सामने अपने आप को समेटने की सीख दे रहा था। ऊपर मंदिर के कपाट बंद थे लेकिन वहां पहुंच कर अलौकिक आनंद का अनुभव हुआ। यह अनुभव यात्री को भीतर बाहर से एकमेव कर देता है। पर्यटक का तन किसी शहर में हो तब भी मन ऐसे ही किसी स्थल में उलझा रहता है। यहां उतरते समय बर्फबारी ने विद्यार्थियों को अलग जादू से सरोबार कर दिया। अत्यधिक बर्फबारी ने हमें चंद्रशिला पर जाने से रोक दिया। स्थान फिर वापस बुलाते हैं। इस बार तुंगनाथ के लिए। फिर कभी हमें चंद्रशिला बुलायेगा। देखते हैं यह कब होता है।

विद्यार्थियों ने बर्फ में फिसलपट्टी की तो हम शिक्षक उनसे ज्यादा छोटे बच्चों की तरह खेल देखने लगे। तब अचानक एक हिमालय नस्ल का श्वान वहां पहुंचा और हमारे साथी डॉ नरेंद्र के दस्ताने लेकर खेलने लगा। उसको देखकर दूर शांति से बर्फबारी का आनंद ले रहे दो तीन उसकी टोली वाले ओर आ पहुंचे। एक तरफ अनजान जानवर। दूसरी तरफ उनके द्वारा की जा रही मस्ती ने बर्फ में उतरते समय होने वाली थकान को काफूर कर दिया। हमने उन तीन श्वानों के साथ एक फोटो भी लिया। हिमालय में पाये जाने वाला मोनाल भी रास्ते में हमारा हालचाल जानने आया। उतरते समय बर्फ में नीचे से ईरान-ईजरायल-अमेरिका युद्ध का अभिनय भी हमने किया। लेकिन यह ऐसा युद्ध था जिसमें न हथियार थे। न ही किसी की हिंसा थी। जहां बर्फ का साम्राज्य था वहां युद्ध का अभिनय हमारी मानसिकता की उपज थी। युद्ध के बाद शेरों शायरी करते हुए नीचे उतर आये जहां हमारे दिल के अन्य लोग हमारा इंतजार कर रहे थे।

पहाड़, पेड़, प्राणी के रिश्तों पर बर्फ नहीं जमती है। बर्फ जमती है व्यक्ति के कोशिश न करने से। व्यक्ति की कोशिशें तीनों को एकाकार करती है। असफल होने पर सफल बनने की जिद ही इन तीनों के रिश्तों की गांठ को बांधे रखती है। मंदिर में ताता पानी (चाय) मांगने पर होटल पर काम करने वाली लड़की ने बताया कि हम लोग यहां ताता को ताची बोलते हैं। वैसी ही बात स्थानीय निवासी ने उखीमठ के संदर्भ में बतायी। उसने बोला यहां उखी नहीं उचीमठ हम लोग बोलते हैं। दो नये शब्दों को बोलने का अंदाज लेकर हम ओंकारेश्वर मंदिर पहुंचे।

उखीमठ में स्थित शिवजी के इस मंदिर के बारे में मान्यता है कि केदारनाथ से शिव सर्दी में उचीमठ में प्रवास करते हैं। ग्रीष्मकाल में शिवजी वापस केदारनाथ चले जाते हैं। शिव इसलिए मुझे प्रिय देव लगते हैं कि वे समय-समय पर स्वयं यात्रा पर निकलने वाले देवता हैं। एक जगह परेशान होने पर अपने भक्तों हाल जानने के लिए पार्वती को साथ लेकर यात्रा पर निकल पड़ते हैं। इस संदर्भ से देवों में शिव लौकिक देवता हैं। अपने ऊपर लगी जंग को हटाने के लिए स्वयं यात्रा पर निकल पड़ते हैं।

हमारी वापसी यात्रा में कार्तिक स्वामी मंदिर भी जाना था। यह मंदिर रुद्रप्रयाग से 38 किलोमीटर दूर 3048 मीटर ऊंचाई पर कनक चौरीगांव में स्थित है। यहां भी 3.5 किलोमीटर का ट्रैक है। इस मंदिर के बारे में मान्यता है कि भगवान शिव ने अपने दोनों पुत्रों कार्तिकेय व गणेश में सर्वश्रेष्ठ व बड़ा कौन होगा उसके लिए एक प्रतियोगिता का आयोजन किया। कहा आप दोनों में से जो पहले ब्रह्माण्ड का चक्कर लगाकर आयेगा वह जगत् में बड़ा व महान माना जायेगा। गणेश ने अपने माता-पिता के चक्कर लगाकर यह प्रतियोगिता जीत ली। उन्होंने कहा कि मेरे लिए तो मेरे माता-पिता ही मेरा ब्रह्माण्ड है। इससे कार्तिकेय क्रोधित हो गए। तब उन्होंने अपने शरीर की हड्डियां अपने पिता को और मांस अपनी माता को दे दिया। ये हड्डियां अभी भी मंदिर में मौजूद हैं, जिन्हें हजारों भक्त पूजते हैं। स्थानीय निवासियों ने बताया कि जब कभी बारिश नहीं होती है, तब हम उनकी पूजा करते हैं। दूसरी तरफ स्त्रियां कलशयात्रा भी करती हैं। यह कथा बताती है कि माता-पिता को बालसुलभ

मनोविज्ञान व स्वभाव को समझना कितना जरूरी है। पक्षपातपूर्ण रवैया अपने संतानों में ईर्ष्या का कारण बनता है।

रास्ते में वनदेवियों के मिथ ने आस-पास के जंगल की रक्षा करना का बहुत ही उचित लगा। ऊंची चोटी पर स्थित होने के कारण यहां हवा बहुत तेज चलती है। हवा के प्रवाह के कारण पेड़ों से अलग-अलग तरह की आवाजें आती हैं। तेज हवा के प्रवाह ने वनदेवियों के मिथ को चलाया-बनाया है। इसलिए कोई स्थानीय लोग यहां से लकड़ी नहीं काटते हैं। पर्यावरण संरक्षण का यह तरीका बहुत जरूरी है। पूंजीवादी मानसिकता हमें ऐसे मिथकों को दरकिनार कर अपना मुनाफा निकालने की बात बताने की तरकीब सोचती है। जैसे सारे उत्तर भारत को स्वच्छ जल प्रदान करने वाले पहाड़ों में ठंडा मतलब कोकाकोला या नीचे से पानी की बोतलें भेजी जा रही हैं। ऊपर का पानी नीचे जा रहा है। नीचे का पानी बोतल में पैक होकर ऊपर आ रहा है। इस मंदिर की ऊंचाई से हिमालय की बर्फ से ढंकी चोटियां दिखाई देती हैं। चारों तरफ हरियाली, विशाल वनराशि और दूर हिमालय की बर्फीली चोटियां यहां पहुंचने वाले यात्रियों को अपने जादू में बांध लेती हैं।

ऊपर पहाड़ चढ़ाई चढ़ते समय परेशान होने वाले हमारे साथियों ने बीच में ही हिम्मत हारने की कोशिश की लेकिन दो-दो कदम चढ़ते जाने का नुस्खा अपनाये डॉ सीमा कुमारी ने हिम्मत नहीं हारी। उनकी इस सीख ने लाभ दिया हिमालय दर्शन। यही दो कदम चढ़ते-चढ़ते उन्होंने प्रकृति के चमत्कार का दर्शन से पूर दिया। जो साथी नीचे

रह गये थे उनको याद करते हुए हम नीचे उतर आये। हमने उनको बताया कि मंदिर में न जाने पर क्या गवां दिया हम बता नहीं सकते। इस तरह हम चार दिन की इस यात्रा (देवप्रयाग, तुंगनाथ, ओंकारेश्वर, कार्तिक स्वामी मंदिर आदि) की यादों को समेटते हुए दिल्ली लौट आये। 11 शोधछात्रों की टीम के साथ हमारे समूह का मन बारंबार हमें वहीं ले जाता है। जीवन में अच्छी यात्राएं आपको चैन से बैठने नहीं देती हैं। वे पुन आपको अपने दायरों से बाहर ले जाने का निमंत्रण देती रहती हैं। शरीर द्वारा की गई यात्राएं मन पर बहुत गहरा प्रभाव डालती हैं। जहां तन और मन का द्वन्द्व खत्म हो जायें ऐसी यात्रा जीवन को जीने लायक बनाए रखती हैं।

इस पूरी यात्रा में दो वर्षीय बच्चा जो अपने माता-पिता, मामा व दादी के साथ यात्रा कर रहा था वह सबके लिए आकर्षण का केंद्र बना रहा। दिल्ली के बाद नमस्ते मेरठ होटल में रात्रि भोज के लिए रुके तो वह बच्चा (त्वमेव) सिर्फ इतना ही बोलता रहा कि दाल चावल खायेंगे। आगे जहां कहीं भी हम रुकते वह सिर्फ यही दाल चावल खायेंगे दोहराता रहता। आखिरकार मैंने उसका नाम ही दाल चावल रख दिया। ट्रैकिंग में जब वह परिवार पीछे छुट जाता तो हम लोग सिर्फ यह पूछते कि दाल चावल कहां है। इस दाल चावल वाले बच्चे ने बोरियत से बचाये रखा। यह दाल चावल हमारी यात्रा का सबसे छोटा सदस्य था। इसने निरोगी रहते हुए यात्रा को पूरा सफल बनाया।

-डॉ. छोटू राम मीणा

एक आत्मसाक्षात्कार

We only see what we look at- To look is an act of choice.

—जॉन बर्जर

वह बिल्कुल निजी बातचीत थी जिसने एक दुर्लभ आत्मसाक्षात्कार को संभव किया।

सिनेमा और साहित्य के संजीदा आलोचक जवरीमल्ल पारख से फोन पर बात हो रही थी। उस दिन दिल्ली विश्वविद्यालय शिक्षक संघ के चुनाव थे और मतदान खत्म होने के बाद समाज-विज्ञान संकाय के भवन से निकलकर सैकड़ों लोगों की भीड़ में मैं बाहर चाय के अड्डे की ओर बढ़ रहा था। पारख जी ने शुरुआती हालचाल के बाद जानना चाहा कि पिछले दो-तीन दशकों में उभरे आलोचकों पर बात हो तो मैं किनके नाम सुझाना चाहूँगा, अपने अलावा। मैंने कहा कि मैं तो भला क्या हूँ, पर आठ-दस ऐसे नाम निकल आएँगे जिनके पास लेखन के गुण और परिमाण, दोनों दृष्टियों से किसी भी सूची में उपस्थित रहने की पात्रता है। ठहर-ठहरकर मैंने कुछ नाम सुझाए (यहाँ बताना जरूरी नहीं), उनके बारे में हम अपनी-अपनी राय का आदान-प्रदान भी करते गए। जब मेरी सूची लगभग खत्म हो गई, तब पारख जी ने हँसते हुए कहा, 'तो बंधु, जैसी कि ज्यादातर प्रगतिशीलों-जनवादियों से उम्मीद की जाती है, आपकी सूची में भी किसी दलित और स्त्री की जगह नहीं है जबकि इस बीच कई दलित और स्त्री आलोचकों ने अच्छा-खासा लिखा है।' यह एक तेज झटका था। सचमुच, मेरी सूची में वे सिर

से गायब थे। पारख जी के ऐसा कहते ही मुझे दलित और स्त्री आलोचकों के नाम याद आने लगे, उनके बारे में हमने चर्चा भी की। ये सभी ऐसे नाम थे जो मेरे सुझाए नामों से किसी भी रूप में कमतर नहीं थे।... पर इस नाम-स्मरण के बाद भी झटके का असर कम न हुआ।

फोन रखने के बाद मैंने झटके के असर से निकलने के लिए मन-ही-मन कई तर्क-वितर्क किए। मसलन, एक-इतनी भीड़ में खड़े होकर बातें करते हुए, जहाँ हर तरफ चुनावी उत्सव में इकट्ठा हुए मित्रों का गुलगपाड़ा चल रहा हो, दिमाग ठीक तरीके से काम कैसे कर सकता है? मैं तो बजरंग तक का नाम सुझाना भूल गया जो हम दोनों के 'कॉमन' मित्र हैं, फिर दलित और स्त्री आलोचकों का जिक्र न आना कौन-सी बड़ी बात है! दो-दलित लेखन और स्त्री लेखन की अलग श्रेणियाँ बनने का यह दुष्परिणाम है कि आलोचना मात्र की बात आने पर उनका ध्यान ही नहीं आता; जब दलित और स्त्री आलोचना की बात आएगी, तभी ध्यान आएगा। यह उन अलग-अलग खातों के बनने का नतीजा है जिन्हें मैंने नहीं बनाया, जो मुझे बने-बनाए मिले हैं और जिनके बनने में शायद स्वयं दलितों और स्त्रियों की दिलचस्पी रही है।

ऐसी और भी दलीलें दिमाग में आती रहीं जिनका लब्बोलुआब यह था कि गलती हुई तो है,

पर दोषी मैं नहीं हूँ; मुझ पर जाति तथा जेंडर संबंधी किसी भी तरह के भेदभाव का दोषारोपण नहीं किया जा सकता।

लेकिन आश्चर्यजनक रूप से ये दलीलें फेनबुदबुद के समान क्षणजीवी साबित हुईं। मन में एक-के-बाद-एक इनकी काट आती गई। दूसरा वाला तर्क तो इस मासूम प्रश्न के आगे ढेर हुआ कि दलित और स्त्री लेखन की बात जरूर होती रही है, पर दलित आलोचना और स्त्री आलोचना जैसी स्वीकृत श्रेणियाँ कहाँ हैं? इन श्रेणियों को लेकर लिखी गयी किताबें या लेख तो मेरे ध्यान में नहीं हैं! हाँ, अगर इसी तरह आलोचकों की फेहरिस्त में उन्हें शामिल करना भूलते रहे तो निश्चित रूप से ये श्रेणियाँ वजूद में आएँगी, क्योंकि ऐसी श्रेणियों के न बनने का मतलब होगा, दलित और स्त्री आलोचकों का इतिहास-बदर होना। गरज कि मैं जिन्हें कारण और परिणाम ठहरा रहा हूँ, असल में उनकी भूमिका बिल्कुल उलट है। वे क्रमशः परिणाम और कारण हैं।... और अगर दलित और स्त्री विमर्श को ही दलित और स्त्री आलोचना मानकर इन श्रेणियों के पहले से मौजूद होने की बात की जाए, तब तो मामला और गंभीर है। ये विमर्श क्रमशः दलित और स्त्री के हाशियाकरण के विरोध में खड़े हुए, और आप इन्हें ही दलित और स्त्री आलोचना को हाशिये पर रखने का एक और बहाना बनाये ले रहे हैं! यानी दाखिले के चयनवाद की शिकायत होने पर आपने शिकायतकर्ताओं के जमावड़े के चारों ओर गोल घेरे बनाकर कहा कि देखो, यह जगह एकदम

तुम्हारी है; अब तुम्हें कविता, कहानी, आलोचना, जो-जो करना हो, यहाँ करते रहो। इस तरह कहने को जगह मुहैया भी करा दी और अपनी जगह की अखंडता-अविकलता भी सुनिश्चित कर ली। मुझे सविता सिंह की एक बात याद आई जो उन्होंने जाकिर हुसैन कॉलेज की एक संगोष्ठी में कही थी। बताया कि लेखन के शुरुआती दौर में ही उन्होंने अपना एक लेख नामवर जी को पढ़ने दिया। अगले दिन तारीफ तो मिली, पर इस टिप्पणी के साथ कि मुख्य मार्ग छोड़कर पगडंडी क्यों पकड़ रही हो? इस रूपक में मौजूद पदानुक्रम पर अलग से कुछ कहने की जरूरत नहीं।

इसके बाद बारी आई पहले तर्क की। भीड़ के शोर-शराबे में किसी गंभीर मुद्दे पर दिमाग ठीक से सोच न पाए और हम कुछ नाम भूल जाएँ, यह तो समझ में आता है, पर भूलने के एक खास पैटर्न का बचाव कैसे करेंगे? दलितों और स्त्रियों को भूलने में ही नहीं, उनके साथ अपने मित्र बजरंग को भूलने में भी एक पैटर्न है, क्योंकि बजरंग का काम मुख्यतः दलित साहित्य पर केंद्रित है। भूलने में कोई पैटर्न न हो तो गफलत और बेध्यानी को उसका कारण ठहराया जा सकता है, लेकिन पैटर्न होने पर तो किसी भी समझदार के लिए बात बेध्यानी पर ही खत्म नहीं होगी, बेध्यानी का फायदा उठाकर सक्रिय हो जानेवाले मन के उन हिस्सों तक जाएगी जिन्हें अचेतन और अवचेतन कहा गया है। तो क्या सचेत रूप से दलित और स्त्री के हाशियाकरण का विरोध करते हुए भी सोच की किन्हीं दबी हुई परतों में मुझे इस हाशियाकरण से

कोई दिक्कत नहीं है? यह कहना तो शायद ठीक न होगा कि मैं ऐसा हाशियाकरण 'चाहता' हूँ, क्योंकि 'चाहना' एक सचेत क्रिया है और चैतन्य रूप से यह हाशियाकरण मैं 'नहीं चाहता' हूँ; लेकिन इस 'न चाहने' की जड़ें क्या इतनी गहराई तक जा पाई हैं कि चली आती सत्ता-संरचना को 'नॉर्मल' मानने का प्रदत्त संस्कार छिन्न-भिन्न हो जाए? अगर यह 'न चाहना' मन की बौद्धिक-तार्किक उपरली परत तक, इस फ्रायडीय 'टिप ऑफ द आइसबर्ग' तक ही सीमित है तो क्या इस आशंका से इनकार किया जा सकता है कि मन का जो हिस्सा इस 'न चाहने' से अछूता होगा, वह कई बार बहुत निर्णायक भी हो जाता होगा? क्या वह तर्क और बौद्धिकता के छद्मवेश में आकर कई बार उपरली परत की कार्यसूची भी तय करने लगता होगा? क्या यह सोचकर मुझे डरना नहीं चाहिए कि मेरे ही अंदर ताकत के वे रिश्ते, जिनका मैं लाभार्थी रहा हूँ, एक आभ्यंतरीकृत परम्परा के रूप में मौजूद हैं और उनका बहुरूपियापन ऐसा है कि उन्हें पहचानकर खत्म करना भी मुश्किल है?

अल्थूसे को पढ़ते हुए मैंने समझा जितना भी कम हो, उनकी यह अंतर्दृष्टि मुझे बार-बार उनके पाठों की ओर ले जाती है कि 'विचारधारा गहरे अर्थों में अचेतन है'। विचारधारा/आइडियोलॉजी का आशय यहाँ राजनीतिक-सामाजिक कार्यवाहियों के प्रेरक किसी 'वाद' से नहीं है। वह शक्ति-तंत्र और व्यक्ति के बीच मध्यस्थ के रूप में काम करते उन रवैयों-मान्यताओं का संघटन है जो दमन के चले आते रूपों को धुँधला/ओझल करते हुए व्यक्ति

को शक्ति-संरचना में व्यवस्थित करते हैं और वर्चस्व की व्यवस्था का पुनरुत्पादन सुनिश्चित करते हैं। अल्थूसे ने इसे 'जीवन की वास्तविक परिस्थितियों के साथ व्यक्ति के काल्पनिक संबंधों के निरूपण (representation)' के रूप में परिभाषित किया था और जोर देकर कहा था कि 'विचारधारा निश्चित रूप से निरूपणों की एक व्यवस्था है, लेकिन ज्यादातर मामलों में इन निरूपणों का "चेतना" से बहुत कम लेना-देना होता है: वे आम तौर पर छवियाँ हैं और यदा-कदा अवधारणाएँ, लेकिन वह चीज जिसे वे अधिसंख्य लोगों पर आरोपित करते हैं, सर्वोपरि संरचनाओं के रूप में है, और यह आरोपण उनकी "चेतना" के बरास्ते नहीं होता।... लोग अपनी विचारधाराओं को "जीते" हैं... चेतना के एक रूप के तौर पर नहीं, बल्कि अपनी "दुनिया" की एक वस्तु के तौर पर-खुद अपनी "दुनिया" के तौर पर।'

लेकिन अल्थूसे के लिए विचारधारा के अचेतन होने का अर्थ यह नहीं है कि उसे 'जीते' हुए भी हम उसे जानते नहीं हैं, जैसा कि मैंने अपने प्रसंग में गौर किया। यह अर्थ उन लोगों के मद्देनजर तो हास्यास्पद ही कहा जाएगा जिनके 'गुप्त' और 'प्रकट' के बीच उस तरह का अंतराल नहीं होता जैसा मेरे मामले में है, यानी जो लोग परम्परा से मिली हुई गैरबराबरी की व्यवस्था का खुले तौर पर समर्थन करते हैं और मुखर रूप से जातिवादी तथा स्त्रीद्वेषी हैं। असल में, यहाँ अचेतन होने का अर्थ है - 1. विचारधारा के आभ्यंतरीकरण की प्रक्रिया का चेतन न होना; और 2. अपनी

विचारधारा को विचारधारा के तौर पर पहचानने से इंकार करना, उसे स्वाभाविक बात मानना। अल्थूसे कहते हैं, 'जो लोग विचारधारा [की गिरफ्त] में हैं, वे अपने को विचारधारा से बाहर मानते हैं: विचारधारा के प्रभावों में से एक है, विचारधारा द्वारा विचारधारा के विचारधारात्मक रूप का निषेध। विचारधारा कभी नहीं कहती: "मैं विचारधारात्मक हूँ"। यह कहने के लिए, कि "मैं विचारधारा [की गिरफ्त] में हूँ" (बिल्कुल अपवाद जैसा मामला) या "मैं विचारधारा [की गिरफ्त] में था", विचारधारा के बाहर यानी वैज्ञानिक ज्ञान [के दायरे] में होना जरूरी है।'

शायद इस बात से मैं अपने लिए थोड़ी राहत हासिल कर सकता हूँ कि मुझे पता है कि मैं विचारधारा की गिरफ्त में हूँ। 'हूँ' अल्थूसे के लिए थोड़ा अपवाद सरीखा मामला है (क्योंकि 'जो विचारधारा [की गिरफ्त] में हैं, वे अपने को विचारधारा से बाहर मानते हैं'), पर आप सचेत रूप से क्या सोचते हैं और अचेत रूप से क्या कर बैठते हैं, इसके फर्क की पहचान कर पानेवाला आत्मसाक्षात्कार शायद इसे अपवाद नहीं रहने देता।

मैं वह भी हूँ जो हर तरह की गैर-बराबरी को, वर्चस्व की प्रदत्त व्यवस्था को गलत मानता है और मिटाने की सिफारिश करता है, और मैं वह भी हूँ जो अपने अन्दर की किन्हीं परतों में इस व्यवस्था को लेकर सहज है, जो थोड़ी लापरवाही की हालत में-वह भीड़ और शोर-शराबे के बीच पैदा होनेवाली असावधानी के कारण हो या नशे, उनींदेपन, तनाव आदि के कारण-वर्चस्व की इस व्यवस्था के काम आ सकता है, जो दूसरों द्वारा टोके जाने और अपने अन्दर झाँकने के लिए विवश होने से पहले व्यवस्था-अनुकूलित व्यवहार भी कर सकता है।

ऐसा कहते हुए मुझे हिंदी की विचार-परंपरा से अनगिनत उदाहरण याद आ रहे हैं, पर आत्मसाक्षात्कार को आत्मसाक्षात्कार ही रहने देना चाहिए। यह किसी और को भी अपनी चमड़ी खुरचने की प्रेरणा दे सके, इतना ही काफी होगा।

-संजीव कुमार

sanjusanjeev67@gmail.com

बस एक पेड़?

जब हम इस पूरे ब्रह्मांड में सबसे कीमती या सबसे महत्वपूर्ण चीज के बारे में बात करते हैं तो हम आम तौर पर सबसे मूल्यवान या सबसे अधिक लाभकारी चीजों के लिए जाते हैं जो हमें लाभ देती हैं या कुछ ऐसा जो मूल्य उत्पन्न करती है।

लेकिन क्या वे वास्तव में इस ब्रह्मांड में सबसे महत्वपूर्ण या सबसे कीमती चीज हैं, क्या वे गंभीरता से हमें लाभ दे रहे हैं और यह बिना किसी लागत के या बहुत कम लागत पर? मेरा जवाब होगा “नहीं” हम कैसे कह सकते हैं कि कोई इमारत या किसी वस्तु का टुकड़ा महत्वपूर्ण है क्योंकि यह हमें किसी प्रकार का आनंद दे रहा है और वह आनंद कुछ घंटों या कुछ वर्षों तक रहता है। लेकिन कुछ ऐसा है जो इस ब्रह्मांड में सबसे दुर्लभ और सबसे महत्वपूर्ण और सबसे लाभकारी चीज है जो एक “पेड़” है हाँ “सिर्फ एक पेड़” है।

मुझे पता है कि कई लोग सोचेंगे कि हां यह हमें कुछ उद्योगों के लिए ऑक्सीजन या कच्चा माल देता है या कुछ जानवरों के लिए जीवन देता है, जब कई पेड़ एक साथ जंगल बनाते हैं, लेकिन क्या यह वास्तव में एक पेड़ हमें देता है? क्या हम इससे इतना ही प्राप्त कर रहे हैं, बस कुछ ‘ऑक्सीजन’ या ‘कच्चा माल’। आइए इस बात के बारे में एक बड़े दृष्टिकोण से फिर से सोचें।

हम “हीरे” या अन्य रत्नों को पेड़ों से अधिक मूल्य देते हैं, क्यों? सिर्फ इसलिए कि आप एक

पेड़ पहनकर हजारों लोगों के सामने प्रदर्शन नहीं कर सकते हैं या इससे आपकी सामाजिक स्थिति या समाज में आपकी आर्थिक छवि नहीं बढ़ती है? लेकिन क्या वे वस्तुएँ हमें वही दे रही हैं जो पेड़ हमें दे रहे हैं? कम लागत के साथ उल्लेख नहीं करना चाहिए और कुछ स्वाभाविक रूप से बढ़ते हैं, वे हमें इतना दे रहे हैं, फिर भी हम उन्हें कुछ नहीं देते हैं, थोड़ा सा विचार भी नहीं करते हैं, क्या हम सिर्फ स्वार्थी हैं या हमें परवाह नहीं है क्योंकि हमारे अनुसार बहुत सारे पेड़ हैं? ज्यादातर समय हम रुकते भी नहीं हैं और चारों ओर देखते हैं और देखते हैं कि ये पेड़ हमारे जीवन और हमारे पर्यावरण में कितनी सुंदरता जोड़ रहे हैं, वे सभी जीवित जीवों को कितना दे रहे हैं।

मैं बहुत सी चीजें बता सकता हूँ जो पेड़ हमें देते हैं, लेकिन क्या मैं 10 चीजें भी बता सकता हूँ जो हम उन्हें देते हैं? मैं फिर भी “नहीं” कहूँगा।

पेड़ इतने दुर्लभ और खास होते हैं कि शायद हम यह भी नहीं जानते कि उनकी सराहना कैसे करें या इस तथ्य को कैसे स्वीकार करें कि वे निस्वार्थ रूप से हमें बहुत कुछ दे रहे हैं और इससे कुछ भी प्राप्त नहीं कर रहे हैं, शायद वे थोड़ी संतुष्टि प्राप्त करते हैं क्योंकि वे हमें अपने जीवन का आनंद लेते हुए देखते हैं।

तकनीकी प्रगति के साथ हम कुछ हद तक भूल रहे हैं कि पेड़ जैसी साधारण चीजें कितनी कीमती हैं कि वे हमारे साथ और हमारे बिना कैसे

रही हैं, जबकि इस ग्रह पृथ्वी पर कोई इंसान नहीं था। पेड़ सभी जीवित प्राणियों, विशेष रूप से मनुष्यों के लिए वास्तव में सहायता का एक बड़ा स्रोत थे क्योंकि हमारी अधिकांश जरूरतें उनसे प्राप्त संसाधनों से पूरी होती थीं। चाहे वह भोजन का स्रोत हो, आश्रय हो, आराम का स्थान हो, शिकार को छिपाने और शिकार करने की जगह हो, या मनोरंजन का स्रोत हो या मनोरंजन का स्रोत हो, हजारों साल पहले से हमें इससे बहुत कुछ मिल रहा है, लेकिन जब इसके लिए कुछ करने की बात आती है तो हम संकोच करते हैं और बहाना बनाते हैं कि मैं अपने जीवन और काम में व्यस्त हूँ, मुझे और भी महत्वपूर्ण काम करने हैं। गंभीरता से? किसी ऐसी चीज की सराहना करने और उसकी परवाह करने से ज्यादा महत्वपूर्ण और क्या हो सकता है जो हर चीज का स्रोत है और आपके लिए, आपके पूर्वजों के लिए और आपकी आने वाली पीढ़ियों के लिए हर चीज का स्रोत रहा है। ऑक्सीजन एकमात्र ऐसी चीज है जिसे हम पेड़ों से उपहार के रूप में गिनते हैं, लेकिन क्या यही एकमात्र चीज है जो हमें उनसे मिलती है?

खैर, मैं इस बारे में बात कर रहा हूँ कि कैसे एक पेड़ इतना अधिकार देता है कि देखते हैं कि वे वास्तव में हमें क्या देते हैं—पहले हम देखेंगे कि हमें एक पेड़ से उनके पूरे जीवनकाल से क्या मिलता है और फिर हम देखेंगे कि वे अपनी मृत्यु के बाद भी क्या योगदान देते हैं।

1. पेड़ हमारे ग्रह के स्वास्थ्य के लिए आवश्यक हैं जो पर्यावरण, जैव विविधता

और मनुष्यों में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

❖ वायु गुणवत्ता में सुधार

- ऑक्सीजन उत्पादन—एक परिपक्व पेड़ “प्रत्येक वर्ष” लगभग 2 मनुष्यों के लिए पर्याप्त ऑक्सीजन का उत्पादन करता है। उदाहरण के लिए, एक एकड़ परिपक्व वन सालाना 18 लोगों के लिए पर्याप्त ऑक्सीजन उत्पन्न कर सकता है।
- प्रदूषक निस्पंदन—पेड़ सल्फर डाइऑक्साइड, अमोनिया और नाइट्रोजन ऑक्साइड सहित हवा से हानिकारक प्रदूषकों को छानते हैं। वे अपनी पत्तियों और छाल में धूल और कणों को भी फंसाते हैं जिससे शहरी वायु गुणवत्ता में सुधार होता है।
- कार्बन डाइऑक्साइड अवशोषण—पेड़ प्रति वर्ष लगभग 22 किलोग्राम (48 पाउंड) CO_2 को अवशोषित करते हैं। सामूहिक रूप से एक वन सालाना एक मिलियन किलोग्राम (2.4 मिलियन पाउंड) से अधिक CO_2 को अलग कर सकता है, जिससे जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को काफी कम किया जा सकता है।

❖ जैव विविधता सहायता

- पर्यावास प्रावधान: पेड़ वन्यजीवों की एक विशाल श्रृंखला प्रदान करते हैं। उदाहरण के लिए, ओक के पेड़ कीटों की 280 प्रजातियों का समर्थन कर सकते हैं, जो बदले में

जानवरों और पक्षियों के लिए खाद्य स्रोत के रूप में कार्य करते हैं।

- खाद्य स्रोत: पेड़ फल, मेवे, पत्ते और फूल पैदा करते हैं।
- पेड़ फल, मेवे, पत्ते और फूल पैदा करते हैं जो स्तनधारियों, पक्षियों और कीड़ों सहित कई प्रजातियों के लिए भोजन के रूप में काम करते हैं। यह विविधता पारिस्थितिकी तंत्र में जटिल खाद्य जाल का समर्थन करती है। पारिस्थितिकी तंत्र स्थिरता-विभिन्न वृक्ष प्रजातियों की उपस्थिति विभिन्न प्रकार के जीवों का समर्थन करके पारिस्थितिकी तंत्र के लचीलेपन को बढ़ाती है जो पोषक चक्रण और मिट्टी के स्वास्थ्य में योगदान करते हैं।

❖ जलवायु विनियमन

- तापमान मॉडरेशन: पेड़ छांव प्रदान करते हैं और वाष्पोत्सर्जन के माध्यम से हवा को ठंडा करते हैं। शहरी क्षेत्रों में, यह शहरी गर्मी द्वीप प्रभाव को कम करते हुए तापमान को 9 डिग्री सेल्सियस (16 डिग्री फारेनहाइट) तक कम कर सकता है।
- जलवायु अनुकूलन: पेड़ वर्षा को अवशोषित करके और बाढ़ के जोखिम को कम करके चरम मौसम की घटनाओं को रोकने में मदद करते हैं। वे स्थानीय जलवायु स्थिति को बनाए रखने में भूमिका निभाते हैं जो विविध पारिस्थितिकी प्रणालियों का समर्थन करते हैं।

2. मृत्यु के बाद दूसरा अनुबंध

- पोषक तत्व साइक्लिंग: मृत पेड़ पोषक तत्व साइक्लिंग के लिए महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे विघटित होते हैं और मिट्टी में पोषक तत्व वापस करते हैं। वे अपनी क्षय प्रक्रिया के दौरान विभिन्न प्रजातियों के लिए आवास भी प्रदान करते हैं।
- पर्यावास सृजन: गिरे हुए लट्टू कीटों और छोटे स्तनधारियों के लिए आवास बनाते हैं जबकि कवक का भी समर्थन करते हैं जो मिट्टी के स्वास्थ्य और पुनर्जनन प्रक्रियाओं में योगदान देते हैं।
- कार्बन भंडारण: पेड़ों के मरने के बाद भी, वे अपने बायोमास में कार्बन को वर्षों तक संग्रहीत करते रहते हैं क्योंकि वे धीरे-धीरे विघटित होते हैं, जिससे पारिस्थितिकी तंत्र में दीर्घकालिक कार्बन भंडारण में योगदान होता है।

जबकि पेड़ और भी अधिक काम करते हैं और दूसरों के जीवन में योगदान देते हैं, हम उनके लिए क्या कर सकते हैं? क्या वे वास्तव में कुछ महान मांग रहे हैं जो हम नहीं दे सकते? फिर से नहीं, वे कुछ नहीं मांग रहे हैं, बस थोड़ी सी देखभाल और उनके प्रति थोड़ा सा स्नेह। अब सवाल यह है कि हम अपना स्नेह कैसे दिखाते हैं, हम उन्हें पानी देकर दिखा सकते हैं, कभी-कभी हम उन्हें कुछ मूर्खतापूर्ण कारणों से नहीं काटते हैं, या

हम अधिक पौधे लगा सकते हैं और उनकी संख्या बढ़ा सकते हैं ताकि हम अपने दोस्तों की संगति का आनंद कैसे लें, वे भी अपने दोस्तों की संगति का आनंद लें।

हमें पेड़ों के रूप में एक महान उपहार दिया गया है अब उनकी रक्षा करना और अधिक पौधे लगाना हमारी भूमिका है ताकि भविष्य में वे हमारी अधिक मदद कर सकें और पृथ्वी ग्रह वास्तव में दिखाता है कि इसे “द ग्रीन प्लैनेट” क्यों कहा जाता है।

जहाँ तक मुझे पता है कि पेड़ों के साथ कोई अन्य ग्रह नहीं पाए जाते हैं, इसलिए हम भाग्यशाली हैं कि हमारे पास कुछ ऐसा है

जो किसी और के पास नहीं है पेड़ पृथ्वीवासियों के लिए विशिष्टता का संकेत हैं हम अब तक एकमात्र सभ्यता हैं जो एक पेड़ के लाभ और सुंदरता का आनंद लेती हैं इसलिए आइए उन्हें संरक्षित करके और नए पेड़ लगाकर इसका अधिक आनंद लें ताकि वे अन्य बड़े पेड़ों की तरह बड़े हों और मनुष्यों का एक बहुत ही सकारात्मक और सुंदर पक्ष देख सकें।

-आयुषमान राय
बी ए (प्रोग्राम)
देशबंधु कॉलेज

¹ References:- www.mpcb.gov.in, www.seedformation.co.uk, www.cabronbrief.org, www.savatree.com, www.thewildlifefews.com

राजमहल का सच

राजा किशनराज एक बहुत बड़े साम्राज्य के राजा थे उनके उन्होंने अपना राज्य बड़ी कुशलता पूर्वक चलाया. लेकिन शायद होनी को कुछ ओर ही स्वीकार था

राजा किशनराज का निधन आकस्मिक हो गया। तो उनके एकलौते पुत्र सभ्यराज को उनकी गद्दी दी गई। नौजवान राजा आखिर था तो किशन राज का ही पुत्र, वो भी अपने पिता की तरह बहुत ही प्रतिभाशाली था।

उसने कुछ ही समय में राज्य की सारी बागडोर अच्छे से संभाल ली। राजा की माँ यानि किशनराज की पत्नी पहले ही स्वर्ग सिधार चुकी थी। राजा अपने पिता की एकलौती संतान था और अब उनके माता और पिता दोनों ही नहीं थे।

समय-समय पर राजा का राज्य के सबसे पुराने ओर वफादार मंत्री काशीराम मार्गदर्शन किया करते थे और राजा अपने राज्य के सबसे पुराने मंत्री काशीराम को ही सब कुछ मानता था।

एक दिन काशीराम ने राजा को अब विवाह करने की सलाह दी। राजा को उन्होंने पास के राज्य की राजकुमारी प्रेरणा के बारे में बताया। कहां की प्रेरणा बहुत ही गुणवती और संस्कारी है साथ ही समझदार भी आपके साथ इस राज्य को चलाने में भी आपको बहुत सहयोग करेंगी।

राजा ने पहले कुछ समय तक मना किया

लेकिन लड़की और उनके परिवार के बारे में सुनकर राजा ने उनकी बात मान ली।

राजकुमारी और उनके परिवार वाले पहले ही राजा से बहुत प्रभावित थे इसलिये वो विवाह के लिये तैयार थे आखिरी ऐसे राजा से शादी कौन नहीं करना चाहेगा।

बड़ी धूम-धाम के साथ राजा की शादी हो गई। शादी के बाद प्रेरणा इस राज्य में आ गई। राजा प्रेरणा की सुंदरता के साथ उनकी समझदारी का भी बहुत बड़ा प्रसंशक बन गया। ऐसी कई बातें थी जो राजा बल से नहीं हल कर सकता उसे प्रेरणा अपनी सूझबूझ से सुलझा देती थी।

राजा और रानी दोनों ही एक दूसरे को पा कर बहुत ही खुश थे। उन दोनों में प्रेम प्रगाढ़ था। ठीक एक साल बाद रानी प्रेरणा गर्भवती हो गई। राजा और रानी दोनों अपनी पहली संतान के लिये बहुत खुश थे।

भगवान का बहुत धन्यवाद दे रहें थे राजा ने योजना बनाई थी की उनकी संतान होने पर वो पुरे राज्य को निमंत्रण देंगे। आखिरकार वो दिन आ ही गया और रानी ने एक पुत्र को जन्म दिया। राजा और रानी की प्रसन्नता का कोई ठिकाना नहीं रहा।

लेकिन यह खुशी ज्यादा देर तक नहीं टिक पायी, नवजात पुत्र कुछ ही घंटों में मर गया। राजा और रानी के साथ मंत्रीगण और सेवक सभी बहुत दुखी हो गये काशीराम ने राजा को हौसला दिया

और कहां कीं भगवान कीं मर्जी के आगे किसकी चली, आप खुद को संभाले और रानी को भी हौसला दे।

राजा ने रानी को हौसला दिया साथ ही खुद को भी वो समय भी निकल गया, राजा और रानी उस दुख से उभरने लगे। उन्होंने इस सत्य को स्वीकार किया और अपने आने वाले जीवन के लिये फिर से योजनाएं बनाने लगे।

कुछ समय बाद फिर रानी गर्भवती हो गई इस बार राजा और रानी कुछ ज्यादा सतर्क थे समय समय पर दाई और वैध से परामर्श लिया गया ताकि पिछली बार जैसा फिर कुछ ना हो। समय आने पर फिर रानी ने फिर एक पुत्र को जन्म दिया। लेकिन इस बार भी वो पुत्र कुछ घंटों का ही मेहमान था। राजा-रानी को लगा कीं ऊपर वाला उनके साथ ऐसा क्यों कर रहा है अब यह बात सोचने योग्य हो गई थी राजा ने अब दूसरे तरह के उपाय करना शुरू कर दिये।

सब कुछ होते हुए भी राजा के राजमहल में एक अगल खालीपन था। विरोधी राजा और शत्रुओं ने राजा की इस अवस्था का लाभ उठा कर, राज्य पर हमले करना शुरू कर दिये। अपने निजी जीवन में इस परेशानी का प्रभाव कई बातों पर पड़ा, राजा अपना कुछ राज्य हार गया।

राज्य की जनता का भी राजा पर से विश्वास कम होता जा रहा था। बातें थी कीं जो अपनी संतान नहीं बचा पा रहा है, लगता नहीं वो राज्य को बचा पायेगा।

इन सारी समस्याओं के बीच रानी प्रेरणा अपने प्रयासों में लगी हुई थी वो राज्य में ऐसे ही जा-जा कर राज्य के वासियों से मिलने लगी। रानी क्या कर रही है यह किसी को पता नहीं था।

फिर करीब 6 महीने बाद वो राजा को बोली कीं अब हमारी संतान कीं मृत्यु नहीं होंगी लेकिन उसके लिये आपको मेरी बात माननी पड़ेगी राजा पहले ही जानता था कीं रानी बुद्धिमान है और कहना मानना हमेशा ही उनके लिये अच्छा रहा है इसलिये राजा झट से हां बोलते हुए बोला कीं हां आप जो बोले जैसा बोले वैसा ही होगा। बताइये रानी बोली आज रात के बाद में अज्ञात जगह चली जाउंगी और संतान प्राप्ति के बाद में उचित समय पर वापस आ जाउंगी आप मुझे ढूढ़ने का प्रयास मत कीजियेगा। राजा बोला अज्ञात यह आप क्या कर रही है आप रानी होकर ऐसी बातें कर रही है आप कहां रहेगी।

रानी बोली कीं अगर आपको हमारी संतान चाहिये तो आपको मेरी बात माननी पड़ेगी। राजा कुछ ना कह सका फिर रात में राजा जानता था कीं वो अपनी रानी से अब पता नहीं कब मिल पायेगा।

रात्रि के बाद सुबह जब राजा नींद से जागा तब रानी जा चुकी थी। काशीराम के द्वारा पूछे जाने पर राजा ने कहां कीं प्रार्थना करें हम अपने इस प्रयास में सफल हो जाये। राजा को भरोसा था की रानी जहाँ भी होंगी वो इतनी बुद्धिमान और समझदार है कीं परिस्थितियों का सामना कर सकती है।

साथ ही उसे यह भी विश्वास था की रानी जो बोल के गई है वैसा ही होगा। उनकी संतान इस बार जीवित रहेगी इसलिए राजा अब अपने विरोधियों से निपटने लगा। वो अब विश्वास से भरा था। जिसके कारण उसे इसके अच्छे परिणाम मिल रहे थे।

फिर एक दिन अचानक लगभग 10 माह बाद ही एक सुबह रानी गोदी में बच्चा लिये आई, पुत्र था करीब एक माह का। राजा की खुशी का ठिकाना नहीं रहा राज्य भी उसने सभी को निमंत्रण भिजवा दिया गया। राजा ने रानी को धन्यवाद दिया कहाँ यह आपने कैसे किया और हमसे क्या गलती हो रही थी।

रानी बोली उचित समय पर आपको बता दूंगी। राजा अपने महल में नये मेहमान नन्हे राजकुमार के साथ बहुत खुशी-खुशी जीवन व्यापन करने लगा। साथ ही राजा के राज्य का विस्तार होने लगा।

लेकिन पुत्र के आने के बाद रानी में बहुत सारे बदलाव हुये रानी अब पहले जैसी नहीं रही थी ऐसा सोचना राजा का था रानी राजा को अपने समीप भी नहीं आने देती थी। कुछ ना कुछ कारण बता कर टाल देती थी।

राजा के द्वारा पूछे जानें पर रानी कहती की आप ने कहाँ था जो में कहूँगी आप मानेंगे। यह भी हमारे पुत्र के जीवन लिये आवश्यक है।

राजा का पुत्र अब 2 साल का हो गया। रानी का समीप ना आने का प्रतिबन्ध अभी भी राजा के लिये वैसा का वैसा ही था।

इतने समय के प्रतिबन्ध के चलते अब राजा के मन में कई विचार घर बनाने लगे। फिर एक दिन राजा को इस विचार ने पकड़ लिया की शायद यह पुत्र उसका नहीं है। कमी शायद उसी में थी। रानी को यह पता चल गया। इसलिये रानी अब उसे अपने पास नहीं आने देती।

अब उसे यह विचार हमेशा सताने लगा। अब हर बात और हँसने में वो अपने को अपमानित मान रहा था। राजा ने एक दिन रानी को पूछा की आप ने कहाँ था की यह बच्चा कैसे जीवित रहा आप बतायेगी। रानी फिर बोली महाराज उचित समय आने दीजिये।

राजा क्रोध में आ गया, बोला में कई दिनों आपके व्यवहार को देख रहा हूँ आप कुछ बहुत ही बड़ी बात छिपा रही है। यह बच्चा किसका है आप हमें सच बता दीजिये हम आपको क्षमा कर देंगे। रानी को राजा के इस तरह के बर्ताव से अचरच हुआ।

उन्होंने बोला यह बच्चा हमारा है आप कैसी बातें कर रहें। राजा बोला की अगर आपने झूठ बोला यां हमसे कुछ छिपाया, जो हमें कहीं ओर से पता चला तो आपको और बच्चे को दोनों को दंड मिलेगा।

रानी यह सुन क्रोध में आ गई और बोली महाराज आप किस तरह की बात कर रहें बात अगर मेरी होती तो में चुप रहती लेकिन आपने मेरे बच्चे के लिये बोला है, और में यह बात सहन नहीं कर सकती सच सुनने की हिम्मत है तो सुनें।

तब रानी ने एक ऐसे सच से राजा को अवगत कराया जो वो नहीं जानता था। रानी ने कहाँ की-मैंने इस पूरे राज्य में करीब 6 माह तक भ्रमण किया और जगह-जगह जाकर पुराने लोगों की बातें सुनी। आपके राज्य की सीमा पर जंगल में एक समूह रहता है। उनके कुल देवता में उनकी अटूट आस्था है और उनमें शक्ति भी है, साथ ही समूह का एक प्रधान है जो पूरे समूह का ध्यान रखता है।

उनकी वाणी मतलब उनके देवता की वाणी। जब आप एक वर्ष के थे तब आपके पिताजी और माता के साथ एक दिन यात्रा पर गये। बगगी से यात्रा करते समय उस समूह की एक महिला जो गर्भवती थी बगगी से टकरा कर मृत्यु को प्राप्त हो गई।

जिसके परिणाम स्वरूप उन्हें प्रधान ने श्राप दिया की अब से उनका वंश आगे नहीं बढ़ेगा। इसी वजह से आप भी अपने पिता के एक अकेली संतान है और इसी कारण हमारी संतान नहीं बच पा रही थी।

आपके यहाँ से जानें के बाद में वहाँ उन लोगों के साथ रही शुरू में उन लोगों को मुझ पर क्रोध था लेकिन फिर वो मेरी आस्था देखकर पिघलने लगे मैंने देवता से प्रार्थना, याचना की।

लेकिन एक बार तीर कमान से निकल गया तो वापस नहीं आता। हमारी संतान फिर पैदा होते ही चली गई। फिर राजा पूछता तो यह बच्चा किसका है।

मेरे समय के साथ ही वहाँ एक और स्त्री

भी गर्भवती थी उनकी संतान भी उसी समय हुई हमारी संतान के, फिर चले जानें में उनके देवता के आगे संतान को लेकर जोर-जोर से रोने लगी।

तभी वो सारे समूह वासी इस बच्चे मुझे देने आ गये और मेरे आगे घुटने टेक कर मुझे समर्पित कर दिया। उनकी आँखों में मेरे लिये प्यार था दया थी और हाथ में बच्चा था। बस मुझे लगा की अब हमें क्षमा मिल गई।

नवजात को में कुछ दिन वहाँ रहने के बाद लें आई। आप अपना बच्चा ना होने से कितने दुखी थे उन लोगों की दया और महानता देखो एक राजा को उन्होंने अपना बच्चा दे दिया वो भी उस राजा को पुत्र को जिसने उन्हें चोट पहुंचाई थी।

मुझे लगा की इस बच्चे को जीवन भर अपार स्नेह देना ही हमारा प्रायश्चित्त है। राजा यह सब सुनकर कुछ बोलने लायक नहीं रहा, खुद को कोसने लगा।

बोला में तो आपके क्षमा के लायक भी नहीं हूँ अपने परिवार की इस श्राप का पता मुझे नहीं लगा और आपने इतनी तपस्या की, मैंने आपसे विवाह करके आपके साथ अच्छा नहीं किया मुझे क्षमा करें। रानी ने कहाँ की शायद मेरे द्वारा ही इसका पता लगाया जा सकता था भगवान मुझे आपके पास लें आये। फिर राजा भी रानी के साथ वहाँ उन सभी से भेंट करने और क्षमा मांगने गया। और उनकी दया को स्वीकार करते हुए उस बच्चे को बहुत स्नेह करने लगा।

-कविता

बी. ए प्रोग्राम

जीत का नशा

आज, रोहन बेचैनी से उठा। उठते ही उसने करण को कॉल किया और परिणाम के बारे में पूछा। करण ने कहा कि अभी तक परिणाम नहीं आया है, तो रोहन ने चैन की सांस ली। रोहन, जो पिछले दो साल से अपनी परीक्षा की तैयारी कर रहा था, आज इतना बेचैन इसलिए था क्योंकि आज उसका परिणाम आने वाला था। उसने अपनी तैयारी श्री रघुवंशी स्कूल से शुरू की थी। जब 9वीं कक्षा में एक शिक्षक ने उसे असफल कहकर डांटा था, तभी से रोहन का एक ही सपना था – उस शिक्षक को गलत साबित करना। जब उसने ये बात अपने दोस्त करण को बताई, तो करण भी उस पर हंसने लगा और बोला, “सही तो कहा था तेरे शिक्षक ने, तू है ही नाकामयाब।”

अब रोहन के मन में यह बात घर कर गई थी कि हर कोई उसे नाकामयाब क्यों समझ रहा है। रेवाड़ी के एक छोटे से गाँव में बचपन बिताने के बाद, रोहन ने श्री रघुवंशी स्कूल में 8वीं कक्षा में दाखिला लिया। रोहन हिंदी माध्यम का छात्र था, और रघुवंशी स्कूल पूरी तरह से अंग्रेजी माध्यम का था। शुरुआत में उसे काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। वह हर दिन अपनी कक्षा के छात्रों के सामने शर्मिदा होता था। उसे अंग्रेजी बोलनी नहीं आती थी, और अगर वह कोशिश भी करता तो उसके सहपाठी उसका मजाक उड़ाते थे। वह परेशान होकर स्कूल बदलने की बात करता, लेकिन उसके माता-पिता नहीं मानते थे।

उनकी कॉलोनी में एक भाई रहते थे, जो रोज

रोहन से मिलते थे। उनका कॉलेज का आखिरी साल था और वे साथ में एक पार्ट-टाइम नौकरी भी करते थे। रोहन ने उन भाई को सारी बात बताई, तो वे हंसने लगे। रोहन उठकर जाने लगा, तभी भाई ने उसे रोका और पूछा, “कहाँ जा रहे हो?” रोहन को लगा कि भाई भी उसका मजाक उड़ा रहे हैं, लेकिन भाई ने उसे बैठकर समझाया, “जीवन में कई चीजें ऐसी होंगी जो तुम्हें पसंद नहीं आएंगी, पर तुम्हें उनके साथ जीना सीखना होगा। जैसे मुझे भी अपने कॉलेज और ऑफिस में कई लोग पसंद नहीं हैं, पर उनके साथ मैनेज करना पड़ता है। असल में, वे हमें बहुत कुछ सिखाते हैं। आज से मैं तुम्हें अंग्रेजी बोलना सिखाऊंगा।”

कहकर, विशाल अंदर गए और एक किताब लेकर आए। उन्होंने रोहन से उस किताब को पढ़ने को कहा। रोहन, जिसे अंग्रेजी का “ए” भी नहीं आता था, ने पढ़ना शुरू किया और वह दो लाइनों पर ही अटक गया। विशाल ने उसे कहा, “अबसे तुम रोज मेरे घर आ जाया करो, मैं तुम्हें रोज अंग्रेजी पढ़ना, लिखना और बोलना सिखाऊंगा।” रोहन को थोड़ी राहत महसूस हुई और अगले दिन, जैसे ही स्कूल खत्म हुआ, वह सीधा विशाल भैया के पास गया और उनसे अंग्रेजी सिखाने की बात कही। विशाल ने भी उसे सिखाने में रुचि दिखाई। धीरे-धीरे, रोहन की अंग्रेजी में सुधार होने लगा, और अब कक्षा के बच्चे उसका मजाक नहीं उड़ाते थे।

इसी दौरान, रोहन की दोस्ती करण से हुई। वे दोनों बहुत अच्छे दोस्त बन गए। दोनों साथ पढ़ते, साथ घूमते, साथ खाते और साथ खेलते। इसी तरह, रोहन ने अपना स्कूल पूरा किया और जब वह 12वीं कक्षा में था, तो उसे पता चला कि UPSC की एक परीक्षा होती है, जिससे IAS बनते हैं। रोहन और करण दोनों ने IAS बनने का सपना देखा। स्कूल खत्म होने के बाद, वे दोनों दिल्ली आ गए, कॉलेज में दाखिला लिया और धीरे-धीरे अपनी तैयारी शुरू की। वे एक-दूसरे की पढ़ाई में बहुत मदद करते थे। उनके और भी दोस्त बने, जो UPSC की ही तैयारी कर रहे थे।

रोहन ने विभिन्न गतिविधियों में भाग भी लिया, जबकि करण का रुझान खेलों की ओर था, इसलिए उसने फुटबॉल टीम जॉइन कर ली। दोनों अपने-अपने क्षेत्र में अच्छा कर रहे थे, लेकिन कहीं न कहीं उन्हें यह बात सताती थी कि UPSC का सिलेबस इतना बड़ा है और उनके पास कोई गाइड भी नहीं है। उन्होंने इस बारे में कई बार अपने दोस्तों से बात की, लेकिन किसी के पास कोई खास जवाब नहीं था।

कॉलेज में 'सबरंग' नामक एक कार्यक्रम होना था, जिसमें रोहन को प्रदर्शन करना था। उनकी टीम की प्रैक्टिस हर रोज सुबह 8-9 बजे तक होती थी। इसी दौरान रोहन की मुलाकात खुशबू से हुई, जो उसकी सीनियर थी और पॉलिटिकल साइंस ऑनर्स की छात्रा थी। खुशबू भी UPSC की तैयारी कर रही थी। अब रोहन को एक मेंटर भी मिल गई थी। उसके पास माहौल भी था और उसका

फ्रेंड सर्कल भी अच्छा था। सभी चीजें मिलने के बाद, रोहन को लगने लगा कि अब वह अपने सपने को पूरा कर लेगा। उसने अपनी तैयारी शुरू कर दी। वह अब 3rd सेमेस्टर में था।

खुशबू ने उसे गाइड किया और रोहन ने UPSC की तैयारी में जुट गया। वे कॉलेज की क्लासेस के बाद लाइब्रेरी जाते और साथ में पढ़ाई करते। खुशबू, रोहन और करण तीनों ने एक साल के भीतर-भीतर सिलेबस लगभग खत्म कर लिया था। अब बारी थी मॉक टेस्ट देने की। खुशबू ने अपने मॉक टेस्ट प्रारंभिक परीक्षा के पेपर से दो महीने पहले शुरू कर दिए थे, जबकि रोहन और करण अभी भी अपने सिलेबस को रिवाइज कर रहे थे। जब वे 3rd year में पहुंचे, तो रोहन और करण दोनों ने मॉक टेस्ट देना शुरू कर दिया और अपने मॉक टेस्ट का विश्लेषण खुशबू से कराया करते थे। खुशबू, जो किसी कारणवश अपने प्रीलिम्स का एग्जाम पास नहीं कर पाई थी, फिर से तैयारी कर रही थी।

रोहन को थोड़ा डर लगा रहता था क्योंकि उसके घर के हालात अच्छे नहीं थे। उसके पापा की एक छोटी सी दुकान थी और मम्मी घर का काम करती थीं। जैसे-जैसे परीक्षा करीब आती जा रही थी, उनकी तैयारी और डर दोनों बढ़ते जा रहे थे। खुशबू हर मोड़ पर उनकी सहायता करती थी। चाहे वह परीक्षा से जुड़ी हो, घर की परेशानी हो या कॉलेज की कोई समस्या। अब आखिरकार वह घड़ी आ ही गई थी, जिसके लिए रोहन और करण दोनों ने रात-रात भर जाग कर मेहनत की थी।

परीक्षा से एक दिन पहले, रोहन की तबीयत थोड़ी खराब हो गई थी, क्योंकि उसे परीक्षा की बहुत ज्यादा टेंशन हो रही थी। उसने दवा ली और परीक्षा देने गया। उसके दिमाग में हर समय असफल होने का डर घूम रहा था। वह परीक्षा देकर जैसे ही बाहर निकला, करण के चेहरे पर खुशी थी। और रोहन को लग रहा था कि उसका पेपर अच्छा नहीं हुआ। पर जब उन्होंने घर जाकर आंसर की से मिलाया, तो करण के ठीक-ठाक से अंक आए थे। पर रोहन जल्दी-जल्दी में आधे उत्तर देखना भूल गया था, जिससे वह अपने अंक ठीक से नहीं गिन पा रहा था। अब उसे और डर सताने लगा था। उसने आगे की तैयारी तो शुरू कर दी थी, लेकिन उसके मन में कहीं न कहीं यह डर था कि वह असफल हो जाएगा।

जैसे-जैसे परिणाम का दिन नजदीक आ रहा था, उसकी बेचैनी और बढ़ती जा रही थी। उसे डर था, क्योंकि उसके माता-पिता उस पर आशा लगाए बैठे थे कि उनका बेटा अफसर बनकर आएगा। उसे सपने भी परिणाम के आने लगे थे। जिस दिन परिणाम आना था, उसकी पिछली रात को रोहन को नींद नहीं आई, और बेचैनी के चलते उसकी तबीयत भी खराब हो रही थी। सोचते-सोचते उसकी आँख लग गई। जैसे ही वह उठा, उसने बेचौनी से करण को फोन किया और परिणाम के बारे में पूछा। करण ने कहा कि अभी तक कुछ नहीं आया है।

दोनों मिले और एक चाय की दुकान पर बैठे चाय पी रहे थे कि एक लड़का दौड़ता हुआ आया

और बोला, “परिणाम आ गया! परिणाम आ गया!” करण ने तुरंत अपना फोन निकाला और अपना परिणाम चेक किया। करण तो पास हो गया था, फिर उसने रोहन का भी परिणाम देखा। और रोहन भी पास हो गया था। दोनों ने एक-दूसरे को बधाई दी और अपने आगे के परीक्षाओं की तैयारी में जुट गए।

वे जुट तो गए थे अपनी आगे की तैयारियों में, लेकिन आने वाली अड़चनों से वे अभी भी अपरिचित थे। उन्होंने अपना शेड्यूल फिर से तैयार किया और शुरुआत की। रोहन, जिसे हर बार डर सताता था, अब थोड़ा निडर होने लगा था। उसके लिए अब UPSC उतना बड़ा लक्ष्य नहीं था। उसने प्रीलिम्स पास करके मानो कोई बड़ी जंग जीत ली थी। पर खुशबू, जो कि रोहन की सीनियर थी, हर बार उसे समझाती थी कि प्रीलिम्स में पढ़ा हुआ मटेरियल मेन्स में इतना काम नहीं आता। अभी उसे और मेहनत करनी पड़ेगी।

रोहन दिन-प्रतिदिन अपनी मेहनत करता रहा, पर कहीं न कहीं वह एक गलती कर रहा था, और वह गलती थी अति-आत्मविश्वास। उसे लगने लगा था कि जैसे उसने प्रीलिम्स निकाला है, वैसे ही मेन्स भी आसानी से निकाल लेगा। पर वह इस बात से अनजान था कि प्रीलिम्स जितना दिखता है, मेन्स उससे कहीं ज्यादा कठिन है। उसकी तैयारी चलती रही।

वहीं करण, जो खुशबू के दिखाए कदमों पर चलकर तैयारी कर रहा था, हर रोज खुशबू से सलाह लिया करता था। वहीं, रोहन ने खुशबू की

सलाह लेना थोड़ा कम कर दिया था। उसे लगने लगा था कि वह अपने दम पर UPSC निकाल सकता है। धीरे-धीरे दिन बीतते गए और परीक्षा का समय नजदीक आ गया। अब रोहन एक तरफ अपनी खुद की तैयारी के साथ था, और करण और खुशबू एक साथ मिलकर एक-दूसरे की मदद करते हुए पढ़ाई कर रहे थे। तीनों ने परीक्षा दी।

परीक्षा के बाद, फिर वही हुआ - रोहन ने अपने उत्तरों का मिलान नहीं किया, जबकि करण और खुशबू ने आपस में अपने सारे उत्तर डिस्कस कर लिए थे। तीनों ने मिलकर कई बार बात की, पर पेपर के बारे में चर्चा बंद हो गई थी। अब जैसे-जैसे परिणाम का दिन नजदीक आ रहा था, रोहन को घबराहट होने लगी थी। उसे डर था कि

कहीं वह असफल न हो जाए। 8 सितंबर को परिणाम आना था, और 7 सितंबर की रात से ही सभी के अंदर हलचल शुरू हो गई थी।

रोहन को हल्का सा डर था, पर उससे भी ज्यादा वह आत्मविश्वास से भरा था कि उसका चयन हो जाएगा। आखिरकार 8 सितंबर को जब 2 बजे परिणाम आया, तो करण ने सबसे पहले अपना परिणाम चेक किया, और वह पास हो गया। फिर खुशबू ने अपना परिणाम चेक किया, और वह भी पास हो गई। पर अफसोस, इस बार रोहन पास नहीं हो पाया था। उसके सारे सपनों और उम्मीदों पर पानी फिर गया था।

-विपिन करनोजिया
बी ए (प्रोग्राम)



एक गाँव में एक लड़का था जिसका नाम अर्जुन था। अर्जुन को बहुत जल्दी गुस्सा आ जाता था, जिससे वह अक्सर लोगों से लड़ बैठता था। एक दिन उसके पिता ने उसे एक उपाय बताया। उन्होंने कहा, “जब भी तुम्हें गुस्सा आए, एक कील इस लकड़ी की बाड़ में ठोक देना।”

अर्जुन ने वैसा ही किया। पहले दिन उसने कई कीलें ठोकी, लेकिन धीरे-धीरे उसने अपने गुस्से पर काबू करना सीख लिया और कीलें ठोकना कम कर दिया।

जब उसका गुस्सा पूरी तरह कम हो गया, तो उसके पिता ने कहा, “अब हर दिन एक कील निकालो।” धीरे-धीरे सारी कीलें निकल गई, लेकिन बाड़ पर निशान रह गए।

पिता ने समझाया, “गुस्से में कही गई बातें भी ऐसी ही दिल पर निशान छोड़ जाती हैं।” अर्जुन ने यह बात समझ ली और शांत स्वभाव का हो गया।

-तान्या वर्मा
बी.एस.सी. (ऑर्नस) बॉटनी

कुछ यादें दरख्तों तले...

दिल्ली में रहने का एक फायदा हिमालय की खूबसूरत वादियों से निकटता भी है। जब कभी राजधानी की हवा ज्यादा जहरीली लगनी लगे, या बस यूँ ही पहाड़ियों में वक्त बिताने का मन हो, झोला उठाइए, बस में तशरीफ धरिए और पहुँच जाइए हिमालय की गोद में। हिमाचल की घाटियों में घुसते ही जो पहली चीज आपका ध्यान खींचेगी वो शायद ऊँचे पहाड़ न होकर गहरी घाटियों में बहते दरिया होंगे। व्यास नदी का निर्मल नितांत प्रवाह आपको उस शांति की याद दिला सकता है जो कैलाश पर्वत पर योगनिद्रा में लीन शंकर के मुख पर होती होगी। पर्वतराज हिमालय की बेटियों के समान ये नदियाँ अपनी शुद्धता पहाड़ों में ही बचा पाई है। यहाँ से उतरकर मैदानी इलाकों में वो कूड़े-कचरे और हमारे पापों को धो कर कुछ मलीन हो उठती हैं।

हिमाचल की याद आते ही याद आते हैं खूबसूरत दरख्त - देवदार, केदार, चीड़, ओक, और न जाने कितने ही ऐसे पेड़ों की नस्लें इन घाटियों की शोभा तब से बढ़ा रहीं हैं, जब यहाँ इंसान का नाम-ओ-निशान भी न था। हम हर एक दरख्त का शायद नाम न जानते होंगे, पर इनकी बेहिसाब खूबसूरती हमें ललचाती है की कुछ पल इनकी छाँव में बिताए जाएं।

ज्यों ही आप इन दरख्तों की ठंडी छाँव के लालच को जरा दरकिनार करेंगे, तो आपको सामने दिखेंगे ऊँचे पर्वत - अचल अटल। ये आपको ललकारते हैं, पुकारते हैं, आमंत्रित करते हैं, अपनी

उचाइयों को नापने के लिए। जिस वेग से नदियाँ पर्वतों से नीचे उतरती हैं, उतनी ही थकावट के साथ आप इन पर्वतों की चोटी तक पहुँच पाएंगे। पर ये थकावट उस नजारे को देख नदारद हो जाती है जो आपको पर्वत की ऊँची चोटी से दृष्टिगत होगा। दूर-दूर तक फैले घाँस के हरे मैदान, उसमें चरते मवेशी, और मवेशियों को डपटता चरवाहा। ये नजारा तो देखते ही बनता है भाई।

जब आप थक हार कर पहाड़ से वापस नीचे उतरेंगे तो अब मन होता है की किसी चाय के ठीहे पर बैठकर जो दो चुस्की अदरक वाली चाय की हो जाए तो क्या कहना। यहाँ हिमाचल में चाय की इन गुमटियों में आपको एक चीज खास लग सकती है - महिलाओं का शशक्त नेतृत्व। लगभग हर दुकान को महिलाएं ही चलाती हैं, वो भी ठाठ से। मुझे याद है की जब मनाली में एक ऊँचे पहाड़ पर एक जलप्रपात देखने हमारी मंडली घंटों चढ़ाई करके पहुँची, वहाँ एक पहाड़ी महिला एक थैला और चाय का थर्मस लिए अपने हिस्से की रोजी कमाने एक चट्टान पर बैठी थी। उसके पैर में चप्पल भी न थी। न जाने कैसे वो रोज ये पहाड़ चढ़ती और उतरती होगी। हम लोग ट्रेक वाले खास जूते पहन भी पहाड़ चढ़ने में असमर्थ थे।

हमें चाय पिलाने के बाद उस महिला ने बड़ी नजाकत से हमारे प्लास्टिक के प्याले उठा अपने झोले के हवाले कर दिए। शायद उसे भी इल्म था की ये पहाड़, ये वादियाँ, यही उसके जीवनयापन के साधन थे। और जो अन्न दे वो पूजनीय होता

है, तीर्थ होता है। और तीर्थ पर कचरा नहीं फेंका जाता, माथा टेका जाता है। खुदा जाने की इस समझ को पहाड़ों से उतर कर आप और हम तक इन शहरों में आने में कितना वक्त और लगेगा।

आखिर में विदाई का वक्त भी आता है। रीत है भाई जगत की, और फिर कॉलेज भी तो कोई सदी-दो सदी के लिए तो बंद होता नहीं। तो हम भी चल पड़ते हैं वापस दिल्ली की ओर। रास्ते में जब पहाड़ और वादियाँ गुजरती जाती हैं तो खयालों का एक सैलाब भी दिल में उठता रहता है। ये

शिकायत आती है की ये हसीन नजारे इन हिमाचलियों की किस्मत में ही क्यों है भाई? हमसे क्या गुनाह हुआ जो हम यूँ लूटे रहे। पर फिर मन को समझ आता है – इस धरती के हर इलाके की अपनी एक तासीर भी है और तकदीर भी। दोनों बदली नहीं जा सकती। दिल्ली का चाँदनी चौक और मनाली का मॉल रोड एक ही सिक्के के दो पहलू हैं, बस उच्छालने वाला खुली आँखों से देखे।

-अरिन कुमार शुक्ला
बी. ए. (ऑनर्स) राजनीति शास्त्र

जीत का हिसाब

मेरी आखें अब बूढ़ी हो चली अब सपने तेरी आंखों से देखना चाहता हूँ,
मेरे बुरे वक्त में जो साथ छोड़ गए थे वो अपने देखने हैं,
सुकून से मुलाकात ना कर पाया अपने समय में, अब खुशियों से वास्ता रखना चाहता हूँ,
बेटा, बड़े चले हैं ये पैर काम की तलाश में.. अब कुछ देर बैठ आराम करना चाहता हूँ,
जीवन की दोड़ ने खूब भगाया है अब मैं बस ठहरना चाहता हूँ,
मंदिरो के दर्शन, चार धाम की यात्रा और ना जाने कितने सपने पूरे करने हैं जो कभी जवानी में सजाए थे...

वो मकान भी बनाना है जिसके मैंने ख्वाब सजाए थे....

कहते हैं बड़े बूढ़े ज्ञान का भंडार होते हैं....

अब उनकी बैठकों में बैठ बहुत सारा ज्ञान लेना है,

जो शायद अपनी जवानी में वो दिया था वापस वो सम्मान लेना है,

हार जाया करता था जिंदगी से हर रोज मैं, अब सिर्फ जीत का हिसाब लेना है,

बेटा, अब तू कामयाबी की रहा पे चल...

तेरे बाप को भी गर्व से तेरा नाम लेना हैं

चौड़ा सीना कर सबको दिखाना है,

जो नाम भूल गए थे लोग मेरा, अब दोबारा उनकी जुबां पे मेरा नाम लाना है।

-विपिन कर्नोजिया

श्राप्ति बचपन का घर

मैं जब छोटी थी, तब हमने एक घर लिया था। उस घर में मैं, मेरी माँ और मेरे पिता रहते थे। हम सब बहुत खुश थे। फिर हमारी जिंदगी में एक तूफान आया। सब कुछ तबाह हो गया। हमारा सुखी-सा परिवार बदनसीब निकला।

जब हम पहली बार उस घर में गए थे, मुझे वह घर बहुत पसंद आया था। माँ सुबह-सुबह खाना बनाती थीं और मैं तथा मेरे पिता खाना खाकर स्कूल और ऑफिस के लिए निकल जाते थे। लेकिन एक दिन, जब मेरे पिता घर में अकेले थे, क्योंकि मैं और माँ नानी के घर गए थे, तो रात में उन्होंने मेरी माँ को अंधेरे में देखा। डर के मारे उन्होंने तुरंत बत्ती जलाई, लेकिन वहाँ कोई नहीं था।

ऐसा ही दूसरी बार मेरी माँ के साथ हुआ। कोई इंसान बार-बार दरवाजा खटखटा रहा था। माँ जितनी बार दरवाजा खोलतीं, वहाँ कोई नहीं होता था। रात के दो बजे माँ खिड़की से देख रही थीं कि कौन है, लेकिन कोई दिखाई नहीं दिया। तभी अचानक दरवाजा फिर से खटखटाया। हम सभी बहुत डर गए थे, क्योंकि उस समय पिता जी घर पर नहीं थे।

अब तीसरी बार यह मेरे साथ हुआ। मैं बचपन में अपनी परछाई के साथ बहुत खेलती थी। अब माँ को इस घर से बहुत डर लगने लगा, इसलिए हमने वह घर छोड़ दिया।

हमारे जाने के बाद उस घर में जो भी रहने आया, उसका परिवार बर्बाद हो गया। एक परिवार

में उनकी बच्ची ने आत्महत्या कर ली, माँ पागल हो गई और पिता घर छोड़कर चला गया। जो भी नया परिवार आया, उसका भी यही हाल हुआ। अब उस घर को कोई सामान्य घर नहीं कहता। उस घर ने सबकी जिंदगी तबाह कर दी है। वह एक श्रापित घर है।

स्निग्धा रक्षित

बीएससी (ऑनर्स) बॉटनी

दोस्तों की हस्ती

हम दोस्तों की क्या हस्ती
आज घूमने,
कल कॉलेज चले
मस्ती का आलम लिए हम
हिन्दी की क्लास करने चले ॥
आए हम बनकर उल्लास अभी
आंसू बन कर बह चले सभी।
दोस्त पूछते ही रह गए
तुम किधर से आए और कहां चले।
चलते चलते वनस्पति का
विस्तार हो गया
पूरी रात प्रायोग्यकर लिख कर
मेरा बेड़ा पार हो गया॥

-आदित्य कुमार सिंह

बीएससी (विशेष) वनस्पति विज्ञान

गरीब की अदालत

हा मां ठीक हूं
 हा जल्दी ही आऊंगा
 काम थोड़ा ज्यादा चल रहा है
 पगार थोड़ी ज्यादा लाऊंगा

एक पुराने फोन से बात करता
 मैं शांत खड़ा देख रहा था
 बहन की शादी भी है अगले महीने
 तो इमारतों के आगे,
 धूप में तपते देख रहा था।

नौकरी लग गई है सिव्क्योरिटी गार्ड में
 पढ़ाई भी कम मांग रहा है
 वैसे काम भी ठीक ही है
 ऊपर से 15000 भी दे रहा है

मैं बैठ सभी उसकी बातें सुनता
 हर बात में हंसता मुस्कुराता देख रहा था
 जैसे चंद पैसों के पीछे, नींद मरते देव रहा था।

उसकी 1.5 कमरे की एक दुनिया है
 जिसमें वो में सोता, खाता
 और एक संदूक भी है
 जिसमें एक पर्चा है

हा मतलब उसे अक्सर पढ़ते देखा है
 बताता तो कुछ नहीं पर मुझे दुख है
 आज मैंने उसको रोते देखा है।

आज काम से थोड़ा देरी से आया
 थकान थी तो शायद खाना नहीं बनाया
 वैसे छत पर घूमने आया करता था
 पर मुझे दुख है

आज फिर उसको मैंने चलते लड़खड़ाते देखा।
 अब वो जैसा था, वैसा मैं न रहा
 चुप चाप रहता, न कुछ बोलता न बात करता
 अकेला बैठा कुछ तो कर रहा है वो
 जैसे अनकही कहानी बुन रहा है वो

उसके घर से हर रोज आता फोन
 बेटा थोड़े पैसे भेज दे
 लड़के वाले जिद कर रहे हैं
 की उनको तो बस एक दो पहिया गाड़ी ही चाहिए
 उसका थोड़ा बंदोबस्त करदे
 उसके चेहरे की मासूमियत को गौर से देखता
 जैसे वो कोई ख्वाब बुनता, तोड़ता
 जैसे वो एक कोना ढूँढ़ कर रोता

मैंने कभी पूछी नहीं कहानी उसकी
 आखिर कैसी रही जिंदगानी उसकी
 एक बार सुना था की
 गांव में एक घर है
 मां दूसरो के यहां खेती करती
 और बाप.....
 वो चुप था
 जैसे समुद्र किनारे उठता सैलाब स्थिर था
 जैसे भरे शोर का कोलाहल व्यवस्थित था
 वो चुप था।

सवाल कई थे
 सोचा प्रश्न करू
 उस पूर्ण विराम पर रुका हुआ कोई छंद कहूं
 पूछ लूं उससे की पर्चे पर लिखा क्या है
 या जीवन को जो वा गया वो अभिशाप कहूं।

लगी है होड़ उसको अदालत में हराने की
 सच्चाई जान राहुल तू झूठे जमाने की
 नहीं है पैसे तो रूठे शकील बैठे हैं
 उसका जीवन फरेब है और वो वकील झूठे है

मैं उसके आने की आस में बैठा बै हु
 उसके जलते सपनों की राख पर बैठा बै हु
 मेरे द्वारा लिखी गई हर बात झूठी है
 तुम्हारी कहानी में होगा उसका जीवन गुलाबी
 पर उसके घर में आज भी फूटी रकाबी है।

-राहुल दीप

संघर्ष से भला कौन अछूता रहा है?

यह डर भी खुद को डराएगा
तू हिम्मत कर, हौसला रख
तू खुद ही खुद को बनाएगा।

आज नहीं तो कल
कल नहीं तो परसों
देर सबर तू खुद ही
खुद को जगाएगा।

मुश्किलात तो किसकी जिंदगी में ना है
जिससे पूछो वही गम में डूबा है
जानता हूं कि तुम्हें भी दर्द होता है।
मगर यह भी तो जानो कि
दर्द भला किसको नहीं होता है।
माना की जिंदगी में हर पल
अनेकों ठोकरें खाई है तुमने
पग-पग पर जहर के घूंट पिए है तुमने
वक्त-वक्त पर बेइज्जती सही है तुमने
मगर फिर भी हार नहीं मानी है तुमने
रार नहीं ठानी है तुमने
काल की कपाल पर लिख
अपने हौसलों की यह दास्तां
आज दुनिया के दिलों में अपनी एक
नई पहचान भी तो बनाई है तुमने।

-बजरंग बिश्नोई
राजनीति विज्ञान विशेष

यूं ही कब तक छिपाओगे?

निकालो अपनी रचनाओं को
कब तक यूं ही अंदर दबाए रखोगे
जब रखोगे दुनिया के सामने
तभी तो तुम अपनी रचनाओं का
मूल्य जान पाओगे
और जहां अपेक्षा है सुधार की
करके वहां सुधार ही तो
तुम अपनी रचनाओं को निखार पाओगे
भला यूं ही कब तक
तुम अपनी रचनाओं को इस कदर
दुनिया से छिपाओगे।

-बजरंग बिश्नोई
राजनीति विज्ञान विशेष

असली युवा

युवा देश की नींव है युवा
 देश का भविष्य है युवा
 समाज का एक अंश है युवा
 राष्ट्र के भविष्य की नींव है युवा
 तिरंगे का रक्षक है युवा
 मां-बाप की जान है युवा
 तरक्की का साधन है युवा
 राष्ट्र निर्माण का नेता है युवा
 पराक्रम का प्रतीक है युवा
 साहस, शौर्य, पराक्रम, वीरता और
 बलवान जैसे गुणों से युक्त है जो वो है युवा
 राष्ट्र प्रेम और राष्ट्र भक्ति से भरपूर है जिसका हृदय
 वो ही है आज के समय में असली युवा।

-बजरंग बिश्नोई
 राजनीति विज्ञान विशेष

अरे! क्यों बयां करते हो राज अपने?

हर किसी को नहीं बताया जाता
 कि मेरी मंजिल कहां है,
 हर किसी को नहीं जताया जाता
 कि मेरा अगला कदम क्या है?
 बताई जाती है तो सिर्फ एक
 पहचान आने वाले वक्त की।

थोड़ा सब्र करो, सोचने दो इस दुनिया को
 कि ये अब और आगे क्या करने वाला है
 और फिर करो धमाका ऐसा
 कि तुम्हें कोई गलती से
 आंख भी दिखाने ना पाए।

अरे! क्यों बयां करते हो
 हर किसी के आगे राज अपने
 कब समझोगे कि यह दुनिया
 कभी किसी की सगी नहीं होती
 और इस दुनिया में अपने
 मां-बाप से बढ़कर कोई
 सच्ची शख्सियत नहीं होती।

मेहनत करो इस तरह कि
 दुनिया को भनक न लगने पाए
 और परिणाम लाओ ऐसा कि
 दुनिया देखती ही दंग रह जाए।

-बजरंग बिश्नोई
 राजनीति विज्ञान विशेष

मगर इन गमों को हम भी सह लिया करेंगे!

की एक पल की मुस्कुराहट के बाद वो
गम की छाया फिर से मंडराने लगती हैं,
और कुछ ही वक्त बाद वो बिछड़ने का
साया भी मन में गहराने लगता है।
कि मुझे नहीं रहना हर किसी के संग
मगर कम से कम ऐ खुदा हमारा
उन लोगों के साथ तो संग बना रहने दे
जिनकी हमारे लिए अहमियत
माता पिता के बाद सबसे बढ़कर
सैकड़ों गुना अधिक होती है।
खैर चलो छोड़ो जब जिदगी ने हमें
इतने दुःख दर्द दिए हैं और
हमने भी उनको डटकर सहा है,
तो इन गमों को भी हम सह लेंगे।
जानते हैं हम की गमों को सहना
और सहकर भी मौन रहना
इतना आसान भी नहीं होता
और तब तो और भी नहीं जब
बिछड़ने वाला भी आपका सबसे अजीज हो
मगर कोई नहीं ज्यादा से ज्यादा क्या होगा
कुछ दिन रुठे हुए रहेंगे
बात-बात पर चीड़ जाया करेंगे
और कभी छोटी-छोटी बातों पर
दोस्तों से लड़ भी जाया करेंगे
और अगर कहीं इससे भी
हमारा जी ना हल्का हुआ तो
कहीं अकेले में जाकर
किसी वीरान कोने में बैठकर
दो पल आंसू भी बहा लिया करेंगे।
मगर इन गमों को हम भी सह लिया करेंगे।

-बजरंग बिश्नोई
राजनीति विज्ञान विशेष

पुस्तक

मेरी पुस्तक रंग-बिरंगी
कहे कहानी यह सतरंगी
करती है यह बात मुझसे
जब मैं होती हूँ उदास
यह मेरे पास आती है हँसकर
बचपन में तू मेरा हमसफर बनी
जब मैं बड़ी हुई, तब भी सफर में तू साथ रही
एक रिश्ते की तरह, तूने अपना फर्ज निभाया
मुझे इस नकली दुनिया में, तूने चलना सिखाया
कुछ समझ न आए तो तूने हाथ थामा है
हर अकेले इंसान के अकेलेपन को तूने पहचाना

-तान्या वर्मा
बॉटनी ऑनर्स

गर्मियाँ

सूरज की रोशनी से लेकर पक्षियों के चहचहाने तक,
जानवरों का नींद से उठना और
पानी की सतह के झिलमिलाने तक
इस दृश्य को कर सकते हैं केवल गर्मियों में ही।
मनाली और शिमला की वादियों में या गोवा के
समुद्र तट पर जाते हैं हम गर्मी का आनंद उठाने,
इसी बहाने जिंदगी जीने का एक नया अंदाज लेकर
ही हम जाते हैं।

-सुहानी पंजिका
बॉटनी ऑनर्स

गांव

सुकून की तलाश में सुकून छोड़ आया हूँ
मैं अपना गांव छोड़ दिल्ली चला आया हूँ
बड़े गुमान से निकला था इस शहर में भटकते हुए
जैसे मैं किनारे पर कश्ती छोड़ आया हूँ
न जाने क्यों मैं दिल्ली चला आया हूँ

यकीनन दिलकश थे नजारे घर के मेरे
वो मनमोहक सौदार्यता, वो हरियाली गांव की मेरे
हर शाम दोस्तों के साथ बैठना छोड़ आया हूँ
और मैं दिल्ली चला आया हूँ

हाल-ए-दिल किसको सुनाऊं,
अब यह कोई अपना नहीं लगता
मुकम्मल हो भी जाऊ अगर
तो जशन, जशन लगता
उन यादों के सहारे जब से घर छोड़ आया हूँ
मैं अपना गांव छोड़ जबसे दिल्ली चला आया हूँ

अरे कोई मुझे मेरे गांव ले चलो
जिस ख्वाब में जीते थे, उस याद में ले चलो
अपना हंसता-खेलता बचपन भूल आया हूँ
और लो मैं दिल्ली चला आया हूँ।

-राहुल दीप

बी एस सी (आइ सी)

पापा

पापा जितना आसान शब्द उतना ही मुश्किल
किरदार।

जितना सरल स्वभाव उतना ही मुश्किल जीने का
अंदाज।

जब तक आप साथ थे तब तक सब था आसान
पर जब आज आप नहीं है

मेरे पास तो समझ आया

कितना मुश्किल था आपका किरदार

आप नहीं तो सब अधूरा सा लगता है

आप नहीं तो सब बिखरा सा लगता है

पर मैं जानती हूँ

जितना भी अच्छा समय मैंने आपके साथ बिताया

उनकी यादों के साथ सीख लूंगी धीरे धीरे

आपके जैसे जीने का अंदाज

-निशा

बीएससी (ऑनर्स) वनस्पति विज्ञान

शाम

ये शाम नहीं हर शाम सि,
इस शाम में मैं ठहर जाऊं।
इस शाम रोशनी इतनी सि,
मैं अधेरा इसमें बिखर जाऊं।
ये शाम आखिरी शाम नहीं,
अगली सबुह भी आयेगी।
ये रात आखिरी रात नहीं,
कल की शाम भी ढल जाएगी।

-तन्मय श्रीवास्तव

बीएससी (ऑनर्स) बॉटनी

आशा की किरण

आशा की किरण है हल्की,
उम्मीदों से है हौसला मेरा,
जिंदगी है उलझनों वाली,
मुस्कुराकर सुलझा रही हूँ।
कच्चे धागे की डोर पक्की कर रही हूँ।
बस इंतजार है उस दिन का जब इस कविता
का उल्लेख कर रही हूँ।

बेटियां

मां की परछाई होती है, बेटियां।
पिता का गुरुर होती है, बेटियां।
भाईयों की लाडली होती है, बेटियां।
घर की हर खुशी हर मुस्कुराहट की
वजह होती है, बेटियां।
घर की आन, बान, शान होती है, बेटियां।
मां लक्ष्मी, मां सरस्वती और मां काली
व समस्त देवियों का रूप होती है, बेटियां।
किसकी मां, बहन, पत्नी होती है, बेटियां।
संसार का अनमोल रत्न है, बेटियां।
एक बाप के लिए पराया धन होती है, बेटियां।
अपने परिवार की हिम्मत होती है, बेटियां।
किसी के घर की इज्जत है, बेटियां।

-गुंजन

बीएससी (ऑनर्स) बॉटनी

मुझे याद आता है...

बहुत याद आता है...

गर्मी की छुट्टियों में मिलने वाला नानी के हाथ का खटमिठा अचार

पापा के साथ पन्ने बांट के पढ़ना इतवार का अखबार

धारावाहिक की अगली किश्त के लिए पूरे हफ्ते का इन्तेजार

टेपरिकॉर्डर पर सुने गानों को देखने के लिए दूरदर्शन के रंगोली और चित्रहार

होली, दिवाली और जन्मदिन पर नए कपड़ों में इतराना

साल में दो बार वीसीआर पर रात भर में चार पिक्चर चलाना

दोस्तों को चिट्ठी भेजते ही जवाब के लिए बेकरार हो जाना

हास्टल से घर आने पर माँ का रोज कुछ खास बना कर खिलाना

आज जब मिल जाता है सब एक बटन दबाते ही...

अचार

खबरें

पूरी सीरीज

मनपसंद गाना...

नए कपड़े

मूवीज

ईमेल- वीडियोकॉल

और दुनिया के हर हिस्से का खास खाना

पर फिर भी वो सब बहुत याद आता है

जो शायद ये बताता है...

कि मंजिल को हासिल कर लेने से ज्यादा आनंद

मंजिल तक पहुंचने के सफर में ही आता है...!!!

-शिल्पी श्रीवास्तव

सहायक प्रोफेसर, दर्शन शास्त्र विभाग

गजल

जिस राह को कहते हैं कि वो जाती है मुझ को
मुझ तक तो नहीं आती है गो जाती है मुझ को

हर सुब्ह नसीम आती है गुलगश्त-ए-चमन को
पाती जो नहीं मुझको तो रो जाती है मुझ को

होता है नुमूदार भला कब मेरा सब्जा
मिट्टी में बहर-हाल वो बो जाती है मुझ को

हर रोज नई तरह से पाता हूँ उसे मैं
वो रोज नई तरह से वो जाती है मुझ को

इक गर्द-ए-अबद-ताब कि मैला मुझे कर जाए
इक बारिश-ए-इम्कान कि धो जाती है मुझ को

-अर्हत

गजल

मेरा क्या उस दश्त से नाता दश्त जो अब आबाद नहीं
मैं हूँ निवासी शहर का अपने मैं कोई सहारा-जाद नहीं

रात जो रो-रो मैं ने जू-ए-खूँ है बहाई सो क्या कम है
मुझ से तकाजा-ए-जू-ए-शीर करो न कि मैं फरहाद नहीं

जुग बीते उस फूल को हम ने एक किताब में रक्खा था
फिर वो किताब न जाने कहाँ किस ताक पे रक्खी याद नहीं

ऐसे बख्त-ए-रमीदा की खातिर, खातिर क्योंके परेशाँ हो
ऐसे सरगर्दा दिल से क्या शिकवा अगर आबाद नहीं

पिछले बरस तो 'अर्हत' जी का दश्त में आना जाना था
अब के बरस तो जैसे उन को घर से निकलना याद नहीं

-अर्हत

Desh
2025-26

English Section

Editor : **Sh. Purushotam Dass**
Student Editor : **Adrita Chakraborty**

LIST OF CONTENT

Women, Work and Wages: Exploring the Inequalities	- Dr. Shilpi Srivastava	38-42
Atmospheric Touch Screen in Display: Healthcare future is here	- Sumant Kumar Vishwakarma	43-47
Just a TREE?	- Ayushman Rai	48-50
Finding Peace in the Fields: My Experience of Living in Punjab	- Anjali Patel	51-53
Annual Report for 2025-26	- Prof. Lt. Sushila Singhal	54
Two Brothers	- Moulik Pandey	55
One, two, three and so on	- Vanshika	55
NCC Air Wing (2 DGAS) Report 2025-2026	- Flying Officer Deepti Goel	56-58

Women, Work and Wages: Exploring the Inequalities

'One is not born but rather becomes a woman', said the famous philosopher Simone de Beauvoir and rightly so. The questions are how and why does this happen and what is the implication of 'becoming a woman'? The paper is broadly divided into two parts. In the first part, I intend to explore on the ideas of what does it mean to become a woman? What are the differences between a 'man's work' and a 'woman's work'? If these differences reflect in wages and if they do, what is the justification for it? In the second part of the paper i will try to relate these answers with reference to how the position, work and wages of women were affected during the pandemic in very specific ways and therefore it is important that any policy that aims at ensuring social justice must address the specific challenges that women face.

The first question about what is it to be a woman. I think we all would agree that the term 'woman' is not just a reference to the female member of the human species. The difference between sex and gender, where the former refers to one's biological entity and the latter is a social entity is a notion that has been much discussed and debated. The issue about the social construction of the idea of woman that exists in our society has also been discussed in many famous works on this theme. One

such important work is 'The Creation of Patriarchy' by a very eminent and important feminist scholar Gerda Lerner. Lerner in her work has stressed on the importance of studying women's history. She claims that the actual lived past and the recorded history that we have inherited are not the same because, "...the interpreted record of the past of human race ...tells the story from the viewpoint of the male half of the humanity only."ⁱ She argues that the role of women in shaping the human civilization has been equal to men, if not more. As constituting the half of human kind their role in creation of history is undeniable but unacknowledged. Lerner claims that,

"Women are and have been central, not marginal, to the making of society and to the building of civilization. Women have also shared with men in preserving collective memory, which shapes the past into cultural tradition, provides the link between generations and connects past and future. This oral tradition was kept alive in poem and myth, which both men and women created and preserved in folklore, art and ritual."ⁱⁱ

Through her detailed account of how the historical process of the creation of patriarchy has actualised, Lerner argues that, the commodification of women's sexual

ⁱ Creation of Patriarchy, p4

ⁱⁱ Ibid, p4

and reproductive capacities had started even before the creation of western civilization. And the beginning of agriculture ensured that women were treated as a resource just as land and their own labour and the labour of children produced by a woman could in turn be used to create surplus. The economic notion of class was decided very differently for men and women. In case of men it was based on their relationship with the means of production whereas for a woman it was decided on the basis of her sexual ties to a man. Her access to the means of production was through a man, usually the father or the husband and as such women who were not associated to a specific man or were single women were denied inclusion into the respected classes. As per Lerner,

"Economic oppression and exploitation are based as much on the commodification of female sexuality and the appropriation by men of women's labour power and her reproductive power as on the direct economic acquisition of resources and persons."ⁱⁱⁱ

These arguments, clearly suggest that being a "woman" is standing in a specific relationship with the means of production. This specific understanding of women and their labour in turn led to a specific understanding of 'work' with respect to women. In most cultures across the globe

we find that the domestic chores are considered to be the primary responsibility of a woman, whereas, the man is assigned the role of the protector, provider and the decision maker at the level of the community as well as the family. According to a UN Women report published in 2017^{iv}, the total value of time spent by Indian women on unpaid care and domestic work is equivalent to 39 percent of the GDP. Even though women spend a considerable amount of their time and energy on activities related to agriculture, they are seldom recognised as farmers, rather their work amounts to unpaid family farm labour. A unique Time Use Survey conducted in 1998^v, revealed that women spend 51 percent of their time doing unpaid jobs. In the recent time, climate change has further impacted the actual time that women spend in getting these tasks done. As Fetching water, collecting fodder and other agricultural activities may require even more time owing to shrinking water bodies and forests.

It is not just the time that women spend in doing these tasks that is of concern, but also the nature of work itself. Most domestic chores designated to women are unimaginative, repetitive and monotonous in nature. Cleaning, dusting, washing, cooking, fetching water, collecting fuel and fodder are all activities that need to be

ⁱⁱⁱ Ibid, p 216

^{iv} Un women 15-16

^v India Ministry of Statistics and Programme Implementation

performed on a daily basis as part of a routine. Women involved in these tasks often lose interest in these chores for there is rarely any room for innovation and creativity. Acknowledgement and appreciation from other family members or society is also practically missing as these tasks are perceived as the basic duties of women. The work for men, on the other hand, typically involves innovation, creation and recognition. Household chores that are primarily a woman's work are endlessly repetitive, that which is cleaned is soiled and then cleaned and so on the food that is cooked is consumed and then again food is cooked. Basically, the products of domestic work must be necessarily consumed. Beauvoir claims that within the family structure, there exists no symmetry between the positions of husband and wife. Simone de Beauvoir beautifully summarises this asymmetry that had been identified by several thinkers in the past, with the notions of immanence and transcendence. She claims,

"Since the husband is the productive worker, he is the one who goes beyond family interest to that of society, opening up a future for himself through cooperation in the building of collective future; he incarnates transcendence. Woman is doomed to the continuation of the species and the care of the home- that is to say, to immanence."

Thus, with respect to time as well as the nature of work woman and man's definition of work is very different. But this doesn't end here, very often a woman's social position and relation is defined in terms of the work that she performs. One extremely curious example of this fact could be the case of Denganmal village of Maharashtra. The village suffers from drought like situation every year and owing to its hilly terrain and scarcity of water sources. A woman requires a lot of time and energy to fetch water, often leaving little time for other responsibilities. As a solution to this problem, many males in the village had married multiple times even though polygamy is illegal by Hindu law. These women are referred as '*paani bais*' or water wives and their primary responsibility is to fetch water.^{vi} The case of Denganmal is very unique and rare but at the same time it indicates the relationship between woman's work and her social roles which is related and reflected in each society in more subtle terms.

The disparity does not end at the level of work but rather is reflected more strongly with respect to wages. The phenomenon is referred to as the 'gender pay gap'. Even though it exists in almost every economy across the world, in certain countries like India, the gap is even wider. As per a survey conducted in 2019, women are estimated to

^{vi} Reported in 2015-16 in CNN, Indiatoday and such..

be earning 19% less than men.^{vii} A state wise analysis reveals that the women are in certain states of India women's earnings as compared to men are less than 50%. As per the Gender Gap Index in 2020, it will take close to hundred years for our country to bridge this gap. According to a detailed report published by American Association of University Women (AAUW) there are three broad areas in which the reasons for the gender pay gap can be divided. These are occupational segregation, motherhood penalty and the direct gender and race discrimination and bias. In other words, the segregation of jobs with reference to their suitability for women, the perception of women as the primary caregiver in the family setting and the overall existing discrimination against women together contribute towards this existing gap.

Many of us would have wanted to believe that all these arguments and statistics regarding the existing inequalities with respect to women and their position in relation to work and wages are only about the past and things have changed for good in the modern world. However, the recent pandemic has brought before us the bare truth and has also shown that the inequalities exist at a deeper level whereas most of the corrective measures only address the issues at the surface. There are several studies that have been conducted in India as well as

abroad that clearly show that the gender pay gap has become wider as a result of the pandemic, that is to suggest that women have more strongly been affected by the adverse conditions created by the pandemic.

If one tries to locate the reasons for it, one realizes that the nature of works that women were employed in were the first that were hit by the outbreak of the virus. Housemaids, cooks, nannies, caregivers at day care centres and nursery and primary teachers were almost out of their jobs instantly. In several companies, reduction in workforce for the purpose of cost cutting often meant laying off female employees first. While many women, especially, with young children, were forced to quit jobs as the added responsibility of household chores in the absence of any help was taking a toll on them. A study conducted by the UNCTAD (United Nations Conference on Trade and Development) confirms that the "...early measures to curb the spread of the virus first hit jobs predominantly held by women, such as personal services. At the outset of the pandemic, a higher prevalence of the virus correlated with a higher rate of female unemployment."^{viii} At a later stage, the male unemployment rate was higher; however the women's labour force participation fell much greater. Many women were not included in the statistics on unemployment as they were no more looking for jobs.

^{vii} Monster Salary Index March 2019

^{viii} UNCTAD 8TH APRIL2021, Simonetta Zarrilli

If one tries to locate the reasons for such behaviour, it again takes us back to the notions of how 'work' has meant different things for men and women. It had been a challenge for several women to argue for their right to go out of the domestic sphere and work in the more organised sectors. After suffering a job loss during the pandemic they realised that they did not have the courage to put up a fight for their rights all over again. Some other women realised that even after putting up equal efforts at their respective workplace, the household chores continued to be their sole responsibility and the pandemic offered them a moment of introspection about whether this doubled work pressure is really worth its effort. For many women, the past experiences of strong discrimination at workplace proved to be a deterrent in seeking re-employment.

All of this is an indicator to how, even in the present world, work has meant different things for men and women. Any policy that aims at ensuring social justice, therefore needs to address the specific challenges faced by women at the same time ensuring that a gender based understanding of work and labour is done away with. It is indeed a welcome change in shaping perceptions that a married woman who isn't employed is referred as a home-maker rather than a housewife or a non-working woman. However, the need of the hour is stronger policy measures that ensure

greater women participation in jobs that have still been dominated by men as well as more equitable distribution of household responsibilities. Appropriate Provisions should be more strictly provided by employers to assist women in the maternity and nursing phase. An important policy change towards breaking the gender bias could be, for example, the provision of child care leaves to all fathers, and not just mothers and those fathers who are single parents that is provided as per the existing norms. The present regulation is a reflection of the popular perception that caring for a child is a woman's responsibility unless it is the case of single male parent. What needs to be grasped here is that unlike gestation, birthing and nursing; care giving at the times of sickness, examinations or other such occasions is not a biologically determined role.

Just as history remains incomplete till it includes her part of the story, similarly social justice will remain a farfetched dream till it is defined in gender inclusive terms. Economic, social and political development of a society is not possible when one half of the population is still tied to the age old definitions of the 'ideal' to be read as the ideal daughter, ideal wife, ideal mother and so on with respect to their work, capabilities and rights.

Dr. Shilpi Srivastava

Assistant Professor

Department of Philosophy

Atmospheric Touch Screen in Display: Healthcare future is here

Abstract:

Holographic three-dimensional (3D) displays can reconstruct a whole wave front of a 3D scene of a desktop screen and provide rich depth information for the human eyes. Interactive Hologram of computer interface may work as floating display screen in air. This paper's goal is to provide an architecture and technique for using hologram fan or Microsoft HoloLens with 3D geographic data. The stages are used in the design of the architecture to create holographic 3D, the production of a 3D asset, the development of holo3D GIS, and the compiler's installation of the Holo3D GIS system. This alteration impacts traditional vision, body sense of touch, and interaction different modalities. This technology is completely changing the healthcare industry.

Introduction:

Computer-generated holographic techniques offer an efficient way for reconstructing holograms without recording systems. Holograms are virtual image made from light which shows the data in a new way. We can dip into a world of 3D data visualization. The world of data will be our fingertips. This is mind blowing technology in breaking the 2D screen. This directly impacts the way that 3D information is expressed and also has an impact on the

user's cognitive processes and comprehension of 3D information. Three dimensions of reality are available through popular devices called virtual reality (VR), augmented reality (AR), and mixed reality (MR) headsets. While elevating the user's sense of realism. The differences between VR, AR, and MR are apparent. Virtual reality largely immerses the user in a virtual environment while separating the actual world from augmented reality. Through the overlay of real-time digital content, augmented reality (AR) presents the user with the real environment. Conversely, augmented reality only superimposes virtual objects on the actual world. Effective management is impossible due to the complexity of the link between virtual and physical assets. Efficient management of the interaction between virtual and actual items is a prerequisite for the system to enable mixed reality. Benefits from AR and VR are integrated into MR. It effectively and symbiotically blends virtual and real worlds. Real-time virtualization of the physical world is achieved through mixed reality (MR). Consequently, it has the ability to see data from both real-world and virtual environments. Hologram can help healthcare experts in many ways like report analysis, surgical treatment, medical training and this technology mainly help in remotes area via remote therapy. Helping trainee to improve

their skills and results. Surgeons can plan and carry out complex treatments with greater confidence and accuracy when using holograms, which can provide them a 3D representation of the patient's anatomy. Holograms, for example, can guide surgeons around certain tissue features so they don't cause needless damage. In order to keep an eye on infections or fractures, holograms can also be used to view the condition of bones or organs in real time. It also helps to located tumors to or deep within critical organs, holograms can make the process safer and more accurate for medical professionals. To precisely see the location and form of a brain tumor, for instance, prior to surgery is made possible using holograms. To guarantee that just the malignant cells are targeted and to reduce side effects, holograms can also be used to guide chemotherapy or radiation therapy.

By giving students access to lifelike three-dimensional representations of human anatomy and physiology, holograms can improve medical teaching. Students can use voice instructions or gestures to interact with holograms, which can help them grasp difficult topics and increase their spatial awareness. Additionally, holograms can mimic a range of situations or states-such as trauma or cardiac arrest-those students might experience in the real world.

Three-dimensional tomographic medical data can be displayed in its entirety using multiplexed holography. The hologram

is created using photographs of the things that have been scaled photographically. Thus, the method offers a means of creating holograms with images that differ in size from the source object. A multiple-exposure composite hologram is created by creating a succession of photographic transparencies. The original item is produced by the reconstruction of the hologram at a magnification equal to the scale factor of the transparencies. Cross holograms, another name for holographic stereograms, employ multangular perspectives of the subject. The technique is broken down into three stages: obtaining data, processing images, and creating the stereogram.

In applications where surfaces are crucial, including prosthetics and craniofacial surgery, the holographic stereogram can only capture the object's horizontal parallax. Multiplexed holography, which reconstructs the picture with all the sections at the correct depths (locations) and both horizontal and vertical parallaxes, is more beneficial because most biological data, such as CT or MR scans, are typically obtained as serial scans rather than multangular views.

Holography, a technique used in ophthalmology, has been used to record a three-dimensional image of the eye, detect retinal detachments, measure corneal topography, and study surface characteristics of the nerve head and cornea. It offers ultra-high precision, allowing for measurements of the central surface and the periphery.

Holographic interferometry can also measure elastic cornea expansion, crucial for corneal surgery. Double exposure holographic interferometry has been used to examine the expansion of fresh enucleated bovine eyes, revealing each cornea has its own typical expansion. Holography has potential to investigate corneal endothelial morphology, corneal changes, crystalline lens changes, and retinal surface characteristics.

Methodology/Tools

The 3D asset is mainly composed of a third-party 3D model and dataset model, which provides resources and content to the hologram fan and Holo3D GIS system. From the simple 2D data set, a 3D data set known as a geo scene concept is created. The model generated with another modeling application is a third-party 3D model. Format converters are needed to combine multiple model formats into a common 3D model with the FBX format because the standard formats of different modeling programs are incompatible. 3D geo modeling requires the combination of attribute and integrated data from 2D geographic information. 2D model and 3D geographic scene construction is the basis for the preprocessing of 2D basic geographic data. The most common types of basic geographic data are the geo landscape model constructed by the base map 3D asset layer is the first part. This study uses the Unity 3D game engine combined with the Holo Toolkit software development kit (SDK). To create a fluid and natural

connection between users and 3D geographic data, the SDK incorporates fundamental class libraries that handle interaction design. This includes interaction, voice, gaze, and gesture design.

This Hologram Fan and Holo3D GIS are restricted relative to a high-end personal computer. By considering the performance of different processors, the HoloLens and Hologram Fan have their own computational and rendering machinery that handles the entire Holo3D GIS program, including the interaction process. The physical world and the virtual world are two components of a holographic application.

Review and Discussion

Holo3D GIS (leveraging Microsoft HoloLens in 3D geographic information) is three-dimensional geographic information systems (3D GIS) attempt to understand and express the real world from the perspective of 3D space. Currently, 3D GIS perspective carriers are mainly 2D and not 3D, which influences how 3D information is expressed and further affects understanding of 3D information. Mixed reality glasses using the HoloLens 3D holographic virtual images in air, it changed the traditional vision, body sense, and interaction modes, which enables GIS users to experience real 3D GIS. A virtual touch screen (VTS) is a user interface system that provides optical display using sensors to track a person's interaction with the object. Healthcare can benefit greatly

from holographic technology, but there are drawbacks as well. The price is one of them. The most basic holographic technologies require expensive hardware and software, making them unaffordable for regular medical centers. Quality presents another difficulty. In certain applications, holograms might not provide a significant benefit because experts have gotten very proficient at reading 2D images and manipulating 3D representations on a flat screen. Furthermore, holograms could not be entirely stable or lifelike yet, which could have an impact on their accuracy or usefulness. Holographic interferometric methods have been successfully used to examine several human bodily components, such as the cornea, the movement of teeth, the tympanic membrane, the basilar membrane, the cochlea, the temporal bone, the incudomalleolar joint, the chest, the skull, among others. The natural cavities that house the human internal organs can be measured nondestructively and with high resolution using endoscopic holography, which is a potent instrument. Real time observation of living biological specimens has showed potential with X-ray holography.

Conclusion

The interactive holographic touch screen is scope of future 3D display technology, due to lack of knowledge of the technical criteria to support effective and interactive 3D viewing atmospheric desktop touch screen. We have at least moved on

from dark rooms of 2D display to more favorable atmospheric environments display. It is possible when atmospheric touch screen will be displayed in the future their impact will be dominated and the experience of viewing atmospheric desktop touch screen will be valued. Hopefully, the discussion I have presented in this paper will hope for future in creating air desktop touch screen in holograms display and designing exhibitions and will advance a dialog to remedy by designing more precise technology and its interactive air display. In the meantime, we may only be seeing part of what is really there. Even while holographic technology is still developing, there is already a lot of promise for the medical field. Holographic technology has the potential to revolutionize medical communication and collaboration by giving doctors access to a comprehensive lexicon of an illness or malfunction without the need for spoken explanation, hence preventing misunderstandings. Better patient satisfaction and overall health could result from this, as well as better diagnosis, treatment, and prevention of a variety of health issues.

Citation

1. Holo3DGIS: Leveraging Microsoft HoloLens in 3D Geographic Information Wei Wang, Xingxing Wu, Guanchen Chen, Zeqiang Chen ISPRS International Journal of Geo-Information. 2018;7(2):60 DOI

- 10.3390/ijgi7020060
2. https://en.wikipedia.org/wiki/Virtual_touch_screen
3. The Hologram: Principles and Techniques Martin J. Richardson and John D. Wiltshire
4. https://nlist.inflibnet.ac.in/search/Search2Record/10.1088_1361-6528_abf775
5. https://en.wikipedia.org/wiki/Software_development_kit
6. [https://www.usgs.gov/faqs/whatdigital-elevationmodel#:~:text=A%20Digital%20Elevation%20Model%20\(DEM\)%20is%20a%20representation%20of%20the,derived%20primarily%20from%20topographic%20maps](https://www.usgs.gov/faqs/whatdigital-elevationmodel#:~:text=A%20Digital%20Elevation%20Model%20(DEM)%20is%20a%20representation%20of%20the,derived%20primarily%20from%20topographic%20maps)
7. Moving from Virtual Reality Exposure-Based Therapy to Augmented Reality Exposure-Based Therapy: A Review Oliver Baus¹ and Stéphane Bouchard^{1,2,*}
8. Holography applications toward medical field: An overview Abid Haleem , Mohd Javaid , Ibrahim Haleem Khan
9. Nazir, A., Hussain, A., Singh, M. et al. Deep learning in medicine: advancing healthcare with intelligent solutions and the future of holography imaging in early diagnosis.
10. Virtual Simulation in Enhancing Procedural Training for Fluoroscopy-guided Lumbar Puncture: A Pilot Study Author links open overlay panel Saad Ali MD, Monther Qandeel MD, Rishi Ramakrishna MD, Carina W. Yang MD
11. Holography In Biomedical Sciences. G. von Bally

Sumant Kumar Vishwakarma

B.Sc (Prog.) Life Sciences , UG Student
Deshbandhu College (University of Delhi)
Kalkaji, New Delhi - 110019
Email:- sumant.jnv.uk@gmail.com

Just a TREE?

When we talk about the most precious or the most important thing on this entire universe we generally go for the most valuable or the most benefiting things that gives us profit or something that generates value.

But are they really the most important or the most precious thing on this universe, are they seriously giving us benefits and that at no cost or at a very little cost? My side of answer will be "NO" how can we say some building or some piece of object is important just because it is giving us some kind of joy and that joy lasts for some hours or some years at most. But there is something that is the most of scarce and the most important and most benefiting thing on this universe that is a "TREE" yes "JUST A TREE"

I know many will think yes it gives us oxygen or raw materials for some industries or life for some animals, when there are many trees together forming a forest but is this really all a tree gives us? Is this all we are receiving from it, just some 'oxygen' or 'raw material'. Let's think about this thing again from a bigger point of view.

We give "Diamonds" or other jewels more value than trees, why? Just because you can't wear a tree and show off in front of thousands of people or it doesn't increase your social standing or your financial image

in the society? But are those objects giving us even the half of what trees are giving us? Not to mention with a little cost and some just grow naturally they are giving us so much yet we give them nothing, not even a little thought, are we just selfish or we don't care because there are too many trees according to us? Most of the time we don't even stop and look around and witness how much of beauty these trees are adding in our life and in our environment, how much they are giving to all the living organisms.

I can point a lot of things the trees give us but, can I point even 10 things we give them? I would still say a "NO"

Trees are so rare and special that maybe we don't even know how to appreciate them or how to even acknowledge the fact that they are selflessly giving us a lot and gaining nothing from it, maybe they gain a little satisfaction as they see us enjoying our lives while ignoring all the effort, they make to make us live one.

With the technological advancement we are somewhat forgetting how precious those simple things like trees are how they have been there with us and without us while there was no human on this planet Earth. Trees were a really big source of help to all the living beings specially humans as most of our needs were fulfilled from the resources that we got from it. Be it a source

of food, shelter, a spot of rest, a place for hiding and hunting the prey, or be it the source of entertainment or a source of recreation we are receiving so much from it from a thousands of years ago but when it comes to do something even a little for it we hesitate and give an excuse that I am busy with my life and work I have more important things to do. Like seriously? What can be more important than appreciating and showing some care to something that is a source of everything and has been a source of everything to you, your ancestors and your upcoming generations. Oxygen is the only thing we count as a gift from trees but is this the only thing we get from them?

Well, I have been talking about how a tree gives so much right let's see what they actually give us -

1st we will see what we get from a tree from their entire life time and then we will 2ndly see what they even contribute after their death.

1st

1. Trees are essential for the health of our planet contributing significantly to the environment, biodiversity, and humans.

- **AIR QUALITY IMPROVEMENT**

- **Oxygen Production** - A mature tree produces enough oxygen for approximately 2 human beings "each

year" For instance, one acre of mature forest can generate enough oxygen for 18 people annually.

- **Pollutant Filtration** - Trees filter harmful pollutants from the air, including sulphur dioxide, ammonia, and nitrogen oxides. They also trap dust and particulates in their leaves and bark improving urban air quality.
- **Carbon Dioxide Absorption** - Trees absorb about 22kg (48 pounds) of CO₂ per year. Collectively a forest can sequester over a million kilograms (2.4 million pounds) of CO₂ annually, significantly mitigating climate change impacts.

- **BIODIVERSITY SUPPORT**

- **Habitat Provision:** Trees provide a vast array of wildlife. For example, Oak trees can support up to 280 species of insects, which in turn serves as a food source for animals and birds.
- **Food Source:** Trees produce fruits, nuts, leaves, and flowers that serve as a food for numerous species including mammals, birds, and insects. This diversity supports complex food webs in ecosystems.
- **Ecosystem Stability:** The presence of diverse tree species enhances ecosystem resilience by supporting a variety of organism that contribute to nutrient cycling and soil health.

- **CLIMATE REGULATION**

- **Temperature Moderation:** Trees provide shade and cool the air through transpiration. In urban areas, this can reduce temperature by 9 degrees Celsius (16 degrees Fahrenheit), mitigating the urban heat island effect.
- **Climate Adaption:** Trees help buffer extreme weather events by absorbing rainfall and reducing flood risks. They play a role in maintaining local climate condition that support diverse ecosystems.

2nd

CONTRIBUTION AFTER DEATH

- **Nutrient Cycling:** Dead trees are vital for nutrient cycling as they decompose and return nutrients to the soil. They also provide habitats for various species during their decay process.
- **Habitat Creation:** Fallen logs create habitats for insects and small mammals while also supporting fungi that contributes to soil health and regeneration processes.
- **Carbon Storage:** Even after trees die, they continue to store carbon in their biomass for years as they decompose slowly, contributing to long-term carbon storage in ecosystem.

While there are even more things that trees do and contributes for the life of others what can we do for them? Are they asking for something really great that we can't give? No again, they are asking for nothing but just a little care and a little affection towards them. Now question is how do we show our affection we can just show it by watering them sometimes we don't cut them for some idiotic reasons, or we can plant more and increase their numbers so that like how we enjoy the company of our friends they also enjoy company of their friends.¹

We are given a great gift in the form of trees it's now our role to preserve them and plant more so that in future they can help us more and the planet Earth really shows why it's called "THE GREEN PLANET"

So far as I know there are no other planets found with trees so we are lucky to have something that no one else have trees are a sign of uniqueness for Earthlings we are the only civilisation so far that enjoys the benefits and beauty of a tree so let's enjoy it more by preserving them and planting new one so that they will grow up like other big trees and can see a very positive and beautiful side of humans too.

Ayushman Rai

BA (Pro.)

Deshbandhu College

¹ References:- www.mpcb.gov.in, www.seedformation.co.uk, www.cabronbrief.org, www.savatree.com, www.thewildlifeneeds.com

Finding Peace in the Fields: My Experience of Living in Punjab

"ਗੁਰੂ ਨੂੰ ਸਕੂਨ, ਤੇ ਦਿਲ ਨੂੰ ਅਰਾਮ... ਇਹ ਪੰਜਾਬ ਹੈ ਜਨਾਬ, ਇੱਥੇ ਜਿੰਦਗੀ ਕਰਦੀ ਹੈ ਹਰ ਪਲ ਸਲਾਮ!"

(Peace to the soul, and comfort to the heart... This is Punjab, sir, where life greets you every moment.)

Growing up and living in Punjab has been an experience that I often find difficult to fully put into words often fail to capture completely. It is not just a place; it is a feeling—warm, vibrant, and deeply comforting. I have spent a significant part of my life here, I have come to realize how living in Punjab has shaped my perspective on happiness, peace, and what truly matters in life. When I compare this experience to the fast-paced, often overwhelming life of a city like Delhi, the contrast becomes even more evident.

Punjab wakes up differently. Mornings here are not rushed. They begin with the soft golden light spreading across endless fields, the sound of birds chirping, and the calm rhythm of life slowly unfolding. There's no blaring of horns, no immediate stress of deadlines, and no suffocating crowds. Instead, there is space—space to breathe, to think, and to simply exist. This calmness is something I have grown to cherish deeply.

My life in Punjab moves at a gentler pace, and that, in itself, is its greatest blessing. People here are not constantly

chasing time. Conversations are longer, laughter is louder, and relationships feel more genuine. Whether it is sharing a cup of tea with neighbours or gathering with family for meals, there is a sense of belonging that is hard to find elsewhere. In contrast, life in Delhi often feels like a race—everyone is busy, always in a hurry, and somehow, even in a crowd of millions, loneliness can quietly creep in.

One of the most beautiful aspects of Punjab is its people. The warmth and hospitality here are unmatched. Guests are treated like family, and generosity flows naturally. I have seen strangers welcomed into homes with open arms, offered food, comfort, and kindness without a second thought. This spirit of "giving" creates an environment where happiness multiplies. In Delhi, while opportunities are abundant, the connections often feel more transactional. People are polite, but the depth of warmth is something I have found more consistently in Punjab.

Food, of course, is another integral part of life here. It is not just about eating; it is

about sharing, celebrating, and enjoying together. The simplicity and richness of homemade meals, prepared with love, add a unique flavour to everyday life. Meals are rarely rushed. They are moments of togetherness, where stories are exchanged and laughter fills the room. In Delhi, while there is an incredible variety of cuisines, the experience often feels hurried—grab a bite, move on, repeat.

What truly sets Punjab apart is the connection to nature. Of course, the vast green fields, the open skies, and the fresh air create a sense of peace that is difficult to describe. There is a grounding effect in being surrounded by nature—it reminds you to slow down and appreciate the little things. In Delhi, the concrete jungle often takes over. Pollution, traffic, and noise become part of daily life, making it harder to find moments of quiet reflection.

Talking about Festivals in Punjab are another experience altogether. They are celebrated with unmatched enthusiasm and joy. Whether it is the vibrant dances, the music, or the sense of community, everything feels alive. Celebrations are not limited to families; they extend to entire neighbourhood. I had celebrated Lohri and Hola Mohalla with my friends. There is a shared happiness that brings people closer. While Delhi also celebrates festivals grandly, the experience can sometimes feel commercialized, lacking the same intimate warmth.

For anyone who has never visited Punjab, I would strongly recommend experiencing it at least once in your life. It is not just about seeing a new place; it is about feeling a different way of life. There are so many beautiful and culturally rich places that showcase the true essence of Punjab. Amritsar is undoubtedly one of the most iconic cities, home to the Golden Temple, which radiates peace and spirituality. The experience of sitting by the holy Sarovar and listening to the soothing prayers is something that stays with you forever. The Wagah Border ceremony is another unique attraction that fills you with a sense of patriotism and excitement. Whereas Chandigarh, the capital city, offers a different perspective of Punjab with its well-planned architecture, clean roads, and serene environment. The Rock Garden and Sukhna Lake are perfect places to relax and appreciate creativity and nature.

For those who want to experience rural Punjab, visiting villages is a must. The simplicity of village life, the warmth of the people, and the beauty of the fields create memories that cannot be replaced by any city experience. Places like Patiala also offer a glimpse into Punjab's royal heritage, with its palaces, traditional attire, and rich cultural history.

Anandpur Sahib is another significant place, especially for those interested in history and spirituality. It holds immense importance and offers a peaceful

environment for reflection and learning.

However, this is not to say that Delhi has nothing to offer. It is a city of dreams, opportunities, and diversity. It teaches independence, resilience, and ambition. But at the same time, it often demands a price—peace of mind. Punjab, on the other hand, may seem quieter and simpler, but it offers something invaluable: contentment. Living here has taught me that happiness does not always come from achieving more; sometimes, it comes from appreciating what you already have. It is in the slow walks through fields, the heartfelt conversations, the shared meals, and the genuine smiles. It is in the ability to pause and truly live in the moment.

For anyone who has only experienced life in big cities, I strongly believe that visiting Punjab at least once is essential. It offers a perspective that is both refreshing and transformative. It allows you to step away from the chaos and reconnect with what truly matters—peace, happiness, and human connection. I believe everyone should

visit Punjab at least once in their lifetime. Not just as tourists, but as observers of a different way of life. Come here to experience the calm mornings, the warm-hearted people, the soulful food, and the unmatched simplicity. Come here to disconnect from the chaos and reconnect with yourself. Punjab has a way of embracing you, of making you feel at home even if you are miles away from where you belong. It teaches you that life does not always have to be rushed, that joy can be found in simplicity, and that peace is not something you have to search for—it can exist right where you are, if you allow it.

If you are seeking a break from the noise and stress of urban life, Punjab welcomes you with open arms. Come and witness its beauty, feel its calmness, and immerse yourself in its vibrant yet peaceful way of life. You may arrive as a visitor, but you will leave with a piece of Punjab in your heart. For me, Punjab is not just a place I live in; it is a place that lives within me. And once you experience it, I am certain it will stay with you too.

"ਜਿਹੜਾ ਪੰਜਾਬ'ਚ ਰਹਿ ਲਿਆ, ਉਹ ਫੇਰ ਦੁਨੀਆ'ਚ ਕਿਤੇ ਵੀ ਰਹਿ ਸਕਦਾ। ਇੱਥੋਂ ਦੇ ਰੰਗ, ਢੰਗ ਤੇ ਗੱਲਾਂ'ਚ ਹੀ ਕੁਝ ਅੱਡਰਾ ਸਵਾਦ ਹੈ।"

(Whoever has lived in Punjab can live anywhere in the world. There is a unique flavour in the colours, methods, and conversations here.)

Anjali Patel

BA Program (History + English) - 3rd Year
GE - Hindi (Sem 6)

Annual Report for 2025-26

Name of Cell / Society: National Cadet Corps

About the Cell / Society: Deshbandhu College NCC stands as one of the most integrated, disciplined, and active NCC units of Delhi University, consistently demonstrating excellence in both training and social responsibility. The cadets actively participate in a wide range of unit-allotted SSCD activities, contributing meaningfully to community development, awareness drives, and nation-building initiatives within the college premises and beyond. The unit celebrates NCC Day with great enthusiasm, showcasing unity, patriotism, and the spirit of service through parades, cultural events, and outreach programs. Adding to its achievements, the Deshbandhu College NCC has proudly secured the prestigious Achievers Award, reflecting the dedication and outstanding performance of its cadets. Furthermore, the successful organization of the Annual NCC Fest "DESH'25" highlights the unit's leadership, coordination, and commitment to excellence, making it a benchmark for NCC activities across the university.

Events Organized in 25-26:

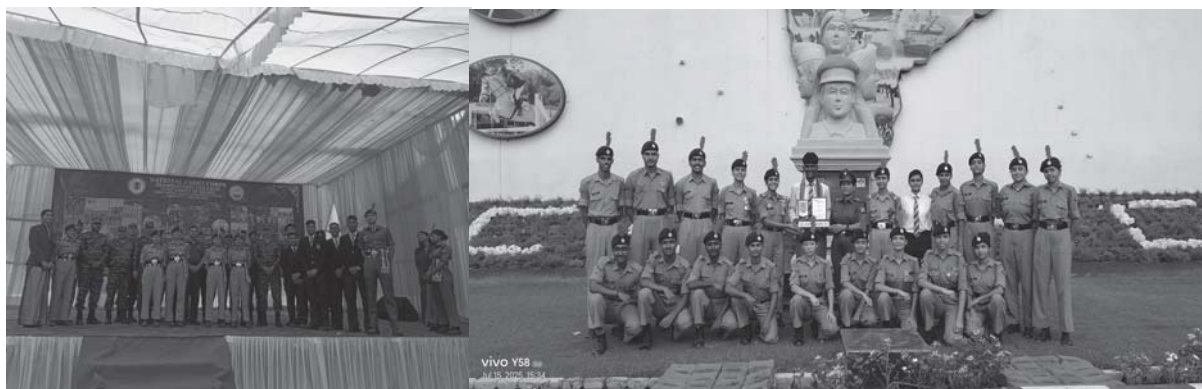
Independence day'25

78th NCC Day'25

Republic day'26

DESH'26

Photograph:



Prof. Lt. Sushila Singhal - NCC

Two Brothers

.....

There were two brothers; the older one was always mean to the younger one. The brothers would chop firewood in the forest and sell it in the market. One day, they both stumbled across a magical tree. The older brother again dominated and sent the younger one away. Seeing this The tree asked him not to cut him down and promised him golden apples in exchange. The older brother felt disappointed with the number of apples he received. He decided to cut down the tree anyway, but the tree showered him with hundreds of needles. The boy was left lying on the forest ground in pain. His younger brother finally found him and carefully took out every needle. This showed the older brother that how much his younger brother cared for him. The older brother finally apologised for treating his brother badly. The magical tree saw this exchange and felt the boy deserved a chance. So It decided to give them more golden apples. Then they decided to sell the apples in the market which provided them with money. A neighbor of the brothers also saw this and found the magical tree and decided to cut it down but eventually he also got needles as a reward to his greed.

Moulik Pandey
Bot (Hons)

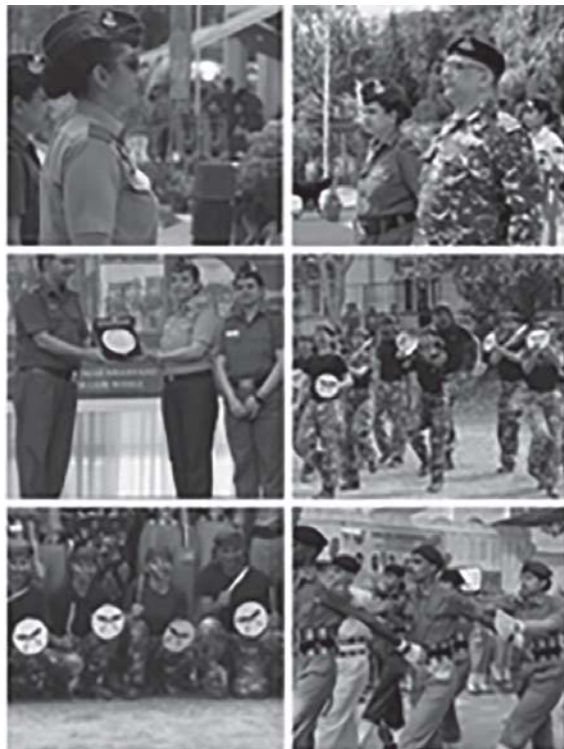
One, two, three and so on
the scars starts to fade upon
with no one to experience the same
I wait for them even when I'm in vain
no soothing words to calm the storm raging
within
Why these lines look so marred and thin?
not a single person to be my guide
As i once again let it slide Four, five, six
and so on As I carve the pain
But why do I feel like I'm chained?
Lines that says a story untold story of a
coward with the urge to be controlled
In the silence where the secrets arises
With those secrets in a disguise
Seven, eight, nine and so on
No hands to catch the tears as they fall
No one sees the darkness devouring my
soul
No one hears the silent screams of their
own
No efforts to break the suffocating walls
The scars linger and speak about the battles
and wars untold

Vanshika
Chemistry Honours

NCC Air Wing (2 DGAS) Report 2025-2026

Associate NCC Officer:

Flying Officer Deepti Goel, Assistant Professor in the Department of Physics at Deshbandhu College, serves with distinction as the Associate NCC Officer for the Senior Wing (Air Wing - Girls). She demonstrated exemplary leadership and exceptional organisational acumen, serving as Contingent Commander for DELHI DTE at the All India Vayu Sainik Camp (AIVSC) 2025, held at Yehlanka, Bangalore. Under her guidance, all activities of the Girl Air Wing cadets were conducted with remarkable efficiency and discipline. Through her dedicated mentorship, she continues to inspire and shape future leaders, instilling values of integrity, responsibility, and ethical leadership.



NCC Girls Air Wing Achievements~

Rank Panel - NCC Air Wing (Senior Wing), 2025

Earning a rank in the NCC is not merely an achievement but a testament to dedication, perseverance, and leadership. The new beginning rank holders of Deshbandhu College embody responsibility, discipline, and the spirit of mentorship, constantly guiding and inspiring their juniors.

CSUO Nancy Bansal - Known for her exceptional ability to lead and simplify challenging situations

CUO Sabhayata Yadav - A source of inspiration for the entire NCC community

CWO Sonam - Disciplined, determined, and resilient

Cadet Sergeant Prerna - Resourceful and supportive

Cadet Sergeant Divya Dhankar - Motivated and inspiring

ANNUAL NCC DESH FEST

The Ground. The Grit. The Glory.

The uniform does more than define appearance—it shapes character. At DESH FEST' 25, the NCC Air Wing upheld not just an event, but a legacy of excellence. As a distinguished unit under the Delhi Directorate, Deshbandhu College continues to set benchmarks through discipline and commitment.

Behind every precise salute and synchronised movement lay hour of rigorous training, perseverance, and unwavering dedication. The cadets demonstrated that discipline is not merely displayed—it is lived. From the first roll call to the final ceremony, standards were maintained with consistency and pride.

Beyond drills and formalities, the fest fostered camaraderie, mutual support, and a shared sense of purpose. The spirit of "Jai Hind" resonated not just as a slogan, but as

a deeply felt commitment that endures beyond the uniform.

● ***Donation Drive***

Demonstrating a strong sense of social responsibility, cadets organised a donation drive to distribute blankets to underprivileged individuals in Kalkaji, Nehru Place, Nehru Enclave, and AIIMS. This initiative reflected their compassion and commitment to community service.

● ***Emotional Wellness Workshop***

Showcasing a commitment to holistic development and mental well-being, the cadets participated in an Emotional Wellness Workshop conducted in partnership with the SleepWell Foundation. The session focused on stress management, emotional resilience, and the importance of maintaining a balanced lifestyle. Through interactive discussions and guided activities, cadets gained valuable insights into self-awareness and mental health practices. This initiative highlighted their dedication not only to physical discipline but also to nurturing a healthy and resilient mindset.

Camps and Events

Senior Wing cadets consistently exemplified discipline, dedication, and perseverance through their participation in various prestigious camps and events:

Flight Cadet Priyanka completed the

ABVIMAS Manali Camp (7th-16th April 2025), gaining resilience, adaptability, and enhanced self-confidence through physically and mentally demanding activities.

Flight Cadet Shivangi participated in the White-Water Rafting Camp at NIMAS, Arunachal Pradesh, which strengthened her courage, resilience, and leadership under pressure.

Cadet Warrant Officer Sonam attended the SNIC Meghalaya Camp, where she had the honour of leading the Guard of Honour as commander, showcasing exemplary leadership and discipline.

Cadet Sergeant Divya represented the college at the Chief Minister's Rally held on 15th August 2025 at Chhatrasal Stadium, New Delhi, marching alongside the Delhi Police with exemplary precision and discipline.

Flight Cadet Asma participated in the EBSB Camp - Delhi 2025, actively engaging in cultural exchange programmes and activities promoting national integration.

Flight Cadets Prerna, Sarika, Kashish, Netra, and Manasvi participated in the Independence Day Camp (31st July-15th August 2025). The camp culminated in the Flag Hoisting Ceremony, where they witnessed the Hon'ble Prime Minister's address, marking a moment of pride and inspiration.



Key Highlights

- First Ever SW Rank Panel
- SNIC Meghalaya
- WWR NIMAS
- ABVIMAS Manali
- CMR
- EBSB Delhi
- IDC
- ADJ Visit
- Donation Drive
- Emotional Wellness Workshop



Submitted by-
Flying Officer Deepti Goel
Associate NCC Officer
NCC Air Wing
(Senior Wing)

देश
2025-26

संस्कृत-अनुभागः

संपादिका : डॉ. सनेहलता पवार
छात्र संपादक : बालमुकुंदसिंहः

विषय सूची

रसविषयकं विस्तृतं विवेचनं	- बालमुकुंदसिंहः	60-69
अभिनय (अभिनय)	- ध्रुवी गोएल	70-74

रसविषयकं विस्तृतं विवेचनं

रसविषयकं विस्तृतं विवेचनं सर्वप्रथमं भरतमुनेः 'नाट्यशास्त्रम्' इति ग्रन्थे समुपलभ्यते। संस्कृतकाव्यशास्त्रपरम्परायां काव्यास्वादः एव 'रसः' इति निगदितः। स च रसः 'लोकोत्तरचमत्कारप्राणः' तथा 'ब्रह्मानन्दसहोदरः' इत्यपि अभिधीयते। अनेन प्रकारेण वक्तुं शक्यते यत् काव्यपठनेन नाटकदर्शनेन च प्राप्यमाणः आनन्दः न हि सामान्यः, अपि तु तत्र काचित् अलौकिकता विद्यते। अयं लौकिकप्रमाणानां विषयो भवितुं नार्हति, न वा वचसा वर्णयितुं बोधयितुं वा शक्यते। वस्तुतस्तु रसः यस्य कस्यापि पदार्थस्य सारतत्त्वमेव, परन्तु साहित्यस्य रसः तस्य सौन्दर्यम् आनन्दं च उभयमपि द्योतयति। रससम्प्रदायं सर्वोपरि मन्यमानाः संस्कृताचार्याः तु काव्ये रसस्य महत्त्वं सर्वोत्कृष्टं वर्णयन्त्येव, किञ्च अन्यसम्प्रदायानां प्रवर्तकाः समर्थकाः चापि रसस्य महत्त्वं नैव अपलपन्ति।

भरतमुनिना 'रसः' इति यत् नामकरणं कृतं, तस्य मूलहेतौ तदीयं 'आस्वादयत्वम्' एव वर्तते। तेनोक्तं यत् यथा नानाव्यञ्जनैः संस्कृतम् (परिष्कृतम्) अन्नं भुञ्जानाः पुरुषाः रसान् आस्वादयन्ति हर्षादींश्च प्राप्नुवन्ति, तथैव नानाविधभावैः अभिनयैश्च व्यञ्जितान् वाचिकाङ्गिकसात्त्विकाभिनयोपेतान् स्थायिभावान् सहृदयाः प्रेक्षकाः आस्वादयन्ति हर्षादींश्चाधिगच्छन्ति। भोजनस्य स्वादस्तु रसनया (जिह्वया) गृह्यते, काव्यास्वादस्तु सहृदयस्य चेतसा अनुभूयते। यद्यपि काव्यास्वादप्रक्रियां सम्यग् अवगन्तुम् आचार्यरामचन्द्रशुक्लस्य बहुसन्दर्भिता व्याख्या सर्वथा अवधेया भवति— "यथा आत्मनः मुक्तावस्था ज्ञानदशा इति निगद्यते, तथैव हृदयस्य मुक्तावस्था रसदशा इति अभिधीयते।"

रसनिष्पत्तेः आशयः प्रक्रिया च

भरतमुनेः 'विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः' इति सूत्रस्यायमर्थो यत् विभाव-अनुभाव-व्यभिचारिभावानां संयोगादेव रसनिष्पत्तिर्भवति। तन्मते रसो हि नाटकस्य नितान्तं महत्त्वपूर्णं तत्त्वं वर्तते, यतो हि रसमन्तरेण नाटकस्य न कोऽप्यर्थः प्रवर्तते, न विभावादीनामस्तित्वं सिद्ध्यति, न वा ते बोधगम्या भवितुमर्हन्ति। इममेव विषयं सोदाहरणं स्पष्टयन् स कथयति यत् यथा नानाव्यञ्जनौषधिद्रव्याणां संयोगाद् भोज्यरसस्य निष्पत्तिर्भवति, तथैव नानाभावानां संयोगात् नाट्यरसस्य निष्पत्तिर्जायते। यथा च

गुडादिभिर्द्रव्यैर्व्यञ्जनैरौषधिभिश्च षाडवादयो रसा निर्वर्त्यन्ते, एवमेवानेकैर्भावैः सह मिलित्वा स्थायिभावा अपि रसत्वमाप्नुवन्ति।

अत्रेदं विचारणीयं यत् रसनिष्पत्तिः कुत्र भवति—किं कवौ, कविनिबद्धपात्रेषु, अभिनयकर्तरि नटे, उत सहृदये वा। रसनिष्पत्तेः व्याख्याकारैराचार्यैः अस्मिन् विषये विमर्शः कृतः, एतेषु च कस्मिंश्चिदेके रसनिष्पत्तिर्भवतीति निरूपितम्। भरतमुनेरस्य सूत्रस्य 'संयोगः' 'निष्पत्तिः' चेति द्वौ बीजशब्दौ स्तः।

भरतमुनिना प्रयुक्तयोः एतयोः शब्दयोः वास्तविकमर्थम् अवगन्तुं विविधैः विद्वद्भिः प्रयासाः विहिताः। एतेषां विदुषां सिद्धान्ताः व्याख्यानानि च वस्तुतः 'विभावानुभावव्यभिचारिभावानां संयोगात् जायमाना रसनिष्पत्तिः का अस्ति, सा कथं भवति, तथा च कस्मिन् आश्रये भवति' इत्यस्यैव तत्त्वानुसन्धानं वर्तते।

भट्टलोल्लतस्य उत्पत्तिसिद्धान्तः

भरतमुनिकृतस्य रससूत्रस्य आद्यः व्याख्याता भट्टलोल्लटः वर्तते। अभिनवगुप्ताचार्यः स्वकीये 'अभिनवभारती' नामके ग्रन्थे तत्प्रतिपादितं मतम् उद्धरति। भट्टलोल्लटमतेन रससूत्रे 'संयोग'पदस्य अर्थः सम्बन्धः तथा च 'निष्पत्ति'पदस्य अर्थः उत्पत्तिः विद्यते। अस्य मतानुसारं रसस्य उत्पत्तिः मूलपात्रे भवति। विभावादिभिः सह पात्रगतस्य स्थायिभावस्य संयोगे सति सः पात्रगतः स्थायिभावः परिपुष्टो भवति। अयमुपचितः (परिपुष्टः) स्थायिभाव एव रसः। 'उपचितः' स्थायिभावो रसः, 'अनुपचितः' च स्थायिभावो रसाद् भिन्नः केवलं 'स्थायिभावः' इत्यभिधीयते। अतः स्थायिभावरसयोः भेदकतत्त्वम् 'उपचितिः' एवास्ति। रसो वस्तुतो रामादिष्वनुकार्यपात्रेष्वेवावतिष्ठते, अनुसन्धानबलाच्च स नटे प्रतीयते। एतदित्थं बोद्धुं शक्यते यत् अभिनयं कुर्वन् नटः रामस्य वेषभूषां धृत्वा (यद्वयं सामान्यव्यवहारे 'रामः संजातः' इति वदामः) रङ्गमञ्चे प्रविशति। दर्शकस्तु रङ्गमञ्चे उपस्थिते तस्मिन् नटे रामत्वस्य आरोपं करोति, अर्थात् तमेव रामं मनुते। इयमेव मान्यता प्रतीतिर्वा दर्शकस्य रसास्वादस्य माध्यमं सञ्जायते।

- भट्टलोल्लटमतानुसारं रसो मुख्यतया मूलपात्रे एवावतिष्ठते। विभावस्य स्थायिभावेन सह संयोगात् रसनिष्पत्तिर्जायते। अत एव विभावस्थायिभावयोर्मध्ये उत्पाद्योत्पादकसम्बन्धो वर्तते, अर्थात् विभाव उत्पादको रसश्च उत्पाद्यो भवति।

- व्यभिचारिभिः सञ्चारिभावैर्वा रसस्य पुष्टिर्भवति, अत एव व्यभिचारिभावरसयोः पोष्यपोषकभावसम्बन्धो विद्यते। अर्थात् व्यभिचारिभावाः पोषकाः भवन्ति, यस्य च पोषणं क्रियते स एव पोष्यो रसः।
- अनुभावस्थायिभावयोर्मध्ये कार्यकारणसम्बन्धो विद्यते। अनुभावरूपकारणेन स्थायिभावः रसरूपकार्ये परिणमते।

शङ्कुकस्य अनुमितिवादः

भरतमुनेः रससूत्रस्य द्वितीयो व्याख्याता आचार्यशङ्कुकः आसीत्, येन स्वव्याख्यायाम् 'अनुकृतिः', 'अनुमितिः' चेति नूतनशब्दद्वयं प्रयुक्तम्। सामान्यतस्तस्य सिद्धान्तमवगन्तुं निष्पत्तेरर्थः 'अनुमितिः' इति गृह्यते, संयोगस्य च तात्पर्यम् 'अनुमाप्यानुमापकभावः' इति मन्यते, यत्र विभावादयोऽनुमापकाः रसश्चानुमाप्यो वर्तते। सोऽपि भट्टलोल्लटवदेव रसस्य स्थितिं मूलपात्रे (अनुकार्ये) अङ्गीकरोति, नटो वा अभिनेता तस्यानुकरणं करोति। शङ्कुकस्य मते अभिनयतत्त्वस्य विशिष्टं महत्त्वं विद्यते; तस्य मतमस्ति यत् नटो मूलपात्राणि स्वाभिनयकोशलेन तथा प्रस्तौति येन दर्शकः तस्मिन्नेव मूलपात्राणाम् अनुमानं कुरुते। यत्र भट्टलोल्लटस्य सिद्धान्ते दर्शकः अभिनेतरि मूलपात्राणाम् आरोपं करोति स्म, तत्र शङ्कुकस्य मते स तस्मिन् तेषाम् अनुमानं कुरुते। शङ्कुकोऽमुम् अनुमानप्रकारं 'चित्रतुरगन्यायेन' स्पष्टीकरोति—यथा धावतोऽश्वस्य चित्रं दृष्ट्वा, तच्चित्रमेवेति जानन्नपि द्रष्टुर्बुद्धिर्जायते यदश्वो धावतीति, तथैव रङ्गमञ्चस्य समुचिते वातावरणे अभिनेतुरभिनयकोशलं दर्शकेभ्यो मूलपात्राणाम् अनुमितिङ्कारयितुं क्षमं भवति।

यद्यपि नटेन (अभिनेत्रा) मूलपात्राणाम् अनुकृतेः मूलाधारे संस्थापिताया अस्या व्याख्यायाः सन्दर्भे केचन विद्वांसः एताम् 'अनुकृतिवादः' इति अभिधातुं समीचीनं मन्यन्ते, यतो हि अनुमितिः (अनुमानं) वस्तुतः दर्शकेन भावकेन वा सम्पद्यते। अनया अनुमित्या एव स आनन्दं प्राप्नोति। अत एव अनुमितिरेव आस्वादस्य साधनं विद्यते, न तु अनुकृतिः।

शङ्कुकमते ये प्रश्नाः उत्थाप्यन्ते, तेषु अयमेव प्रमुखो यत् अनुमानमात्रेण आनन्दानुभूतिर्न सम्भवति। यदि रसोऽनुकरणरूपस्तर्हि तदनुकरणं कस्य दृष्ट्या सम्पद्यते? दर्शकस्य, नटस्य, उत विवेचकस्य दृष्ट्या? वस्तुतस्तु अनुकरणार्थं प्रमाणमपेक्ष्यते।

भट्टनायकस्य भोगवादः (भुक्तिवादः)

भरतमुनेः रसनिष्पत्तिसिद्धान्तस्य तृतीयः व्याख्याता भट्टनायकः अस्ति, यस्य व्याख्या अस्मै सिद्धान्ताय नूतनं दृष्टिकोणं प्रददाति। तस्य मतानुसारं रसस्य न उत्पत्तिः भवति, न प्रतीतिः, न च

अभिव्यक्तिः, अपि तु रसस्य 'भुक्तिः' भवति अर्थात् रसः भुज्यते। भट्टनायकस्य मते 'निष्पत्तिः' इत्यस्य अर्थः 'भावितत्वम्' अथवा 'भावितिः' इति विद्यते। विभावादिभिः सह संयोगे सति स्थायी भावः भावितः सन् रसरूपेण परिणमते। अत्र 'संयोगः' इत्यस्य तात्पर्यं भावक-भाव्य-सम्बन्धः अस्ति, यस्मिन् विभावादयः 'भावकाः' सन्ति तथा च स्थायी भावः 'भाव्यः' अस्ति।

स्वमतप्रतिपादनक्रमे भट्टनायकोऽभिधा-भावकत्व-भोजकत्वरूपाणां त्रयाणां काव्यव्यापाराणां व्यवस्थां प्रस्तौति। भट्टनायकप्रस्तुतोऽयमभिधाव्यापारस्तु विशिष्टो वर्तते। भावकत्वभोजकत्वे नाभिधातो भिन्ने शब्दशक्ती, अपि त्वभिधाव्यापारस्यैवाङ्गभूते स्तः। रसनिष्पत्तेरनिवार्यपृष्ठभूमिनिर्मापकत्वाद् 'भावकत्वव्यापारः' सर्वाधिकमहत्त्वपूर्णो भवति, एतेनैव व्यापारेण काव्यगताभिधा विलक्षणा सञ्जायते। वाच्यार्थबोधविषये काव्ये शास्त्रे चाभिधाशक्तेर्भूमिकैकरूपैव भवति। किन्तु काव्ये रसनिष्पत्तेः साध्यत्वाद् अर्थस्य कल्पनात्मके स्तरे ग्रहणस्य, तदनुकूलं सामाजिकानां चित्तवृत्तेः परिणतेश्चाप्यावश्यकता वर्तते, यद्धि शुद्धाभिधा साधयितुं न प्रभवति। इदमेव कार्यं भट्टनायककल्पितेन विशिष्टाभिधाव्यापारेण सम्पन्नं भवति।

अभिधाव्यापारेण तावत् प्रेक्षकस्य सहृदयस्य वा काव्यगतशब्दार्थादीनां सामान्यबोधो जायते (यथा काव्ये नाटके वा इयं सीता, अयं रामः, इयं जनकतनया रामप्रिया सीता, अयं दशरथतनयः सीतापती रामः इत्यादिरूपेण)। ततश्च भावकत्वव्यापारेण द्रष्टा किञ्चित्कालपर्यन्तं स्वकीयत्वं (अहं ममेदमित्यादिभेदबुद्धिं) विस्मरति, अस्मिन्नेव च बिन्दौ विभावादीनां साधारणीकरणं निष्पद्यते। यद्यपि नाटकारम्भे प्रेक्षकः नटस्य वैशिष्ट्यं स्वस्य च पृथक्त्वं निजत्वं सम्यग् जानाति, तथापि नाटकस्य क्रमिकविकासेन साकं पात्राणां वैशिष्ट्यं प्रेक्षकस्य इयत्ता (सीमितत्वं) च उभे अपि विलीने भवतः। अत्रैव साधारणीकरणप्रक्रियया रसो भावितो भवति। भट्टनायकमतानुसारं साधारणीकृतः स्थायीभावः न स्वयं रसः, अपितु स रसरूपेण आस्वादयोग्यो भवति; अर्थात् भावकत्वव्यापारेण स्थायीभावस्य साधारणीकरणे सत्यपि साक्षात् रसनिष्पत्तिर्न भवति, प्रत्युत रसनिष्पत्तये समुचिता भूमिका सज्जीक्रियते। अस्याः भावित्याः (भावनायाः) अनन्तरा प्रक्रियैव रसस्य भुक्तिः (भोगः) अस्ति, या भोजकत्वव्यापारनाम्ना जायते। सहृदयः प्रेक्षकः बाधारहितेन (विगलितावरणेन) चित्तेन विभावादिभिः भावितस्य रसस्य भोगं करोति। अयमेव रसास्वादः ब्रह्मास्वादतुल्यः (ब्रह्मानन्दसहोदरः) स्वीकृतः। अस्यां व्याख्यायां सर्वाधिकं महत्त्वपूर्णं तथ्यमिदं यत् रसस्य आश्रयः (स्थानं) प्रेक्षकस्य पाठकस्य सहृदयस्य वा चित्तमेव अस्ति। पूर्ववर्तिनौ व्याख्याकारौ भट्टलोल्लटशङ्कुौ रसस्य अवस्थितिं मूलपात्रेषु (अनुकार्येषु) मन्वाते, परञ्च भट्टनायकमतेन रसस्य स्थितिः सहृदयस्य चित्ते एव विद्यते, तदेव च काव्यस्य भावकत्व-भोजकत्व-व्यापारयोः साक्षात् क्रियाभूमिः वर्तते।

अभिनवगुप्तस्य अभिव्यक्तिवादः

रसनिष्पत्तिसिद्धान्तकारेषु अभिनवगुप्तस्य स्थानं चतुर्थं वर्तते। सः स्वपूर्ववर्तिनां व्याख्याकाराणां मतानां सम्यक् परीक्षणं विधाय स्वमतं स्थापयति। तेन विरचितौ 'अभिनवभारती' 'ध्वन्यालोकलोचनं' चेति द्वौ ग्रन्थौ उपलभ्येते। अभिनवगुप्तस्य मतानुसारं सहृदये रसस्य 'अभिव्यक्तिः' भवति। अयमाचार्यः 'निष्पत्तिः' इत्यस्यार्थम् 'अभिव्यक्तिः' इति तथा च 'संयोगः' इत्यस्यार्थं 'व्यङ्ग्य-व्यञ्जक-सम्बन्धः' इति व्याचष्टे।

तेषामिदमभिमतं यत् यथा जलसंस्पर्शं लब्ध्वा मृत्तिकायाः सौगन्ध्यं प्रसरति, तच्च सौगन्ध्यं नान्यतः कुतश्चिदायाति अपितु मृत्तिकायामेव स्वभावतो विद्यते, केवलं वर्षाबिन्दूनां संयोग एव तस्य गन्धस्य संवाहको भवति; तथैव सामाजिकस्य चित्ते स्थायिभावरूपेण रसः पूर्वमेव अन्तर्निहितो भवति, यश्च विभावादिसम्पर्केण 'अभिव्यक्तः' जायते। अतो विभावादयः व्यञ्जकाः भवन्ति, रसश्च व्यङ्ग्यः।

रसनिष्पत्तिप्रक्रियायां साधारणीकरणव्यापारस्यालौकिकतत्त्वं महतीं भूमिकां निर्वहति। देशकाल-स्वपर-व्यक्तिगतरागद्वेषचेतनाभ्यो विमुक्तावेव रसानुभवो जायते, अतएव रसाभिव्यक्तिर्लोकोत्तरानन्दमयी भवति। अस्य पुष्ट्यर्थम् अभिनवगुप्ताचार्यः 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' इत्यस्माद् आखेटकाद् दुष्यन्ताद् भीतस्य धावतो मृगशावकस्य दृष्टान्तं प्रस्तौति। यत्पठन् सहृदयः सर्वप्रथमं वाच्यार्थं बोधति, प्रायस्तस्मिन्नेव क्षणे काचिदन्या प्रतीतिरुदेति या विशेषदेशकालव्यक्तिनिरपेक्षा भवति। इयमेव प्रतीतिः रसात्मको व्यङ्ग्यार्थः। अभिनवगुप्तो विशदयति यद् देशकालबद्धस्य विशिष्टस्य (शकुन्तलास्नेहपात्रस्य) मृगशावकस्य भयमपि विशिष्टमस्ति, तथा च दुष्यन्तेन स्थानविशेषे (ऋष्याश्रमे) तस्यानुसरणमपि विशिष्टमेव। तथापि काव्यवैशिष्ट्यैर्नाट्याभिनयकौशलेन च सम्पूर्णप्रसङ्गस्य साधारणीकरणं सञ्जायते, सर्वञ्च देशकालव्यक्तिसम्बन्धेभ्यो मुक्तं भवति। सम्बद्धपात्राणां भावानाञ्च नियतसम्बन्धा विगलिता भवन्ति, विभावादीनां साक्षात्काराच्च सहृदयस्य चेतनापि रागद्वेषाभ्यां सर्वथा विमुक्ता जायते।

अभिनवगुप्तानुसारं रसस्याभिव्यक्तिस्तस्य भुक्तिश्चेति द्वयोः कोऽपि भेदो न विद्यते, यतः सा अभिव्यक्तिः वस्तुतः भोगरूपा एवास्ति।

भरतमुनेः रसनिष्पत्तिसिद्धान्तस्य व्याख्या चतुर्भिः आचार्यैः स्व-स्वदृष्टिकोणेन कृता अस्ति। अस्मिन् क्रमे अभिनवगुप्तः स्वपूर्ववर्तिनाम् आचार्याणां मतानां सूक्ष्मं विश्लेषणं कृत्वा स्वकीयं 'अभिव्यक्तिवाद' सिद्धान्तं प्रतिपादितवान्, येन सः रसनिष्पत्तेः व्याख्यातृषु मूर्धन्यं स्थानं

प्राप्तवान्। केवलं संस्कृतकाव्यशास्त्रे एव न, अपितु हिन्दीभाषायाः विद्वन्मण्डलेष्वपि रसनिष्पत्तिविषये अद्यापि गम्भीरा चर्चा-परिचर्चा च प्रचलति।

साधारणीकरणस्य अभिप्रायः

साधारणीकरणस्य सिद्धान्तं विमृशन्तः वयं सर्वप्रथमं तस्याः प्रक्रियायाः स्वरूपं जानीमः। यदा भवान् कञ्चन अभिनयं पश्यति अथवा काव्यं पठति, तदा प्रारम्भे तु 'अहं नाटकं पश्यामि' इति बोधो भवति यत्र अभिनेता रामस्य रूपेण प्रतीयते। किन्तु अभिनयस्य काव्यस्य वा भावे निमग्नः सन् भवान् क्रमेण सर्वमिदं विस्मरति। तत्र अभिनेता पात्रं च तिरोहितौ भवतः, तथा च एका तादृशी अवस्था आयाति यस्यां भवान् पात्रस्य सुखेन सुखी दुःखेन च दुःखी जायते। एवं सर्वं विस्मृत्य पात्रेण सह तादात्म्यं प्राप्य तन्मयीभवनमेव 'साधारणीकरणम्' इति उच्यते। इयं प्रक्रिया असाधारणमपि साधारणं करोति, येन पात्रस्य विशिष्टतायाः लोपो भवति तथा च पाठकः प्रेक्षको वा 'स्वकीय-परकीय' (मम-ममेतर) इति भेदात् मुक्तो जायते; वस्तुतः अस्यामेव दशायां रसस्य अलौकिकानन्दस्य प्राप्तिः सम्भवति।

साधारणीकरणस्य अवधारणायाः प्रथमः प्रयोगः रसनिष्पत्तेः व्याख्यातुः भट्टनायकस्य मते समुपलभ्यते, यया प्रक्रियाया रसनिष्पत्ति-सन्दर्भे सहृदयः अर्थात् प्रेक्षकः पाठकः वा केन्द्रबिन्दुरभवत्। भट्टलोल्लट-शङ्कुकायोः सिद्धान्तयोः तु सः केवलम् आरोप-अनुमित्योः माध्यमेन रसग्रहणम् अकरोत्, किन्तु साधारणीकरणस्य सिद्धान्तेन प्रेक्षकस्य पाठकस्य वा कृतौ अंशग्रहणं सुनिश्चितमभवत्। भट्टनायकेन विभावादीनां साधारणीकरणं प्रतिपादितं, यदेव तेषां भावकत्वव्यापारस्य मूलमस्ति; तन्मते काव्यस्य वैशिष्ट्यमिदमेव यत् तत् विशिष्टप्रक्रियाया विशिष्टविभावादीन् देश-काल-व्यक्तिसम्बन्धेभ्यः मुक्तं कृत्वा तेषां साधारणीकरणं करोति। भट्टनायकस्यानुसारेण दोषराहित्यं गुणालङ्कारसहितत्वं च काव्यस्य तादृशं लक्षणमस्ति येन विभावादीनां साधारणीकरणस्य सा विशिष्टा क्षमता उत्पद्यते या काव्येतरशब्दार्थेषु न विद्यते। विभावादीनां वैशिष्ट्यमुक्तिप्रक्रिया तदा पर्यन्तमपूर्णा भवति यावत् सामाजिकः स्वकीय-परकीयभावेभ्यः मुक्तो न जायते, अतः विभावादीनां विशिष्टतायाः विलोपः सामाजिकेन च तेषां साधारणीकृतस्य रूपस्य निरपेक्षभावेन ग्रहणम् अनिवार्यमस्ति। साधारणीकरणं कस्य भवति कथं च सम्पद्यते इत्यस्मिन् विषये विविधैः विद्वद्भिः स्वविचाराः प्रकटीकृताः सन्ति।

आचार्य अभिनवगुप्तः

भट्टनायकस्य भावकत्वव्यापारेण सह विसंमतिं प्रकटयन्नपि अभिनवगुप्तस्तस्य साधारणीकरणसिद्धान्तं सोत्साहं स्वीकरोति। तन्मते साधारणीकरणं केवलं विभावादीनामेव न भवति, अपितु स्थायिभावस्यापि जायते; यतः स्थायिभावस्य एतन्मानवीकरणं साधारणीकरणं वा वस्तुतः विभावादिभिरेव निष्पादयते।

तन्मतानुसारं व्यञ्जनाद्वारेणैव रसास्वादनं सम्भवति। व्यञ्जना-व्यापारः काव्यस्य अर्थं कल्पनाशक्त्या ग्रहणयोग्यं सम्पाद्य तस्य साधारणीकरणं करोति, येन सः आस्वादयोग्यो भवति। साधारणीकरणाय एषां त्रयाणां तत्त्वानाम् उपस्थितिः अनिवार्या वर्तते।—

- विभावाः — आलम्बनविभावः, आश्रयः, व्यभिचारिभावाः, अनुभावाश्च।
- सहृदयस्य चेतना।
- सहृदयस्य चित्ते वासनारूपेण स्थितः स्थायिभावः।

अभिनवगुप्तमतानुसारं सामान्यतः कस्यापि विशिष्टवस्तुनः प्रति सामाजिकस्य मनोभावः त्रिविधो भवति—तत् वस्तु तस्मै रोचते, न रोचते, अथवा स तत्र उदासीनतां भजते; तदनुसारं तस्मिन् आत्मीयभावः, शत्रुभावः, तटस्थभावश्च जायते। किन्तु रसप्रतीतिकाले एतास्तिष्ठोऽपि अवस्थाः न सम्भवन्ति, यतो हि तत्र विभावादिभिः सह सामाजिकस्य कोऽपि वैयक्तिकः सम्बन्धो न विद्यते, न च मित्र-शत्रु-तटस्थभावानां प्रवृत्तिः स्फुटा भवति, तथापि स रसास्वादं करोत्येव। अत एव अभिनवगुप्तः विभावादीनां स्वरूपं तेषां सामाजिकेन सह सम्बन्धं च लोकोत्तरं मन्यते। एतदर्थं स 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' इत्यस्य श्लोकमुदाहृत्य प्रतिपादयति यत् आश्रयभूतस्य मृगशावकस्य तथा आलम्बनभूतस्य दुष्यन्तस्य च साधारणीकरणेन आश्रयस्य स्थायीभावोऽपि देश-काल-व्यक्तिसम्बन्धेभ्यो मुक्तो भवति, येन सामाजिकानां मनसि “इदं मम भयम्”, “अहं भीतः”, “अयं विशिष्टो मृगः भीतः” इति प्रतीतिर्न जायते; अपि तु साधारणीकरणप्रक्रियया विभावादिभिः सह सहृदयस्य साधारणः सम्बन्धः प्रतिष्ठाप्यते, यत्र तस्यात्मा न पूर्णतया तिरस्क्रियते, न च विशेषरूपेणावगम्यते। अत एव रसप्रतीतौ सहृदयः न सर्वथा तटस्थो भवति, न च व्यक्तिविशेषबद्धः, किन्तु तन्मयतायाः सा सामर्थ्यं तस्मिन्नेव तदीयया सहृदयतया प्रादुर्भवति।

स्थायीभावस्य साधारणीकरणमित्यस्य तात्पर्यं देशकालगतबन्धनैः सह वैयक्तिकसंसर्गभ्यश्च मुक्तिरिति स्पष्टमेव। दृश्यकाव्येषु खलु काचिदलौकिकी शक्तिर्विद्यते, यस्याः प्रभावेण सहृदयः स्वकीयस्थानं कालं सामाजिकपरिवेशं च विस्मृत्य पूर्णतया वर्ण्यमाने विषये निमग्नो भवति। किन्तु एषा शक्तिः सर्वेषु दृश्येषु काव्येषु च समाना न भवति। आचार्यः अभिनवगुप्तः साहित्यस्य

नानाविधेषु रूपेषु साधारणीकरणस्य भिन्नभिन्नसामर्थ्यं विचारयति, यतः दृश्यविधिः (नाटकम्) तथा पाठ्यविधिः (काव्यकथादयः) सहृदयमनः पृथक्प्रकारैः तथा भिन्नमात्रया प्रभावितुं समर्थो स्तः। अत्र स्वाभाविकमेव यत् साधारणीकरणस्य एषा सामर्थ्यशक्तिः दृश्यविधायामेव सर्वाधिकतया प्रकाशते।

अभिनवगुप्तस्य अभिप्राये सामूहिक-साधारणीकरणस्य एकः विशिष्टः सिद्धान्तः दृश्यते, यस्मिन् न केवलम् एकः सहृदयः स्वकीयभावबन्धनात् मुक्तो भवति, अपितु समग्रः प्रेक्षकसमूहः अपि कलाकृतेः समानतया रसास्वादनम् अनुभवति। नाट्यप्रयोजनस्य सन्दर्भे प्रेक्षकाः सहृदयाश्च विशिष्टया पद्धत्या व्यवहरन्ति, येन तेषां वैयक्तिकपरिमितानां लयः जायते, तथा च ते सर्वे सामाजिकतां प्राप्य आनन्दमयं चिन्मयं च रसं सम्यक् आस्वादयन्ति।

आचार्यविश्वनाथः

साधारणीकरणस्य सिद्धान्तविवेचकेषु आचार्येषु आचार्यविश्वनाथस्य नाम सुमहत्त्वपूर्णं वर्तते। साधारणीकरणविषये स्वकीयं विचारं प्रकटयता तेन आचार्येणाभिनवगुप्तस्य स्थापनानां समर्थनं कृतम् अस्ति। तस्य विवेचनं तु अधोलिखितरूपेण विद्यते-

आचार्यविश्वनाथः रामादिमूलपात्राणाम् हृदयगतप्रेमादिभावाः (पूज्यत्वात्) कथमिव सहृदयानामास्वादयोग्याः भवन्तीति जिज्ञासायाम् 'आश्रयेण सह प्रमातुरभेदसिद्धिम्' प्रतिपादयति; स हि प्रमातुः (सहृदयस्य) आश्रयस्य च परस्परमभेदस्थापनमेव साधारणीकरणस्य मुख्यं फलं मत्वा तदनन्तरमेव रसास्वाददशां व्यवस्थापयति, अयं च सामाजिकस्य अभेदसम्बन्धः केवलं लौकिकपात्रैः सहैव न अपितु समुद्रलङ्घनादिसुदुष्करकार्येषु लोकोत्तरारम्भाद्युत्साहसम्पन्नैः हनुमदादिअलौकिकपात्रैरपि सह सिद्ध्यति, यतो हि अलौकिकपात्रैः साधारणीकृतत्वात् अर्थात् मानसाभेदान्वयात् सहृदयेऽपि तद्वदेव उत्साहभावः संचरति यस्य परिणतिः रसरूपेण जायते।

ते विभावनस्य अलौकिकव्यापारमेव 'साधारणीकरणम्' इति स्वीकुर्वन्ति, यतो हि रसप्रक्रियायां काव्यवर्णिताः विभावादयः स्थायिभावाश्च विभावनव्यापारस्य समग्रप्रभावेन स्वकीयवैशिष्ट्यं तिरोभाव्य साधारणरूपेण प्रतीयन्ते; रसास्वादकाले च विभावादिभिः सह 'मम' 'ममेतरस्य' वा, 'परस्य' 'न वा परस्य' इति सम्बन्धविशेषस्य न कोऽपि स्वीकारो नापि वा तिरस्कारो भवति, अपितु रत्यादयः स्थायिभावाः साधारणरूपेणैव प्रस्फुरन्ति। अत्र यद्यपि सहृदयस्य चेतसि आश्रयवदेव भावाः समुत्पद्यन्ते, तथापि ते तस्य वैयक्तिकवैशिष्ट्ययुक्ताः न भवन्ति, किन्तु वैयक्तिकसम्बन्धेभ्यः विनिर्मुक्तः साधारणीकृतो भावः अर्थात् रस एव अनुभूयते, येन विभावादयोऽपि देशकालपरिच्छेदशून्याः सन्तः 'साधारणाः' सञ्जायन्ते।

आचार्यविश्वनाथः अभिनवगुप्तप्रबोधिनेन सामूहिकरसास्वादसिद्धान्तेनापि सहमतः न दृश्यते, यतः सः सर्वेषु सामाजिकेषु समानवासनायाः अनिवार्यतां निराकृतवान्; यदा च सर्वेषु सहृदयेषु समाना वासना न विद्यते, तदा रसास्वादस्यापि एकरूपता न सम्भवतीति तस्य दृढः पक्षः।

पण्डितराजजगन्नाथः

साधारणीकरणविषये विचारयितारः परं आचार्याः पण्डितराजजगन्नाथाः सन्ति; तेषां सिद्धान्तोऽपि किञ्चिन्नवीनतायुक्तः। ते भट्टनायक-अभिनवगुप्तादिभिः प्रतिपादितं साधारणीकरणसिद्धान्तं नाङ्गीकुर्वन्ति, किन्तु आचार्यविश्वनाथस्य “आश्रयस्य प्रमात्रा सहाभेदः” इति मतं समनुमोदन्ते। ते तु साधारणीकरणस्य स्थाने “दोषविशेष” इत्यस्य कारणेन प्रमातुः आश्रयेण सहाभेदं स्वीकृत्य रसास्वादप्रक्रियायाः पूर्णतासिद्धान्तं प्रतिपादयन्ति। अत्रायं प्रश्नः प्रायः समुत्थीयते यत् दुष्यन्तशकुन्तलादिविशिष्टपात्राणां प्रेम कथं सामान्यदर्शकस्य पाठकस्य च रसास्वादविषयो भवितुमर्हति?

पण्डितराजजगन्नाथः श्रव्यदृश्यकाव्योभयसन्दर्भे काव्यास्वादप्रक्रियां विवेचयन् प्रतिपादयति यत् श्रव्यकाव्ये कविना तथा दृश्यकाव्ये नटेन विभावादीनां प्रकाशनं क्रियते, तदनु च व्यञ्जनाव्यापारेण सहृदयचित्ते ‘श्लोकोत्तरभावना’ इति नाम्ना प्रसिद्धः कश्चन विशिष्टो दोषरूपो भावनाविशेषः समुल्लसति, येन प्रभावितः सहृदयः स्वात्मानं दुष्यन्तत्वेन कल्पयति, तस्यां च दशायां शकुन्तलाविषयकरतित्वे तस्य किमपि प्रतिबन्धकं न तिष्ठति, एवं भावनारूपदोषेण कल्पितदुष्यन्तत्वाच्छादिते सहृदये कल्पितशकुन्तलाविषयिणी या रतिः प्रादुर्भवति सैव रतिः पण्डितराजमते ‘रसः’ इति व्यपदिश्यते; यथा च प्रभाधिक्यात् दूरावलोकनेन शुक्तिकायां रजतभ्रमो जायते तद्वदेव इयं प्रक्रिया सहृदयस्य चित्ते सम्पद्यते।

सारांशः

‘विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः’ इति सूत्रानुसारं विभाव-अनुभाव-व्यभिचारिभावानां मेलनेनैव रसस्य निष्पत्तिः जायते, यत्र रसस्य स्थितिः कुत्र वर्तते तथा ‘संयोग’ एवं ‘निष्पत्ति’ शब्दयोः वास्तविकः अर्थः कः इत्यस्मिन् विषये संस्कृतकाव्यशास्त्रस्य चतुर्णाम् आचार्याणां भिन्न-भिन्नाः सिद्धान्ताः प्रसिद्धाः सन्ति। साधारणीकरणं काव्यास्वादस्य सा प्रक्रिया अस्ति यस्यां असाधारणं वस्तु साधारणत्वं भजते, पात्रस्य वैयक्तिकविशिष्टता विलुप्यते, प्रमाता च स्वपरभेदात् (ममेतरभावात्) मुक्तो भूत्वा अलौकिकं रसानन्दं विन्दति। आचार्यः अभिनवगुप्तः विभावादिभिः सह

स्थायिभावस्यापि साधारणीकरणं स्वीकुर्वन् कथयति यत् सहृदयस्य विभावदिभिः सह सम्बन्धः निर्वैयक्तिकः भवति, यत्र देशकालपरिच्छेदशून्यता व्यक्ति-संसर्गमुक्तिश्च विद्यते, अपि च सः 'सामूहिकसाधारणीकरणस्य' अवधारणां प्रस्तौति। आचार्यविश्वनाथस्तु साधारणीकरणप्रक्रियायाम् आश्रयेण सह प्रमातुः तादात्म्यं वा अभेदं मन्यते, परं पण्डितराजजगन्नाथः इमम् 'आश्रयेण सह प्रमातुः अभेदं' 'दोषविशेष' सिद्धान्तेन सह अङ्गीकरोति।

आधारग्रन्थसूची

- १- रससिद्धान्तः, डॉ. नगेंद्रः, नेशनल पब्लिशिंग हाउस।
- २- भारतीयकाव्यशास्त्रस्य मूलसमस्याः, सम्पादकः - कृष्णबलः, राधाकृष्णप्रकाशनम्।
- ३- भारतीयकाव्यशास्त्रम्, डॉ. तारकनाथबालः, वाणीप्रकाशनम्।
- ४- भारतीय तथा पाश्चात्य काव्यशास्त्र की पहचान – प्रोफेसर हरिमोहनः, वाणी प्रकाशनम्।
- ५- साधारणीकरणं तथा सौन्दर्यानुभूतेः प्रमुखाः सिद्धान्ताः – डॉ. प्रेमकान्त टण्डनः, लोकभारती प्रकाशनम्, इलाहाबादः।
- ६- चिन्तामणिः (भागः १) – रामचन्द्रशुक्लः, इण्डियन प्रेस पब्लिकेशनम्, इलाहाबादः।
- ७- रसविमर्शः – डॉ. राममूर्तिः त्रिपाठी, वाणी प्रकाशनम्।

बालमुकुन्दसिंहः

स्नातकतृतीयवर्षस्य छात्रः

(प्रोग्रामपाठ्यक्रमस्य)

अभिनय (अभिनय)

अभिनयः (अभिनयः वा अभिव्यक्तिः) नाटकस्य अत्यन्तं आवश्यकः परिभाषकः च तत्त्वः अस्ति, यस्य माध्यमेन लिखिता वा कथिता वा कथा जीवन्तं, दृश्यमानं, भावात्मकं च प्रदर्शनं भवति। अभिनयः शब्दः “अभि” (प्रति) “नय” (नेतृकरणम्) इति संस्कृतमूलात् निष्पन्नः, यस्य अर्थः “दर्शकानां समक्षं किमपि वहितुं वा प्रस्तुतं कर्तुं वा” इति। एवं अभिनयः नाट्यग्रन्थस्य अर्थ—तस्य कथां, पात्राणि, भावाः च—साक्षात् प्रेक्षकान् प्रति संप्रेषयति इति कला। नाट्यसिद्धान्ते विशेषतः भवतः ग्रन्थे व्याख्यातं नाटकं द्रष्टृत्वत्वात् दृष्य-काव्यं (दृश्यकाव्यम्) इति उच्यते। तथापि अभिनयद्वारा एव यथार्थतया “दृश्यमानं” भवति। अभिनयं विना नाटकं केवलं लिखितं आख्यानं वा किमपि श्रुतं वा तिष्ठति स्म, परन्तु दृगततया भावनात्मकतया वा अनुभवितं न भवति स्म।

मूलरूपेण कथा (कथा) प्रायः श्रोतुं वा कल्पनीयं वा वस्तु भवति, परन्तु मञ्चे कृतं सति सा दृष्टिविषयं भवति इति पाठः व्याख्यायते। अमूर्तं वा आख्यानं वा किमपि ठोसगोचरं प्रति एतत् परिवर्तनं अभिनयद्वारा भवति। अस्मिन् क्रमे अभिनेता कस्यचित् पात्रस्य तादात्म्यं स्वीकृत्य महत्त्वपूर्णं भूमिकां निर्वहति। एतत् आरोपा (अतिप्रत्यारोपणम्) इति वर्णितं यत्र मूलपात्रस्य गुणाः, भावाः, कर्माणि च नटस्य उपरि “आरोपितानि” भवन्ति। यद्यपि अभिनेता पात्रं च वस्तुतः भिन्नाः व्यक्तिः सन्ति-विभिन्नकालस्य, भिन्नसन्दर्भस्य च-सम्बद्धाः-तथापि प्रदर्शनं एकतायाः भ्रमं जनयति यथा - यदा कश्चन नटः ऐतिहासिकं पौराणिकं वा चित्रयति तदा प्रेक्षकाः अभिनेतारं तत् एव पात्रं इति ग्रहीतुं आरभन्ते। तादात्म्यानां एषः मिश्रणः अभिनयस्य मौलिकः पक्षः अस्ति।

ततश्च एषा प्रक्रिया काव्यतुलना वा रूपकसदृशी यत्र एकं वस्तु अन्यस्य दृष्ट्या वर्णितं भवति इति पाठेन बोधितम्। यथा साहित्ये मुखस्य चन्द्रस्य उपमा भवति तथा नाटके नटः पात्रस्य जीवन्तं प्रतिपादनं भवति। हावभावेन, व्यञ्जनैः, स्वरेण, भावतीव्रताभिः च अभिनेता प्रेक्षकाणां पात्रस्य च अन्तःलोकस्य मध्ये सम्बन्धं स्थापयति फलतः प्रेक्षकाः केवलं घटनानां अवलोकनं न कुर्वन्ति अपितु

प्रेम (रति), शोक (शोक), क्रोध (क्रोध), आनन्द (हर्ष) इत्यादीनां भावानाम् अनुभवं कुर्वन्ति । एषः
भावात्मकसञ्चारः अभिनयस्य परमं लक्ष्यम् अस्ति।

अभिनयस्य कारणेन नाटकस्य प्रभावशीलता, तादात्म्यं च प्राप्यते इति अपि ग्रन्थे प्रकाशितम् अस्ति ।
अभिनयद्वारा एव नाटकस्य विविधाः अर्थाः, विषयाः, भावात्मकाः स्तराः च प्रसारिताः भवन्ति ।
जटिलविचाराः सूक्ष्मभावनाः अपि कार्यप्रदर्शनद्वारा अवगम्यमानाः, सम्बद्धाः च भवन्ति । वस्तुतः
अभिनयस्य वर्णनं यत् तेन मञ्चे नाटककारस्य अभिप्रायः आख्यानस्य गभीरता च सजीवः भवति ।
एतेन प्रेक्षकाः परिस्थितयः कल्पयितुं, सम्बन्धान् अवगन्तुं, नाटकीयजगति निमग्नाः भवेयुः च ।

अन्यः महत्त्वपूर्णः विषयः चर्चाकृतः अस्ति यत् अभिनयः केवलं अनुकरणं न अपितु सृजनात्मकः
अभिव्यञ्जकः च प्रक्रिया अस्ति । अभिनेता केवलं वास्तविकतायाः प्रतिकृतिं न करोति अपितु
कलात्मकरूपेण व्याख्यायते प्रस्तुतं च करोति । अभिव्यक्तिरूपेषु भिन्नभिन्नरूपेण-यथा
शारीरिकगतिः, वाक्, वेषः, आन्तरिकभावनास्थितिः च-नटः जीवनस्य पुनर्निर्माणं शैलीबद्धरूपेण
सार्थकरूपेण च करोति अनेन नाटकं संचारस्य कलात्मकव्यञ्जनस्य च सशक्तं माध्यमं भवति ।

उपसंहारे अभिनयः नाटकात्मा। लिखितग्रन्थस्य प्रेक्षकानुभवस्य च अन्तरं पूरयति प्रक्रिया एव ।
आख्यानं दृश्य-भावनात्मक-वास्तविकतायां परिणमयित्वा प्रेक्षकाः कथायाः सारं द्रष्टुं, अनुभूय,
अवगन्तुं च शक्नुवन्ति । अभिनयस्य विना नाटकस्य प्रभावः उद्देश्यं च नष्टं स्यात्, परन्तु तया सह
प्रदर्शनं सजीवं, आकर्षकं, गहनभावनाप्रतिक्रियाः उत्तेजितुं समर्थं च भवति

नाट्यशास्त्रे भरतेन अभिनयं चतुर्धा विभक्तम् । एते चत्वारः प्रकाराः मिलित्वा कस्यापि प्रदर्शनस्य
पूर्णतां कुर्वन्ति-

1. आङ्गिका अभिनय
2. वाचिका अभिनय

3. सात्विक अभिनय

4. आहार्य अभिनय

एते चत्वारः अभिनयरूपाः कस्यापि नाट्यप्रदर्शनस्य अत्यावश्यकाः घटकाः सन्ति ।

(i) आङ्गिका अभिनय (शारीरिक अभिनय) २.

आङ्गिका अभिनयः सा अभिनयरूपः यः शरीरस्य नानाङ्गैः क्रियते । अस्मिन् भावानाम् अभिव्यञ्जनाय भिन्न-भिन्न-शरीर-अङ्गानाम् उपयोगः भवति । हस्तपादयोः गतिः, हावभावः, शरीरस्य आसनानि च भावनानां संप्रेषणार्थं उपयुज्यन्ते ।

अस्य प्रकारस्य अभिनयस्य मुख्यतया त्रयः भागाः सन्ति- १.

- अङ्ग (प्रमुख अङ्ग): शिरः, हस्तौ, वक्षः, पाश्र्वौ, कटिः, पादौ च
- प्रत्यङ्ग (द्वितीयक अङ्ग): स्कन्ध, बाहु, पृष्ठ, उदर, ऊंघ, नितम्ब च
- उपाङ्ग (लघुभाग): नेत्र, भ्रू, नासिका, गण्ड, अधर च

यदा नटः नर्तकः वा कथायाः अर्थं न वदन् केवलं हावभावेन (मुद्राभिः) मुखस्य भावेन च अभिव्यञ्जयति तदा अङ्गिका अभिनयः इति कथ्यते । अयं अभिनयरूपः भरतनाट्यम्, कथाकाली, ओडिस्सी इत्यादिषु भारतीयशास्त्रीयनृत्यरूपेषु अत्यन्तं महत्त्वपूर्णः, बहुधा च प्रयुक्तः अस्ति । भरतमुनिना नाट्याशास्त्रे आङ्गिका अभिनयस्य महत्त्वं दत्तम् अस्ति ।

(ii) वाचिका अभिनय (वाच्य अभिनय) २.

वाचिका अभिनयः वाक्सम्बद्धः । अस्मिन् संवादप्रसवः, उच्चारणं, शब्दानां स्पष्टता, स्वरः, स्वरस्य मॉडुलेशनं च अन्तर्भवति ।

अस्मिन् अभिनयरूपे नटः किं कथ्यते, कथ्यते, कुत्र च कथ्यते इति विषये अवधानं दातव्यम् । स्वरस्य गतिः, वेगः, बोधः इत्यादिभिः भिन्नैः भिन्नाः भावाः व्यक्ताः भवन्ति । सम्यक् संवादप्रदानं प्रेक्षकाणां कृते अर्थं अभिप्रायं च स्पष्टतया प्रसारयितुं साहाय्यं करोति ।

(iii) सात्विक अभिनय (भावनात्मक अभिनय) २.

सात्विक अभिनयः सूक्ष्मतमं मनोवैज्ञानिकं च अभिनयरूपम् । नटस्य आन्तरिकभावनस्थित्या सह सम्बद्धम् अस्ति । “सत्त्व” इति शब्दः मनः अथवा अन्तः चैतन्यं निर्दिशति । यदा कश्चन नटः पात्रे एतावत् गभीरं प्रवृत्तः भवति यत् शरीरे वास्तविकभावनाप्रतिक्रियाः प्रादुर्भवितुं आरभन्ते तदा सात्विकाभिनयः इति कथ्यते ।

अष्टौ मुख्याः सात्विकभावाः (भावनाभिव्यक्तिः) : १.

- स्तम्भ – निश्चलत्वम्
- स्वेदः – स्वेदनम्
- रोमांच – अन्ततः स्थिताः केशाः
- स्वरभङ्ग – स्वरस्य परिवर्तनं वा भङ्गः वा
- वेपथु – कम्पमान
- वैवर्ण्य – मुखवर्णे परिवर्तनम्
- अश्रु – अश्रु
- प्रलयः – मूर्च्छा

एतानि व्यञ्जनानि गभीरभावनात्मकसंलग्नतायाः स्वाभाविकतया उत्पद्यन्ते, तेषां कृत्रिमरूपेण सहजतया निर्माणं कर्तुं न शक्यते ।

(iv) आहार्य अभिनयः (वेषः बाह्यरूपः) २.

आहार्य अभिनयः अभिनयस्य बाह्यः पक्षः । अस्मिन् वेषभूषा, मेकअपः, आभूषणं, मञ्चसज्जा च अन्तर्भवति । वेष-रूपयोः माध्यमेन पात्रस्य (राजा, ऋषिः, राक्षसः, देवता वा) स्वभावः सुलभतया ज्ञायते । यथा - वस्त्रस्य वर्णविशेषः विशिष्टः मेकअपः वा निर्वहणीया भूमिकां सूचयितुं शक्नोति ।

आहार्य अभिनयः पात्रस्य स्पष्टतया प्रस्तुतीकरणे सहायकः भवति तथा च कालस्य, स्थानस्य, वातावरणस्य च चित्रणस्य समर्थनं करोति । प्रदर्शनं दृग्गतरूपेण प्रभावी कर्तुं महत्वपूर्णं भूमिकां निर्वहति ।

उपसंहारः भरतमुनिमते चतुःप्रकारः अभिनयः मिलित्वा नाट्यप्रदर्शनं सम्पन्नं करोति । आङ्गिका वाचिका च बाह्यव्यञ्जनं प्रतिपादयति, आहार्यः रूपं ददाति, सात्त्विकं तु अन्तः आत्मानं प्रतिपादयति । चतुर्णां सन्तुलनं कस्यापि प्रदर्शनस्य कृते अत्यावश्यकम् । यत्र आङ्गिका वाचिका च बाह्यसौन्दर्यं दर्शयन्ति तत्र सात्त्विकाभिनयः प्रदर्शनं सजीवं प्रभावपूर्णं च करोति ।

ध्रुवी गोएल

तृतीयवर्षस्य छात्राः

ਦੇਸ਼

2025-26

ਪੰਜਾਬੀ ਵਿਭਾਗ

ਸੰਪਾਦਕ : ਡਾ. ਮੁਨੀਸ਼ ਕੁਮਾਰ

ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਸੰਪਾਦਕ : ਕੋਮਲ

ਵਿਸ਼ਾ ਸੂਚੀ

ਸਾਹਿਤ ਤੇ ਸਮੀਖਿਆ	ਡਾ. ਮੁਨੀਸ਼ ਕੁਮਾਰ	76-77
ਕ੍ਰਿਤਿਮ ਬੁੱਧੀ (ਆਰਟੀਫੀਸ਼ੀਅਲ ਇੰਟੈਲੀਜੈਂਸ)	ਕੋਮਲ	78-80
ਸਿੱਖ ਧਰਮ ਦੇ ਦਸ ਗੁਰੂਆਂ ਦੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਅਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀਆਂ ਸਿੱਖਿਆਵਾਂ	ਅਵਨੀ	81-84
ਇਰਾਨ-ਇਜ਼ਰਾਈਲ ਯੁੱਧ ਦਾ ਭਾਰਤੀ ਸਮਾਜ 'ਤੇ ਪ੍ਰਭਾਵ	ਸੁਸ਼ਮਿਤਾ ਸ਼ਰਮਾ	85-88
ਸਮੇਂ ਦੀ ਕੀਮਤ	ਪੂਜਾ ਚੌਹਾਨ	88-92

ਸਾਹਿਤ ਤੇ ਸਮੀਖਿਆ

ਸਾਹਿਤ-ਸਿਰਜਣਾ ਮਨੁੱਖ ਦੀ ਕਲਾਤਮਕ ਸਿਰਜਣਾ ਦਾ ਪ੍ਰਮੁੱਖ ਵਿਲੱਖਣ ਰੂਪ ਹੈ। ਮਨੁੱਖ ਸਿਰਫ ਬੁਨਿਆਦੀ ਲੋੜਾਂ ਦੀ ਪੂਰਤੀ ਲਈ ਸਿਰਜਣਾ ਨਹੀਂ ਕਰਦਾ ਸਗੋਂ ਨਿੱਤ ਦੀਆਂ ਜਰੂਰਤਾਂ ਤੋਂ ਅਗਾਂਹ ਜਾ ਕੇ ਵੀ ਸਿਰਜਣਾ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਜਿੰਦਗੀ 'ਚ ਸੁਹਜ ਹੈ ਹੀ ਇਸ ਕਰਕੇ ਕਿ ਮਨੁੱਖ ਸੁਹਜ ਦੇ ਵਿਭਿੰਨ ਰੂਪਾਂ ਨੂੰ ਸਿਰਜਦਾ ਹੈ। ਸਾਹਿਤ ਵੀ ਇਕ ਅਜਿਹਾ ਹੀ ਸਿਰਜਣਾਤਮਕ ਰੂਪ ਹੈ। ਇਸ ਲਈ ਸਾਹਿਤ ਦੇ ਮਹੱਤਵ ਦਾ ਸਵਾਲ ਕਿਸੇ ਕਾਲ-ਪਾਸਾਰ ਦਾ ਸਵਾਲ ਨਹੀਂ। ਵਿਕਸਿਤ ਪੂੰਜੀਵਾਦੀ, ਮਸ਼ੀਨੀਕਰਨ, ਸੂਚਨਾ ਤੇ ਤਕਨਾਲੋਜੀ ਤੇ ਖਾਸ ਕਰ ਬਣਾਵਟੀ ਗਿਆਨ ਵਾਲੇ ਦੌਰ ਵਿਚ ਸਾਹਿਤ ਦਾ ਮਹੱਤਵ ਹੋਰ ਵੀ ਅਹਿਮ ਹੁੰਦਾ ਜਾ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਹਰ ਸਮੇਂ ਦੇ ਸਾਹਿਤ ਦੀਆਂ ਆਪਣੀਆਂ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਤਾਵਾਂ ਹੁੰਦੀਆਂ ਹਨ। ਬਦਲਦੀਆਂ ਪ੍ਰਸਥਿਤੀਆਂ ਅਨੁਸਾਰ ਸਾਹਿਤ ਅੰਦਰ ਵੀ ਰੂਪਾਂਤਰਣ ਵਾਪਰਦਾ ਹੈ, ਪਰਿਵਰਤਨ ਦੇ ਬਾਵਜੂਦ ਸਾਹਿਤ ਦੀ ਅਹਿਮੀਅਤ ਬਰਕਰਾਰ ਰਹਿੰਦੀ ਹੈ। ਸਾਹਿਤ ਤੇ ਆਲੋਚਨਾ ਦਾ ਸੰਬੰਧ, ਸਾਹਿਤ ਸਿਰਜਣਾ ਜਿੰਨ੍ਹਾਂ ਹੀ ਪੁਰਾਣਾ ਹੈ। ਜਦੋਂ ਕੋਈ ਸਾਹਿਤਕਾਰ ਸਾਹਿਤਕ ਜੀਵਨ ਪ੍ਰਤੀ ਆਪਣੇ ਕਿਸੇ ਪ੍ਰਤੀਕਰਮ ਜਾਂ ਸੰਵੇਦਨਾ ਨੂੰ ਪ੍ਰਗਟਾਉਂਦਾ ਹੈ ਤਾਂ ਉਹ ਅਸਲ ਵਿਚ ਕਿਸੇ ਸਮਾਜਿਕ ਚੋਂਗਿਰਦੇ ਨੂੰ ਪਛਾਣਦਾ ਹੋਇਆ ਉਸਦੀ ਪੇਸ਼ਕਾਰੀ ਕਰ ਰਿਹਾ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਅਜਿਹਾ ਕਰਦੇ ਹੋਏ ਸਾਹਿਤਕਾਰ ਜੀਵਨ ਯਥਾਰਥ ਨੂੰ, ਆਪਣੇ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀਕੋਣ ਰਾਹੀਂ ਗ੍ਰਹਿਣ ਕਰਕੇ, ਉਸਦੇ ਪ੍ਰਤੀਨਿਧ ਪੱਖਾਂ ਨੂੰ ਕਲਾਤਮਕ ਬਿੰਬਾਂ ਰਾਹੀਂ, ਸਾਹਿਤ ਦੇ ਕਿਸੇ ਰੂਪ ਵਿਚ ਢਾਲ ਕੇ ਪ੍ਰਸਤੁਤ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਸਾਹਿਤ-ਸਿਰਜਣਾ ਆਪਣੇ ਮੂਲ ਸੁਭਾਅ 'ਚ ਇਕ ਪ੍ਰਕਾਰ ਦੀ ਸਿਰਜਣਾਤਮਕ ਆਲੋਚਨਾ ਹੀ ਹੈ। ਸਾਹਿਤ- ਸਿਰਜਣਾ ਤੇ ਸਾਹਿਤ -ਸਮੀਖਿਆ ਦੋ ਵੱਖੋ-ਵੱਖਰੀਆਂ ਵਿਧਾਵਾਂ ਹਨ। ਜਿਥੇ ਸਾਹਿਤ, ਸਿਰਜਣਾਤਮਕ ਪ੍ਰਕ੍ਰਿਆ ਵਿਛੜੇ ਅਮਲ 'ਚ ਢਲ ਜਾਂਦਾ ਹੈ, ਉਥੇ ਸਾਹਿਤ-ਸਮੀਖਿਆ, ਸਾਹਿਤ/ਪਾਠ ਦੇ ਓਹਲੇ 'ਚ ਪਏ ਅਰਥਾਂ, ਚਿਹਨਾਂ ਦੀ ਵਿਆਖਿਆ, ਪ੍ਰਸੰਗਿਕਤਾ, ਪ੍ਰਵਚਨਾਂ ਅਤੇ ਸਾਹਿਤ ਵਿਧੀ-ਵਿਧਾਨ ਸੰਬੰਧੀ ਸਮੀਖਿਅਕ ਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀ ਉਸਾਰਦੀ ਹੈ।

ਰਚਨਾਤਮਕ ਸਾਹਿਤ-ਸਿਰਜਣਾ ਦੇ ਸਮਾਨਾਂਤਰ ਸਾਹਿਤ ਦੇ ਪ੍ਰਯੋਜਨਵਾਦੀ ਅਰਥਾਂ ਨੂੰ ਜਾਣਨ/ਪਹਿਚਾਣਨ ਹਿਤ ਲੰਮੇ ਸਮੇਂ ਤੋਂ ਹੀ ਕੁਝ- ਇਕ ਸੰਦਾਂ ਨੂੰ ਸਾਹਿਤ - ਪਰਖ ਵਜੋਂ ਵਰਤਿਆ ਜਾਂਦਾ ਰਿਹਾ ਹੈ ਇਨ੍ਹਾਂ ਅੰਤਰ-ਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀਆਂ ਦੁਆਰਾ ਸਾਹਿਤ ਦੀ ਸੁਹਜ-ਸ਼ਾਸਤਰੀ ਪਛਾਣ ਉਸਾਰਨ ਦੇ ਯਤਨ ਪ੍ਰਾਚੀਨ ਕਾਲ ਟੋਹ ਹੁੰਦੇ ਰਹੇ ਹਨ। ਸਾਹਿਤ ਪਰਖ ਦੇ ਸਾਧਨ ਸਮੇਂ ਅਨੁਸਾਰ ਬਦਲਦੇ ਰਹੇ ਹਨ। ਪ੍ਰਾਚੀਨ ਭਾਰਤੀ ਕਾਵਿ- ਸ਼ਾਸਤਰੀ ਪਰੰਪਰਾ ਤੇ ਗਰੈਕੋ ਰੋਮਨ ਪਰੰਪਰਾ ਤੋਂ ਇਨ੍ਹਾਂ ਪਹੁੰਚ -ਵਿਧੀਆਂ ਦਾ ਆਗਾਜ਼ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਕਿਸੇ ਵੀ ਪਾਠ ਵਿਚਲੇ ਅਰਥਾਂ ਦੀ ਚਿਹਨਕਾਂ ਨੂੰ ਸਮਝਣ ਲਈ ਕਈ ਅੰਤਰਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀਆਂ ਸਾਮ੍ਹਣੇ ਆਈਆਂ ਹਨ। ਹੁਣ ਸਵਾਲ ਇਹ ਹੈ ਕਿ ਪੱਛਮ ਵਿਚ ਵਿਕਸਤ ਹੋਈਆਂ ਇਹ ਆਲੋਚਨਾ ਪ੍ਰਣਾਲੀਆਂ ਕਿਸੇ ਦੂਜੇ ਧਰਾਤਲ 'ਤੇ ਰਚੇ ਸਾਹਿਤ-ਪਾਠ ਲਈ ਕਿੰਨੀਆਂ ਕੁ ਲਾਹੇਵੰਦ ਹੋਣਗੀਆਂ? ਕਿਉਂਕਿ ਹਰ ਧਰਾਤਲ ਦੀਆਂ ਆਪਣੀਆਂ ਵੱਖਰਤਾਵਾਂ ਹੁੰਦੀਆਂ ਹਨ। ਅਜੋਕੇ ਸਮੇਂ ਸਾਹਿਤ ਤੇ ਸਮੀਖਿਆ ਦੇ ਆਪਸੀ ਸੰਵਾਦ ਅਤੇ ਟਕਰਾਓ ਦੀ ਸਥਿਤੀ ਨੂੰ ਸਮਝਣਾ ਬੇਹੱਦ ਜ਼ਰੂਰੀ ਹੈ।

ਡਾ.ਮੁਨੀਸ਼ ਕੁਮਾਰ
ਅਸਿਸਟੈਂਟ ਪ੍ਰੋਫੈਸਰ
ਦੇਸ਼ਬੰਧੂ ਕਾਲਜ

ਕ੍ਰਿਤ੍ਰਿਮ ਬੁੱਧੀ (ਆਰਟੀਫੀਸ਼ੀਅਲ ਇੰਟੈਲੀਜੈਂਸ)

ਕ੍ਰਿਤ੍ਰਿਮ ਬੁੱਧੀ (AI) ਇੱਕ ਤਕਨੀਕੀ ਖੇਤਰ ਹੈ ਜਿਸ ਵਿੱਚ ਮਸ਼ੀਨਾਂ ਅਤੇ ਕੰਪਿਊਟਰਾਂ ਨੂੰ ਮਨੁੱਖੀ ਬੁੱਧੀ ਦੇ ਤਰੀਕੇ ਨਾਲ ਕੰਮ ਕਰਨ ਦੇ ਯੋਗ ਬਣਾਉਣ ਦੀ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਕੀਤੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਇਸ ਵਿੱਚ ਬਹੁਤ ਸਾਰੇ ਅਲਗੋਰਿਦਮ, ਮਸ਼ੀਨ ਲਰਨਿੰਗ, ਅਤੇ ਡੀਪ ਲਰਨਿੰਗ ਤਕਨੀਕਾਂ ਸ਼ਾਮਲ ਹੁੰਦੀਆਂ ਹਨ ਜੋ ਕਿ ਮਸ਼ੀਨਾਂ ਨੂੰ ਸੋਚਣ, ਸਮਝਣ, ਅਤੇ ਫੈਸਲੇ ਲੈਣ ਵਿੱਚ ਸਮਰਥ ਬਣਾਉਂਦੀਆਂ ਹਨ।

ਕ੍ਰਿਤ੍ਰਿਮ ਬੁੱਧੀ ਦਾ ਇਤਿਹਾਸ

ਕ੍ਰਿਤ੍ਰਿਮ ਬੁੱਧੀ ਦੀ ਸ਼ੁਰੂਆਤ 1950 ਦੇ ਦਹਾਕੇ ਵਿੱਚ ਹੋਈ ਸੀ। ਇਸ ਸਮੇਂ, ਮਸ਼ੀਨ ਨੂੰ ਮਨੁੱਖੀ ਸੋਚ ਦੀ ਪ੍ਰਕਿਰਿਆ ਦੀ ਨਕਲ ਕਰਨ ਦੀ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਕੀਤੀ ਗਈ। ਮਸ਼ਹੂਰ ਵਿਗਿਆਨੀ ਅਲਨ ਟੂਰਿੰਗ ਨੇ ਇਸ ਵਿਚਾਰ ਨੂੰ ਬਹੁਤ ਅੱਗੇ ਵਧਾਇਆ ਅਤੇ 'ਟੂਰਿੰਗ ਟੈਸਟ' ਦਾ ਸੁਝਾਅ ਦਿੱਤਾ ਜਿਸਦਾ ਮਕਸਦ ਇਹ ਸੀ ਕਿ ਮਸ਼ੀਨ ਕਿਸੇ ਮਨੁੱਖ ਨਾਲ ਗੱਲਬਾਤ ਕਰਦੇ ਸਮੇਂ ਉਹ ਮਨੁੱਖੀ ਬੁੱਧੀ ਦਾ ਅਹਿਸਾਸ ਕਰਵਾ ਸਕਦੀ ਹੈ ਜਾਂ ਨਹੀਂ।

ਕ੍ਰਿਤ੍ਰਿਮ ਬੁੱਧੀ ਦੀਆਂ ਕਿਸਮਾਂ

ਕ੍ਰਿਤ੍ਰਿਮ ਬੁੱਧੀ ਨੂੰ ਕੁਝ ਮੁੱਖ ਕਿਸਮਾਂ ਵਿੱਚ ਵੰਡਿਆ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ:

1. **ਸੰਕੀਰਨ ਏ.ਆਈ. (Narrow AI):** ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੇ ਏ.ਆਈ. ਸਿਸਟਮ ਇੱਕ ਖਾਸ ਕੰਮ ਨੂੰ ਬਹੁਤ ਹੀ ਸੁਚੱਜੀ ਤਰੀਕੇ ਨਾਲ ਕਰਨ ਲਈ ਤਿਆਰ ਕੀਤੇ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਉਦਾਹਰਨ ਵਜੋਂ, ਫੇਸ ਰੇਕਗਨਿਸ਼ਨ, ਵੇਇਸ ਅਸਿਸਟੈਂਟ (ਜਿਵੇਂ ਕਿ ਸਿਰੀ ਅਤੇ ਗੂਗਲ ਐਸਿਸਟੈਂਟ), ਅਤੇ ਜੇਨਰੇਟਿਵ ਪ੍ਰੀ-ਟਰੈਂਡ ਟ੍ਰਾਂਸਫਾਰਮਰ (GPT) ਇਹ ਸਾਰੇ ਸੰਕੀਰਨ ਏ.ਆਈ. ਦੇ ਉਦਾਹਰਨ ਹਨ।
2. **ਜਨਰਲ ਏ.ਆਈ. (General AI):** ਜਨਰਲ ਏ.ਆਈ. ਮਨੁੱਖੀ ਬੁੱਧੀ ਦੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਸੋਚਣ ਅਤੇ ਸਿੱਖਣ ਦੀ ਯੋਗਤਾ ਰੱਖਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਵਿੱਚ ਮਸ਼ੀਨ ਮਨੁੱਖੀ ਅਨੁਭਵਾਂ ਨੂੰ ਸਿੱਖ ਕੇ ਕਿਸੇ ਵੀ ਸਮੱਸਿਆ ਨੂੰ ਹੱਲ ਕਰਨ ਦੇ ਯੋਗ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਹਾਲਾਂਕਿ ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦਾ ਏ.ਆਈ. ਹੁਣ ਤੱਕ ਵਿਕਸਿਤ ਨਹੀਂ ਹੋਇਆ, ਪਰ ਇਹ ਭਵਿੱਖ ਵਿੱਚ ਅਹੰਕਾਰਪੂਰਕ ਤਕਨੀਕੀ ਕਦਮ ਹੋ ਸਕਦਾ ਹੈ।

3. **ਸੁਪਰਏ.ਆਈ. (Super AI):** ਇਹ ਇੱਕ ਖਿਆਲੀ ਸੰਕਲਪ ਹੈ ਜੋ ਉਸ ਸਮੇਂ ਦੇ ਤੱਕ ਤਿਆਰ ਕੀਤਾ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ ਜਦੋਂ ਕ੍ਰਿਤ੍ਰਿਮ ਬੁੱਧੀ ਮਨੁੱਖੀ ਬੁੱਧੀ ਨੂੰ ਪਿਛੇ ਛੱਡ ਦੇਵੇਗੀ। ਇਸ ਦਾ ਮਤਲਬ ਹੈ ਕਿ ਮਸ਼ੀਨਜ਼ ਬਿਲਕੁਲ ਸਾਰੀਆਂ ਮਨੁੱਖੀ ਯੋਗਤਾਵਾਂ ਤੋਂ ਅੱਗੇ ਜਾ ਸਕਦੀਆਂ ਹਨ।

ਕ੍ਰਿਤ੍ਰਿਮ ਬੁੱਧੀ ਦੇ ਉਪਯੋਗ

ਕ੍ਰਿਤ੍ਰਿਮ ਬੁੱਧੀ ਦਾ ਉਪਯੋਗ ਅੱਜ ਦੇ ਸਮੇਂ ਵਿੱਚ ਬਹੁਤ ਜਗ੍ਹਾ ਹੋ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਕੁਝ ਮੁੱਖ ਖੇਤਰ ਜਿੱਥੇ ਏ.ਆਈ. ਵਰਤਿਆ ਜਾ ਰਿਹਾ ਹੈ, ਉਹ ਹਨ:

1. **ਸਿਹਤਖੇਤਰ:** ਕ੍ਰਿਤ੍ਰਿਮ ਬੁੱਧੀ ਨੂੰ ਸਿਹਤ ਖੇਤਰ ਵਿੱਚ ਬਹੁਤ ਹੀ ਪ੍ਰਭਾਵਸ਼ਾਲੀ ਤਰੀਕੇ ਨਾਲ ਵਰਤਿਆ ਜਾ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਡੀਪ ਲਰਨਿੰਗ ਮਾਡਲ ਦਾ ਉਪਯੋਗ ਰੋਗ ਨਿਸ਼ਚਿਤ ਕਰਨ, ਇਮੇਜ ਰੇਕਗਨਿਸ਼ਨ, ਅਤੇ ਔਜ਼ਾਰ ਤਿਆਰ ਕਰਨ ਵਿੱਚ ਹੋ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਇਸ ਨਾਲ ਡਾਕਟਰਾਂ ਨੂੰ ਰੋਗ ਪਛਾਣ ਕਰਨ ਅਤੇ ਇਲਾਜ ਦੀ ਸਮਝ ਨੂੰ ਬਹਿਰਤਰ ਬਣਾਉਣ ਵਿੱਚ ਮਦਦ ਮਿਲ ਰਹੀ ਹੈ।
2. **ਆਟੋਮੋਬਾਈਲ ਇੰਡਸਟਰੀ:** ਆਟੋਮੋਬਾਈਲ ਉਦਯੋਗ ਵਿੱਚ ਵੀ ਕ੍ਰਿਤ੍ਰਿਮ ਬੁੱਧੀ ਦਾ ਵਰਤੋਂ ਹੋ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਸਵੈ-ਚਲਿਤ ਵਾਹਨਾਂ ਵਿੱਚ ਏ.ਆਈ. ਦਾ ਇਸਤੇਮਾਲ ਖਾਸ ਤੌਰ 'ਤੇ ਸੜਕ ਉੱਤੇ ਹੋਣ ਵਾਲੀਆਂ ਚੁਣੌਤੀਆਂ ਨੂੰ ਸਮਝਣ ਅਤੇ ਹੱਲ ਕਰਨ ਲਈ ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਨਾਲ ਸੜਕਾਂ 'ਤੇ ਹੋਣ ਵਾਲੇ ਹਾਦਸੇ ਘਟਾ ਸਕਦੇ ਹਨ ਅਤੇ ਆਧੁਨਿਕ ਵਾਹਨ ਹੋਰ ਸੁਰੱਖਿਅਤ ਹੋ ਸਕਦੇ ਹਨ।
3. **ਵਪਾਰ ਅਤੇ ਬਿਜਨਸ:** ਕ੍ਰਿਤ੍ਰਿਮ ਬੁੱਧੀ ਬਿਜਨਸ ਵਿੱਚ ਵੀ ਵਰਤੀ ਜਾ ਰਹੀ ਹੈ ਜਿਵੇਂ ਕਿ ਖੁਦਕਾਰ ਵਿਗਿਆਪਨ, ਉਪਭੋਗਤਾ ਸੇਵਾਵਾਂ, ਅਤੇ ਆਨਲਾਈਨ ਰਿਪੋਰਟਿੰਗ ਵਿੱਚ। ਖਰੀਦਦਾਰੀ ਦੇ ਰੁਝਾਨਾਂ ਅਤੇ ਗ੍ਰਾਹਕਾਂ ਦੀ ਜ਼ਰੂਰਤਾਂ ਨੂੰ ਸਮਝ ਕੇ ਬਿਜਨਸ ਅਸਾਨੀ ਨਾਲ ਆਪਣੇ ਉਤਪਾਦ ਅਤੇ ਸੇਵਾਵਾਂ ਨੂੰ ਅਨੁਕੂਲ ਬਣਾ ਸਕਦੇ ਹਨ।
4. **ਮਾਨਵ ਕੰਮ:** ਖੇਤੀਬਾੜੀ, ਉਤਪਾਦਨ, ਅਤੇ ਹੋਰ ਸੇਵਾਵਾਂ ਵਿੱਚ ਏ.ਆਈ. ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਕਰਕੇ ਮਨੁੱਖੀ ਹੱਥ ਦਾ ਕੰਮ ਘਟਾਇਆ ਜਾ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਰੇਬੋਟਿਕ ਅਤੇ ਮਸ਼ੀਨ ਵਧੀਆ ਤੇਜ਼ੀ ਨਾਲ ਕੰਮ ਕਰ ਰਹੇ ਹਨ ਅਤੇ ਜ਼ਿਆਦਾ ਸੁਚੱਜੀ ਅਤੇ ਲੰਬੇ ਸਮੇਂ ਤੱਕ ਕੰਮ ਕਰਨ ਦੇ ਯੋਗ ਹੋ ਰਹੇ ਹਨ।

ਕ੍ਰਿਤ੍ਰਿਮ ਬੁੱਧੀ ਦੇ ਫਾਇਦੇ

1. **ਸੁਗਮਤਾ:** ਏ.ਆਈ. ਦੁਆਰਾ ਕੀਤੇ ਗਏ ਕੰਮ ਮਨੁੱਖੀ ਅਨੁਭਵ ਤੋਂ ਬਿਨਾਂ ਬਿਹਤਰ ਅਤੇ ਤੇਜ਼ ਹੋ ਸਕਦੇ ਹਨ।
2. **ਅਸਰਦਾਰ ਤੇ ਭਰੋਸੇਯੋਗ:** ਕ੍ਰਿਤ੍ਰਿਮ ਬੁੱਧੀ ਤਕਨੀਕੀ ਗਲਤੀਆਂ ਦੇ ਖਤਰੇ ਨੂੰ ਘਟਾ ਦਿੰਦੀ ਹੈ।
3. **ਸਮੱਸਿਆਵਾਂ ਦਾ ਹੱਲ:** ਕ੍ਰਿਤ੍ਰਿਮ ਬੁੱਧੀ ਜਦੋਂ ਹਰ ਪ੍ਰਸਥਿਤੀ ਨੂੰ ਮੰਨ ਕੇ ਸੋਚਦੀ ਹੈ, ਤਾਂ ਇਹ ਜ਼ਿਆਦਾ ਕਾਰਗਰ ਫੈਸਲੇ ਲੈ ਸਕਦੀ ਹੈ।

ਕ੍ਰਿਤ੍ਰਿਮ ਬੁੱਧੀ ਦੇ ਨੁਕਸਾਨ

1. **ਰੋਜ਼ਗਾਰ 'ਤੇ ਅਸਰ:** ਕ੍ਰਿਤ੍ਰਿਮ ਬੁੱਧੀ ਦੇ ਨਾਲ, ਬਹੁਤ ਸਾਰੇ ਰੋਜ਼ਗਾਰ ਖਤਮ ਹੋ ਸਕਦੇ ਹਨ ਅਤੇ ਲੋਕ ਆਪਣੀਆਂ ਨੌਕਰੀਆਂ ਤੋਂ ਹੱਥ ਧੋ ਸਕਦੇ ਹਨ।
2. **ਗੁਪਤਤਾ ਅਤੇ ਸੁਰੱਖਿਆ:** ਕ੍ਰਿਤ੍ਰਿਮ ਬੁੱਧੀ ਨਾਲ ਜੁੜੀਆਂ ਟੈਕਨੋਲੋਜੀਆਂ ਲੋਕਾਂ ਦੀ ਗੁਪਤਤਾ ਨੂੰ ਖਤਰੇ ਵਿੱਚ ਪਾ ਸਕਦੀਆਂ ਹਨ ਅਤੇ ਸੁਰੱਖਿਆ ਦੇ ਚੁਣੌਤੀ ਖੜੀ ਕਰ ਸਕਦੀਆਂ ਹਨ।
3. **ਨੈਤਿਕ ਸਮੱਸਿਆਵਾਂ:** ਕ੍ਰਿਤ੍ਰਿਮ ਬੁੱਧੀ ਨਾਲ ਜੁੜੀਆਂ ਨੈਤਿਕ ਸਮੱਸਿਆਵਾਂ ਵੀ ਉਭਰ ਰਹੀਆਂ ਹਨ ਜਿਵੇਂ ਕਿ ਕਿ ਇਹ ਮਸ਼ੀਨਾਂ ਮਨੁੱਖੀ ਹੱਕਾਂ ਨੂੰ ਤੋੜ ਸਕਦੀਆਂ ਹਨ।

ਭਵਿੱਖ ਵਿੱਚ ਕ੍ਰਿਤ੍ਰਿਮ ਬੁੱਧੀ

ਕ੍ਰਿਤ੍ਰਿਮ ਬੁੱਧੀ ਦਾ ਭਵਿੱਖ ਬਹੁਤ ਹੀ ਰੋਮਾਂਚਕ ਅਤੇ ਚੁਣੌਤੀਪੂਰਨ ਹੋ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ-ਜਿਵੇਂ ਇਸ ਤਕਨੀਕ ਵਿੱਚ ਵਿਕਾਸ ਹੋਵੇਗਾ, ਇਹ ਬਹੁਤ ਜ਼ਿਆਦਾ ਖੇਤਰਾਂ ਵਿੱਚ ਅਸਰ ਦਿਖਾ ਸਕਦੀ ਹੈ। ਇਹ ਸਾਡੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਵਿੱਚ ਅਤੇ ਦਿਨ-ਪ੍ਰਤੀ ਦਿਨ ਦੇ ਕੰਮਕਾਜ ਵਿੱਚ ਇੱਕ ਨਵਾਂ ਤਰੀਕਾ ਲਿਆ ਸਕਦੀ ਹੈ। **ਨਿਸ਼ਕਰਸ਼** ਕ੍ਰਿਤ੍ਰਿਮ ਬੁੱਧੀ ਸਾਡੀ ਦੁਨੀਆਂ ਨੂੰ ਬਦਲਣ ਦੀ ਖੂਬੀ ਰੱਖਦੀ ਹੈ। ਇਸ ਨਾਲ ਸੰਸਾਰ ਦੇ ਹਰ ਖੇਤਰ ਵਿੱਚ ਇਨੋਵੇਸ਼ਨ ਅਤੇ ਪ੍ਰਗਤੀ ਹੋ ਸਕਦੀ ਹੈ। ਪਰ ਇਸ ਨਾਲ ਜੁੜੀਆਂ ਚੁਣੌਤੀਆਂ ਅਤੇ ਨੈਤਿਕ ਸਮੱਸਿਆਵਾਂ ਨੂੰ ਵੀ ਸਾਵਧਾਨੀ ਨਾਲ ਸੰਭਾਲਣਾ ਜ਼ਰੂਰੀ ਹੈ।

ਕੋਮਲ

ਕਲਾਸ-ਬੀ. ਏ. ਪਹਿਲਾ ਸਾਲ, ਰੋਲ ਨੰ.-24/0282

ਸਿੱਖ ਧਰਮ ਦੇ ਦਸ ਗੁਰੂਆਂ ਦੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਅਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀਆਂ ਸਿੱਖਿਆਵਾਂ

ਸਿੱਖ ਧਰਮ ਦੇ ਦਸ ਗੁਰੂ-ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇਵ ਜੀ, ਗੁਰੂ ਅੰਗਦ ਦੇਵ ਜੀ, ਗੁਰੂ ਅਮਰ ਦਾਸ ਜੀ, ਗੁਰੂ ਰਾਮ ਦਾਸ ਜੀ, ਗੁਰੂ ਅਰਜਨ ਦੇਵ ਜੀ, ਗੁਰੂ ਹਰਿਗੋਬਿੰਦ ਸਾਹਿਬ ਜੀ, ਗੁਰੂ ਹਰਿਰਾਇ ਜੀ, ਗੁਰੂ ਹਰਿਕ੍ਰਿਸ਼ਨ ਜੀ, ਗੁਰੂ ਤੇਗ ਬਹਾਦਰ ਜੀ ਅਤੇ ਗੁਰੂ ਗੋਬਿੰਦ ਸਿੰਘ ਜੀ-ਸਿੱਖ ਇਤਿਹਾਸ ਅਤੇ ਪੰਜਾਬ ਦੀ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤੀ ਵਿੱਚ ਬਹੁਤ ਮਹੱਤਵਪੂਰਨ ਸਥਾਨ ਰੱਖਦੇ ਹਨ। ਇਨ੍ਹਾਂ ਗੁਰੂਆਂ ਨੇ ਮਨੁੱਖਤਾ ਨੂੰ ਸੱਚਾਈ, ਸਮਾਨਤਾ, ਸੇਵਾ ਅਤੇ ਨਿਆਂ ਦਾ ਰਾਹ ਦਿਖਾਇਆ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਸਮਾਜ ਵਿੱਚ ਫੈਲੀ ਕੁਰੀਤੀਆਂ ਅਤੇ ਅੰਧਵਿਸ਼ਵਾਸਾਂ ਦਾ ਵਿਰੋਧ ਕੀਤਾ ਅਤੇ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਇਕਤਾ ਅਤੇ ਭਾਈਚਾਰੇ ਦਾ ਸੁਨੇਹਾ ਦਿੱਤਾ। ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇਵ ਜੀ ਤੋਂ ਲੈ ਕੇ ਗੁਰੂ ਗੋਬਿੰਦ ਸਿੰਘ ਜੀ ਤੱਕ, ਹਰ ਗੁਰੂ ਨੇ ਸਿੱਖ ਧਰਮ ਨੂੰ ਮਜ਼ਬੂਤ ਬਣਾਇਆ ਅਤੇ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਆਤਮਿਕ ਤੇ ਸਮਾਜਿਕ ਤੌਰ 'ਤੇ ਉੱਚਾ ਉਠਾਇਆ। ਖਾਸ ਕਰਕੇ ਖਾਲਸਾ ਪੰਥ ਦੀ ਸਥਾਪਨਾ ਅਤੇ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਨੂੰ ਸਦੀਵੀ ਗੁਰੂ ਬਣਾਉਣਾ ਇਤਿਹਾਸਕ ਮੋੜ ਸਾਬਤ ਹੋਇਆ। ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਇਤਿਹਾਸ ਵਿੱਚ ਇਹ ਗੁਰੂ ਸਾਹਿਬਾਨ ਸਿਰਫ ਧਾਰਮਿਕ ਹੀ ਨਹੀਂ, ਸਗੋਂ ਸਮਾਜਿਕ ਤੇ ਸੱਭਿਆਚਾਰਕ ਮਾਰਗਦਰਸ਼ਕ ਵੀ ਹਨ।

1. ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇਵ ਜੀ

ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇਵ ਜੀ ਸਿੱਖ ਧਰਮ ਦੇ ਪਹਿਲੇ ਗੁਰੂ ਅਤੇ ਸੰਸਥਾਪਕ ਸਨ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਜਨਮ 1469 ਵਿੱਚ ਤਲਵੰਡੀ (ਨਨਕਾਣਾ ਸਾਹਿਬ) ਵਿੱਚ ਹੋਇਆ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ “ਇੱਕ ਓਅੰਕਾਰ” ਦਾ ਸਿਧਾਂਤ ਦਿੱਤਾ, ਜਿਸਦਾ ਅਰਥ ਹੈ ਕਿ ਪਰਮਾਤਮਾ ਇੱਕ ਹੈ। ਗੁਰੂ ਜੀ ਨੇ ਜਾਤ-ਪਾਤ, ਅੰਧਵਿਸ਼ਵਾਸ ਅਤੇ ਝੂਠੀਆਂ ਰਸਮਾਂ ਦਾ ਵਿਰੋਧ ਕੀਤਾ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਸੱਚ ਬੋਲਣ, ਮਿਹਨਤ ਕਰਨ (ਕਿਰਤ ਕਰੋ), ਅਤੇ ਵੰਡ ਕੇ ਖਾਣ (ਵੰਡ ਛਕੋ) ਦੀ ਸਿੱਖਿਆ ਦਿੱਤੀ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਆਪਣੇ ਸਾਥੀ ਭਾਈ ਮਰਦਾਨਾ ਨਾਲ ਕਈ ਦੇਸ਼ਾਂ ਦੀਆਂ ਯਾਤਰਾਵਾਂ ਕੀਤੀਆਂ, ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਉਦਾਸੀਆਂ ਕਿਹਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਗੁਰੂ ਜੀ ਦਾ ਸੁਨੇਹਾ

ਸਾਦਗੀ, ਪਿਆਰ ਅਤੇ ਮਨੁੱਖਤਾ 'ਤੇ ਆਧਾਰਿਤ ਸੀ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਸਭ ਨੂੰ ਇਕਸਾਰ ਮੰਨਿਆ ਅਤੇ ਸੱਚੇ ਜੀਵਨ ਦੀ ਮਹੱਤਤਾ ਦੱਸੀ।

2. ਗੁਰੂ ਅੰਗਦ ਦੇਵ ਜੀ

ਗੁਰੂ ਅੰਗਦ ਦੇਵ ਜੀ ਸਿੱਖ ਧਰਮ ਦੇ ਦੂਜੇ ਗੁਰੂ ਸਨ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਅਸਲੀ ਨਾਮ ਲਹਿਣਾ ਸੀ। ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇਵ ਜੀ ਨੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਸੇਵਾ ਅਤੇ ਨਿਮਰਤਾ ਤੋਂ ਪ੍ਰਭਾਵਿਤ ਹੋ ਕੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਗੁਰੂ ਬਣਾਇਆ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਗੁਰਮੁਖੀ ਲਿਪੀ ਨੂੰ ਪ੍ਰਚਲਿਤ ਕੀਤਾ, ਜਿਸ ਨਾਲ ਸਿੱਖ ਧਰਮ ਦੀ ਸਿੱਖਿਆ ਆਮ ਲੋਕਾਂ ਤੱਕ ਪਹੁੰਚੀ। ਗੁਰੂ ਜੀ ਨੇ ਸਿੱਖਿਆ ਅਤੇ ਸਰੀਰਕ ਤੰਦਰੁਸਤੀ ਉੱਤੇ ਵੀ ਜ਼ੋਰ ਦਿੱਤਾ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਮੱਲ ਅਖਾੜਿਆਂ ਦੀ ਪ੍ਰਥਾ ਸ਼ੁਰੂ ਕੀਤੀ ਤਾਂ ਜੋ ਨੌਜਵਾਨ ਤੰਦਰੁਸਤ ਰਹਿਣ। ਲੰਗਰ ਪ੍ਰਥਾ ਨੂੰ ਹੋਰ ਮਜ਼ਬੂਤ ਕੀਤਾ ਗਿਆ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਸਿੱਖਿਆ ਸਾਦਗੀ, ਸੇਵਾ ਅਤੇ ਅਨੁਸ਼ਾਸਨ 'ਤੇ ਆਧਾਰਿਤ ਸੀ।

3. ਗੁਰੂ ਅਮਰ ਦਾਸ ਜੀ

ਗੁਰੂ ਅਮਰ ਦਾਸ ਜੀ ਤੀਜੇ ਗੁਰੂ ਸਨ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ 73 ਸਾਲ ਦੀ ਉਮਰ ਵਿੱਚ ਗੁਰੂ ਗੱਦੀ ਸੰਭਾਲੀ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਸਮਾਜਿਕ ਸੁਧਾਰਾਂ ਉੱਤੇ ਬਹੁਤ ਜ਼ੋਰ ਦਿੱਤਾ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਸਤੀ ਪ੍ਰਥਾ ਅਤੇ ਪੁਰਦਾ ਪ੍ਰਥਾ ਦਾ ਵਿਰੋਧ ਕੀਤਾ ਅਤੇ ਔਰਤਾਂ ਨੂੰ ਸਮਾਨ ਅਧਿਕਾਰ ਦਿੱਤੇ। ਗੁਰੂ ਜੀ ਨੇ ਲੰਗਰ ਦੀ ਪ੍ਰਥਾ ਨੂੰ ਲਾਜ਼ਮੀ ਬਣਾਇਆ — “ਪਹਿਲਾਂ ਪੰਗਤ ਫਿਰ ਸੰਗਤ।” ਇਸਦਾ ਮਤਲਬ ਸੀ ਕਿ ਹਰ ਕੋਈ ਇਕੱਠੇ ਬੈਠ ਕੇ ਖਾਣ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਹੀ ਦਰਸ਼ਨ ਕਰ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਮਨੁੱਖਤਾ ਅਤੇ ਸਮਾਨਤਾ ਦਾ ਸੁਨੇਹਾ ਦਿੱਤਾ ਅਤੇ ਸਿੱਖ ਧਰਮ ਨੂੰ ਮਜ਼ਬੂਤ ਕੀਤਾ।

4. ਗੁਰੂ ਰਾਮ ਦਾਸ ਜੀ

ਗੁਰੂ ਰਾਮ ਦਾਸ ਜੀ ਚੌਥੇ ਗੁਰੂ ਸਨ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ ਸ਼ਹਿਰ ਦੀ ਸਥਾਪਨਾ ਕੀਤੀ, ਜੋ ਅੱਜ ਸਿੱਖ ਧਰਮ ਦਾ ਮੁੱਖ ਕੇਂਦਰ ਹੈ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਹਰਿਮੰਦਰ ਸਾਹਿਬ ਦੀ ਨੀਂਹ ਰੱਖੀ। ਗੁਰੂ ਜੀ ਨੇ ਲਾਵਾਂ

ਦੀ ਰਚਨਾ ਕੀਤੀ, ਜੋ ਸਿੱਖ ਵਿਆਹ ਸਮਾਰੋਹ ਦਾ ਮਹੱਤਵਪੂਰਨ ਹਿੱਸਾ ਹਨ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਸੇਵਾ, ਨਿਮਰਤਾ ਅਤੇ ਭਗਤੀ ਦਾ ਸੁਨੇਹਾ ਦਿੱਤਾ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਸਮੇਂ ਵਿੱਚ ਸਿੱਖ ਧਰਮ ਹੋਰ ਵੀ ਫੈਲਿਆ।

5. ਗੁਰੂ ਅਰਜਨ ਦੇਵ ਜੀ

ਗੁਰੂ ਅਰਜਨ ਦੇਵ ਜੀ ਪੰਜਵੇਂ ਗੁਰੂ ਸਨ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਆਦਿ ਗ੍ਰੰਥ ਦੀ ਸੰਪਾਦਨਾ ਕੀਤੀ ਅਤੇ ਇਸ ਨੂੰ ਹਰਿਮੰਦਰ ਸਾਹਿਬ ਵਿੱਚ ਸਥਾਪਿਤ ਕੀਤਾ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ ਨੂੰ ਇੱਕ ਧਾਰਮਿਕ ਕੇਂਦਰ ਵਜੋਂ ਵਿਕਸਤ ਕੀਤਾ। ਗੁਰੂ ਜੀ ਪਹਿਲੇ ਸਿੱਖ ਸ਼ਹੀਦ ਸਨ, ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਧਰਮ ਅਤੇ ਸੱਚਾਈ ਲਈ ਆਪਣੀ ਜਾਨ ਕੁਰਬਾਨ ਕੀਤੀ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਸ਼ਹਾਦਤ ਸਿੱਖ ਇਤਿਹਾਸ ਵਿੱਚ ਬਹੁਤ ਮਹੱਤਵਪੂਰਨ ਹੈ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਸਬਰ, ਸਹਿਨਸ਼ੀਲਤਾ ਅਤੇ ਭਗਤੀ ਦਾ ਪਾਠ ਪੜ੍ਹਾਇਆ।

6. ਗੁਰੂ ਹਰਿਗੋਬਿੰਦ ਸਾਹਿਬ ਜੀ

ਗੁਰੂ ਹਰਿਗੋਬਿੰਦ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਛੇਵੇਂ ਗੁਰੂ ਸਨ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਮੀਰੀ-ਪੀਰੀ ਦਾ ਸਿਧਾਂਤ ਦਿੱਤਾ, ਜਿਸਦਾ ਮਤਲਬ ਹੈ ਧਾਰਮਿਕ ਅਤੇ ਰਾਜਨੀਤਿਕ ਦੋਹਾਂ ਤਾਕਤਾਂ ਦਾ ਸੰਤੁਲਨ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਅਕਾਲ ਤਖ਼ਤ ਦੀ ਸਥਾਪਨਾ ਕੀਤੀ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਸਿੱਖਾਂ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਅਧਿਕਾਰਾਂ ਦੀ ਰੱਖਿਆ ਲਈ ਤਿਆਰ ਕੀਤਾ ਅਤੇ ਯੋਧਾ ਰੂਪ ਵਿੱਚ ਵੀ ਤਿਆਰ ਕੀਤਾ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਸਿੱਖਿਆ ਹਿੰਮਤ ਅਤੇ ਨਿਆਂ 'ਤੇ ਆਧਾਰਿਤ ਸੀ।

7. ਗੁਰੂ ਹਰਿਰਾਇ ਜੀ

ਗੁਰੂ ਹਰਿਰਾਇ ਜੀ ਸੱਤਵੇਂ ਗੁਰੂ ਸਨ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਪ੍ਰਕਿਰਤੀ ਅਤੇ ਜੀਵਾਂ ਨਾਲ ਪਿਆਰ ਕਰਨ ਦੀ ਸਿੱਖਿਆ ਦਿੱਤੀ। ਉਹ ਬਹੁਤ ਦਿਆਲੂ ਅਤੇ ਨਰਮ ਦਿਲ ਸਨ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਦਵਾਈਆਂ ਅਤੇ ਸੇਵਾ ਦੇ ਰਾਹੀਂ ਲੋਕਾਂ ਦੀ ਮਦਦ ਕੀਤੀ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਜੀਵਨ ਸੇਵਾ ਅਤੇ ਦਇਆ ਦਾ ਪ੍ਰਤੀਕ ਸੀ।

8. ਗੁਰੂ ਹਰਿਕ੍ਰਿਸ਼ਨ ਜੀ

ਗੁਰੂ ਹਰਿਕ੍ਰਿਸ਼ਨ ਜੀ ਅੱਠਵੇਂ ਗੁਰੂ ਸਨ ਅਤੇ ਸਭ ਤੋਂ ਛੋਟੇ ਗੁਰੂ ਸਨ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਬਚਪਨ ਵਿੱਚ ਹੀ ਗੁਰੂ ਗੱਦੀ ਸੰਭਾਲੀ। ਦਿੱਲੀ ਵਿੱਚ ਮਹਾਮਾਰੀ ਦੇ ਸਮੇਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਬਿਮਾਰ ਲੋਕਾਂ ਦੀ ਸੇਵਾ ਕੀਤੀ ਅਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਮਦਦ ਕੀਤੀ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਨਿਮਰਤਾ ਅਤੇ ਦਇਆ ਨੇ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਬਹੁਤ ਪ੍ਰਭਾਵਿਤ ਕੀਤਾ।

9. ਗੁਰੂ ਤੇਗ ਬਹਾਦਰ ਜੀ

ਗੁਰੂ ਤੇਗ ਬਹਾਦਰ ਜੀ ਨੌਵੇਂ ਗੁਰੂ ਸਨ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਧਰਮ ਦੀ ਆਜ਼ਾਦੀ ਲਈ ਆਪਣੀ ਸ਼ਹਾਦਤ ਦਿੱਤੀ। ਉਹ ਬਹੁਤ ਬਹਾਦਰ ਅਤੇ ਨਿਡਰ ਸਨ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਸੱਚਾਈ ਅਤੇ ਧਰਮ ਦੇ ਰਾਹ 'ਤੇ ਚੱਲਣ ਦੀ ਪ੍ਰੇਰਣਾ ਦਿੱਤੀ।

10. ਗੁਰੂ ਗੋਬਿੰਦ ਸਿੰਘ ਜੀ

ਗੁਰੂ ਗੋਬਿੰਦ ਸਿੰਘ ਜੀ ਦਸਵੇਂ ਗੁਰੂ ਸਨ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ 1699 ਵਿੱਚ ਖਾਲਸਾ ਪੰਥ ਦੀ ਸਥਾਪਨਾ ਕੀਤੀ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਸਿੱਖਾਂ ਨੂੰ ਬਹਾਦਰੀ, ਅਨੁਸ਼ਾਸਨ ਅਤੇ ਧਰਮ ਦੀ ਰੱਖਿਆ ਲਈ ਤਿਆਰ ਕੀਤਾ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਨੂੰ ਸਦੀਵੀ ਗੁਰੂ ਘੋਸ਼ਿਤ ਕੀਤਾ।

ਨਿਸ਼ਕਰਸ਼

ਦਸ ਗੁਰੂਆਂ ਨੇ ਮਨੁੱਖਤਾ ਨੂੰ ਸੱਚਾਈ, ਸੇਵਾ, ਨਿਮਰਤਾ ਅਤੇ ਬਹਾਦਰੀ ਦਾ ਰਾਹ ਦਿਖਾਇਆ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀਆਂ ਸਿੱਖਿਆਵਾਂ ਅੱਜ ਵੀ ਸਾਡੇ ਜੀਵਨ ਲਈ ਪ੍ਰੇਰਣਾ ਦਾ ਸਰੋਤ ਹਨ।

ਅਵਨੀ

ਰੋਲ ਨੰਬਰ – 24/0280

ਇਰਾਨ-ਇਜ਼ਰਾਈਲ ਯੁੱਧ ਦਾ ਭਾਰਤੀ ਸਮਾਜ 'ਤੇ ਪ੍ਰਭਾਵ

ਭੂਮਿਕਾ

ਅੱਜ ਦੇ ਸਮੇਂ ਵਿੱਚ ਦੁਨੀਆ ਪਹਿਲਾਂ ਨਾਲੋਂ ਕਾਫੀ ਜ਼ਿਆਦਾ ਜੁੜੀ ਹੋਈ ਹੈ ਅਤੇ ਕਿਸੇ ਇੱਕ ਦੇਸ਼ ਵਿੱਚ ਹੋਣ ਵਾਲੀ ਘਟਨਾ ਦਾ ਅਸਰ ਹੋਰ ਦੇਸ਼ਾਂ 'ਤੇ ਵੀ ਪੈਂਦਾ ਹੈ। ਇਰਾਨ ਅਤੇ ਇਜ਼ਰਾਈਲ ਦੇ ਵਿਚਕਾਰ ਚੱਲ ਰਿਹਾ ਤਣਾਅ ਹੁਣ ਇੱਕ ਵੱਡੀ ਸਮੱਸਿਆ ਬਣ ਗਿਆ ਹੈ ਅਤੇ ਖ਼ਬਰਾਂ ਵਿੱਚ ਵੀ ਇਹ ਬਹੁਤ ਵਾਰ ਦਿਖਾਈ ਦਿੰਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਯੁੱਧ ਦੀ ਸਥਿਤੀ ਨੇ ਲੋਕਾਂ ਵਿੱਚ ਡਰ ਅਤੇ ਚਿੰਤਾ ਪੈਦਾ ਕਰ ਦਿੱਤੀ ਹੈ। ਭਾਰਤ ਇਸ ਯੁੱਧ ਵਿੱਚ ਸਿੱਧਾ ਸ਼ਾਮਲ ਨਹੀਂ ਹੈ, ਪਰ ਮੱਧ-ਪੂਰਬ ਦੇ ਦੇਸ਼ਾਂ ਨਾਲ ਸਾਡੇ ਵਪਾਰ ਅਤੇ ਰੋਜ਼ਗਾਰ ਦੇ ਸੰਬੰਧ ਹਨ। ਇਸ ਕਰਕੇ ਇਸ ਯੁੱਧ ਦਾ ਅਸਰ ਸਾਡੇ ਸਮਾਜ 'ਤੇ ਵੀ ਪੈਂਦਾ ਹੈ। ਆਮ ਲੋਕਾਂ ਦੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਵਿੱਚ ਵੀ ਇਸਦਾ ਪ੍ਰਭਾਵ ਵੇਖਣ ਨੂੰ ਮਿਲਦਾ ਹੈ, ਖ਼ਾਸ ਕਰਕੇ ਖਰਚ ਅਤੇ ਨੌਕਰੀਆਂ ਵਿੱਚ।

ਯੁੱਧ ਦੀ ਮੌਜੂਦਾ ਸਥਿਤੀ

ਇਰਾਨ ਅਤੇ ਇਜ਼ਰਾਈਲ ਵਿਚਕਾਰ ਕਾਫੀ ਸਮੇਂ ਤੋਂ ਤਣਾਅ ਚੱਲ ਰਿਹਾ ਸੀ, ਪਰ ਹੁਣ ਇਹ ਹੋਰ ਵੱਧ ਗਿਆ ਹੈ। ਹਾਲੀਆ ਸਮੇਂ ਵਿੱਚ ਹਮਲਿਆਂ ਅਤੇ ਧਮਕੀਆਂ ਵਿੱਚ ਵਾਧਾ ਹੋਇਆ ਹੈ, ਜਿਸ ਨਾਲ ਮੱਧ-ਪੂਰਬ ਵਿੱਚ ਹਾਲਾਤ ਅਸਥਿਰ ਹੋ ਗਏ ਹਨ। ਇਹ ਸਥਿਤੀ ਸਿਰਫ ਉਥੇ ਦੇ ਦੇਸ਼ਾਂ ਲਈ ਹੀ ਨਹੀਂ, ਸਗੋਂ ਪੂਰੀ ਦੁਨੀਆ ਲਈ ਚਿੰਤਾ ਦਾ ਵਿਸ਼ਾ ਬਣ ਗਈ ਹੈ। ਜਦੋਂ ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੇ ਹਾਲਾਤ ਬਣਦੇ ਹਨ, ਤਾਂ ਵਪਾਰ ਅਤੇ ਆਵਾਜਾਈ 'ਤੇ ਵੀ ਅਸਰ ਪੈਂਦਾ ਹੈ। ਖ਼ਾਸ ਕਰਕੇ ਤੇਲ ਦੇ ਰਸਤੇ ਪ੍ਰਭਾਵਿਤ ਹੁੰਦੇ ਹਨ, ਜਿਸਦਾ ਸਿੱਧਾ ਅਸਰ ਭਾਰਤ ਵਰਗੇ ਦੇਸ਼ਾਂ 'ਤੇ ਪੈਂਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਕਰਕੇ ਇਹ ਯੁੱਧ ਸਾਡੇ ਲਈ ਵੀ ਮਹੱਤਵਪੂਰਨ ਬਣ ਜਾਂਦਾ ਹੈ।

ਇੰਧਨ ਦੀਆਂ ਕੀਮਤਾਂ 'ਤੇ ਅਸਰ

ਭਾਰਤ ਆਪਣੀ ਜ਼ਰੂਰਤ ਦਾ ਵੱਡਾ ਹਿੱਸਾ ਤੇਲ ਬਾਹਰਲੇ ਦੇਸ਼ਾਂ ਤੋਂ ਮੰਗਵਾਉਂਦਾ ਹੈ। ਜਦੋਂ ਯੁੱਧ ਕਾਰਨ ਸਪਲਾਈ ਵਿੱਚ ਰੁਕਾਵਟ ਆਉਂਦੀ ਹੈ, ਤਾਂ ਤੇਲ ਦੀਆਂ ਕੀਮਤਾਂ ਵਧ ਜਾਂਦੀਆਂ ਹਨ। ਇਸ ਨਾਲ ਪੈਟਰੋਲ ਅਤੇ ਡੀਜ਼ਲ ਮਹਿੰਗੇ ਹੋ ਜਾਂਦੇ ਹਨ ਅਤੇ ਇਸਦਾ ਅਸਰ ਹਰ ਵਿਅਕਤੀ 'ਤੇ ਪੈਂਦਾ ਹੈ। ਇਸ

ਨਾਲ ਸਿਰਫ ਆਵਾਜਾਈ ਦਾ ਖਰਚ ਹੀ ਨਹੀਂ ਵਧਦਾ, ਸਗੋਂ ਹੋਰ ਚੀਜ਼ਾਂ ਦੀਆਂ ਕੀਮਤਾਂ ਵੀ ਵਧ ਜਾਂਦੀਆਂ ਹਨ। ਆਮ ਘਰਾਂ ਵਿੱਚ ਮਹੀਨਾਵਾਰ ਖਰਚ ਵਧ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਖਰਚਾਂ ਨੂੰ ਸੰਭਾਲਣਾ ਔਖਾ ਲੱਗਦਾ ਹੈ। ਇਹ ਸਮੱਸਿਆ ਖਾਸ ਕਰਕੇ ਮੱਧ ਵਰਗ ਲਈ ਵੱਡੀ ਚਿੰਤਾ ਬਣ ਜਾਂਦੀ ਹੈ।

ਮਹਿੰਗਾਈ ਦਾ ਵਧਣਾ

ਜਦੋਂ ਇੰਧਨ ਦੀਆਂ ਕੀਮਤਾਂ ਵਧਦੀਆਂ ਹਨ, ਤਾਂ ਇਸਦਾ ਅਸਰ ਹੋਰ ਚੀਜ਼ਾਂ 'ਤੇ ਵੀ ਪੈਂਦਾ ਹੈ। ਖਾਣ-ਪੀਣ ਦੀਆਂ ਵਸਤੂਆਂ, ਕੱਪੜੇ ਅਤੇ ਹੋਰ ਦਿਨਚਰਿਆ ਦੀਆਂ ਚੀਜ਼ਾਂ ਮਹਿੰਗੀਆਂ ਹੋ ਜਾਂਦੀਆਂ ਹਨ। ਇਸ ਨਾਲ ਮਹਿੰਗਾਈ ਵਧਦੀ ਹੈ ਅਤੇ ਆਮ ਲੋਕਾਂ ਲਈ ਜੀਵਨ ਜਿਉਣਾ ਔਖਾ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਸਥਿਤੀ ਵਿੱਚ ਗਰੀਬ ਅਤੇ ਮੱਧ ਵਰਗ ਦੇ ਲੋਕ ਸਭ ਤੋਂ ਵੱਧ ਪ੍ਰਭਾਵਿਤ ਹੁੰਦੇ ਹਨ। ਉਹਨਾਂ ਲਈ ਬਚਤ ਕਰਨਾ ਮੁਸ਼ਕਿਲ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਕਈ ਵਾਰ ਉਹਨਾਂ ਨੂੰ ਆਪਣੀਆਂ ਜ਼ਰੂਰਤਾਂ ਘਟਾਉਣੀਆਂ ਪੈਂਦੀਆਂ ਹਨ। ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਯੁੱਧ ਦਾ ਸਿੱਧਾ ਅਸਰ ਲੋਕਾਂ ਦੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ 'ਤੇ ਪੈਂਦਾ ਹੈ।

ਕਿਸਾਨੀ 'ਤੇ ਪ੍ਰਭਾਵ

ਭਾਰਤ ਵਿੱਚ ਬਹੁਤ ਸਾਰੇ ਲੋਕ ਕਿਸਾਨੀ ਨਾਲ ਜੁੜੇ ਹੋਏ ਹਨ। ਯੁੱਧ ਦੇ ਕਾਰਨ ਖਾਦ ਅਤੇ ਹੋਰ ਚੀਜ਼ਾਂ ਮਹਿੰਗੀਆਂ ਹੋ ਜਾਂਦੀਆਂ ਹਨ, ਜਿਸ ਨਾਲ ਕਿਸਾਨਾਂ ਦੀ ਲਾਗਤ ਵਧਦੀ ਹੈ। ਜੇ ਲਾਗਤ ਵਧਦੀ ਹੈ, ਤਾਂ ਕਿਸਾਨਾਂ ਨੂੰ ਮੁਸ਼ਕਲਾਂ ਦਾ ਸਾਹਮਣਾ ਕਰਨਾ ਪੈਂਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਨਾਲ ਫਸਲਾਂ ਦੀ ਉਤਪਾਦਨ 'ਤੇ ਵੀ ਅਸਰ ਪੈਂਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਖਾਣ-ਪੀਣ ਦੀਆਂ ਚੀਜ਼ਾਂ ਦੀਆਂ ਕੀਮਤਾਂ ਵਧ ਜਾਂਦੀਆਂ ਹਨ। ਇਸਦਾ ਪ੍ਰਭਾਵ ਸਿਰਫ ਕਿਸਾਨਾਂ 'ਤੇ ਹੀ ਨਹੀਂ, ਸਗੋਂ ਹਰ ਵਿਅਕਤੀ 'ਤੇ ਪੈਂਦਾ ਹੈ, ਕਿਉਂਕਿ ਹਰ ਕੋਈ ਖੁਰਾਕ 'ਤੇ ਨਿਰਭਰ ਹੈ।

ਭਾਰਤੀ ਮਜ਼ਦੂਰਾਂ 'ਤੇ ਅਸਰ

ਮੱਧ-ਪੂਰਬ ਦੇ ਦੇਸ਼ਾਂ ਵਿੱਚ ਬਹੁਤ ਸਾਰੇ ਭਾਰਤੀ ਕੰਮ ਕਰਦੇ ਹਨ ਅਤੇ ਆਪਣੇ ਘਰਾਂ ਨੂੰ ਪੈਸੇ ਭੇਜਦੇ ਹਨ। ਯੁੱਧ ਦੀ ਸਥਿਤੀ ਵਿੱਚ ਉਹਨਾਂ ਲਈ ਉਥੇ ਰਹਿਣਾ ਖਤਰਨਾਕ ਹੋ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਕਈ ਵਾਰ ਉਹਨਾਂ ਨੂੰ ਆਪਣੀ ਨੌਕਰੀ ਛੱਡ ਕੇ ਵਾਪਸ ਆਉਣਾ ਪੈਂਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਨਾਲ ਉਹਨਾਂ ਦੀ ਆਮਦਨ ਰੁਕ

ਜਾਂਦੀ ਹੈ ਅਤੇ ਉਹਨਾਂ ਦੇ ਪਰਿਵਾਰਾਂ ਨੂੰ ਮੁਸ਼ਕਲਾਂ ਦਾ ਸਾਹਮਣਾ ਕਰਨਾ ਪੈਂਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਨਾਲ ਭਾਰਤ ਵਿੱਚ ਬੇਰੋਜ਼ਗਾਰੀ ਵੀ ਵਧ ਸਕਦੀ ਹੈ ਅਤੇ ਸਮਾਜਿਕ ਤਣਾਅ ਪੈਦਾ ਹੁੰਦਾ ਹੈ।

ਰੋਜ਼ਗਾਰ 'ਤੇ ਪ੍ਰਭਾਵ

ਯੁੱਧ ਦੇ ਕਾਰਨ ਆਰਥਿਕ ਹਾਲਾਤ ਪ੍ਰਭਾਵਿਤ ਹੁੰਦੇ ਹਨ ਅਤੇ ਕੰਪਨੀਆਂ ਨਵੀਆਂ ਨੌਕਰੀਆਂ ਦੇਣ ਵਿੱਚ ਹਿਚਕਚਾਉਂਦੀਆਂ ਹਨ। ਇਸ ਨਾਲ ਨੌਜਵਾਨਾਂ ਲਈ ਨੌਕਰੀ ਲੱਭਣਾ ਔਖਾ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਕਈ ਵਾਰ ਕੰਪਨੀਆਂ ਆਪਣੇ ਖਰਚ ਘਟਾਉਣ ਲਈ ਕਰਮਚਾਰੀਆਂ ਦੀ ਗਿਣਤੀ ਵੀ ਘਟਾ ਦਿੰਦੀਆਂ ਹਨ। ਇਸ ਨਾਲ ਨੌਜਵਾਨਾਂ ਵਿੱਚ ਅਸੁਰੱਖਿਆ ਦੀ ਭਾਵਨਾ ਵਧਦੀ ਹੈ ਅਤੇ ਉਹ ਆਪਣੇ ਭਵਿੱਖ ਨੂੰ ਲੈ ਕੇ ਚਿੰਤਿਤ ਰਹਿੰਦੇ ਹਨ।

ਵਪਾਰ 'ਤੇ ਪ੍ਰਭਾਵ

ਯੁੱਧ ਕਾਰਨ ਵਪਾਰ ਵਿੱਚ ਰੁਕਾਵਟ ਆਉਂਦੀ ਹੈ ਅਤੇ ਸਮਾਨ ਦੀ ਆਵਾਜਾਈ ਪ੍ਰਭਾਵਿਤ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਇਸ ਨਾਲ ਵਪਾਰੀਆਂ ਨੂੰ ਨੁਕਸਾਨ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਬਾਜ਼ਾਰ ਵਿੱਚ ਅਸਥਿਰਤਾ ਆ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਛੋਟੇ ਵਪਾਰੀ ਇਸ ਸਥਿਤੀ ਵਿੱਚ ਸਭ ਤੋਂ ਵੱਧ ਪ੍ਰਭਾਵਿਤ ਹੁੰਦੇ ਹਨ, ਕਿਉਂਕਿ ਉਹਨਾਂ ਕੋਲ ਵੱਡੇ ਸੰਸਾਧਨ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦੇ। ਇਸ ਨਾਲ ਦੇਸ਼ ਦੀ ਆਰਥਿਕਤਾ 'ਤੇ ਵੀ ਅਸਰ ਪੈਂਦਾ ਹੈ।

ਸਮਾਜਿਕ ਅਤੇ ਮਾਨਸਿਕ ਪ੍ਰਭਾਵ

ਯੁੱਧ ਦੀਆਂ ਖ਼ਬਰਾਂ ਲੋਕਾਂ ਦੇ ਮਨ ਵਿੱਚ ਡਰ ਅਤੇ ਚਿੰਤਾ ਪੈਦਾ ਕਰਦੀਆਂ ਹਨ। ਹਰ ਕੋਈ ਆਪਣੇ ਭਵਿੱਖ ਬਾਰੇ ਸੋਚਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਅਸੁਰੱਖਿਆ ਮਹਿਸੂਸ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਨੌਜਵਾਨਾਂ ਵਿੱਚ ਵੀ ਤਣਾਅ ਵਧਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਉਹ ਆਪਣੇ ਕਰੀਅਰ ਨੂੰ ਲੈ ਕੇ ਚਿੰਤਿਤ ਰਹਿੰਦੇ ਹਨ। ਇਸ ਨਾਲ ਸਮਾਜ ਵਿੱਚ ਇੱਕ ਨਕਾਰਾਤਮਕ ਮਾਹੌਲ ਬਣ ਜਾਂਦਾ ਹੈ।

ਭਾਰਤ ਦੀ ਵਿਦੇਸ਼ ਨੀਤੀ 'ਤੇ ਪ੍ਰਭਾਵ

ਇਸ ਯੁੱਧ ਦੇ ਕਾਰਨ ਭਾਰਤ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਸੰਬੰਧ ਇਰਾਨ ਅਤੇ ਇਜ਼ਰਾਈਲ ਦੇਵਾਂ ਨਾਲ ਸੰਤੁਲਿਤ ਰੱਖਣੇ ਪੈਂਦੇ ਹਨ। ਇਹ ਇੱਕ ਔਖੀ ਸਥਿਤੀ ਹੁੰਦੀ ਹੈ, ਕਿਉਂਕਿ ਦੋਵੇਂ ਦੇਸ਼ਾਂ ਨਾਲ ਭਾਰਤ ਦੇ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਹਿੱਤ ਜੁੜੇ ਹੋਏ ਹਨ। ਇਸ ਕਰਕੇ ਭਾਰਤ ਨੂੰ ਸੋਚ ਸਮਝ ਕੇ ਕਦਮ ਚੁੱਕਣੇ ਪੈਂਦੇ ਹਨ, ਤਾਂ ਜੋ ਉਸਦੇ

ਸੰਬੰਧ ਕਿਸੇ ਨਾਲ ਵੀ ਖਰਾਬ ਨਾ ਹੋਣ। ਇਹ ਗੱਲ ਦੇਸ਼ ਦੀ ਰਾਜਨੀਤੀ ਅਤੇ ਨੀਤੀ ਨੂੰ ਪ੍ਰਭਾਵਿਤ ਕਰਦੀ ਹੈ।

ਨਿਸ਼ਕਰਸ਼

ਅੰਤ ਵਿੱਚ ਕਹਿ ਸਕਦੇ ਹਾਂ ਕਿ ਇਰਾਨ-ਇਜ਼ਰਾਈਲ ਯੁੱਧ ਸਿਰਫ ਉਹਨਾਂ ਦੇਸ਼ਾਂ ਤੱਕ ਹੀ ਸੀਮਿਤ ਨਹੀਂ ਰਹਿੰਦਾ, ਸਗੋਂ ਇਸਦਾ ਅਸਰ ਭਾਰਤ ਵਰਗੇ ਦੇਸ਼ਾਂ 'ਤੇ ਵੀ ਪੈਂਦਾ ਹੈ। ਇਹ ਸਾਡੇ ਜੀਵਨ ਦੇ ਖਰਚ, ਰੋਜ਼ਗਾਰ ਅਤੇ ਸੋਚ ਨੂੰ ਪ੍ਰਭਾਵਿਤ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਲਈ ਸਾਨੂੰ ਅਜਿਹੀਆਂ ਸਥਿਤੀਆਂ ਨੂੰ ਸਮਝਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਹਮੇਸ਼ਾਂ ਸਾਵਧਾਨ ਰਹਿਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਸਾਨੂੰ ਇਹ ਵੀ ਸਮਝਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਕਿ ਸ਼ਾਂਤੀ ਹੀ ਸਭ ਤੋਂ ਵੱਡਾ ਹੱਲ ਹੈ।

ਨਾਂ – ਸੁਸ਼ਮੀਤਾ ਸ਼ਰਮਾ

ਰੋਲ ਨੰਬਰ – 24/0286

ਸਮੇਂ ਦੀ ਕੀਮਤ

ਸਮਾਂ ਉਹ ਅਨਮੋਲ ਖਜ਼ਾਨਾ ਹੈ ਜੋ ਹਰ ਮਨੁੱਖ ਨੂੰ ਬਰਾਬਰ ਮਿਲਦਾ ਹੈ — ਅਮੀਰ ਨੂੰ ਵੀ ਅਤੇ ਗਰੀਬ ਨੂੰ ਵੀ। ਪਰ ਜੇ ਇਸਦੀ ਕਦਰ ਕਰਦਾ ਹੈ, ਉਹੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਵਿੱਚ ਸੱਚੀ ਸਫਲਤਾ ਪਾਉਂਦਾ ਹੈ। ਸੰਸਾਰ ਵਿੱਚ ਸਭ ਤੋਂ ਕੀਮਤੀ ਚੀਜ਼ ਕੀ ਹੈ? ਕੋਈ ਕਹੇਗਾ ਸੋਨਾ, ਕੋਈ ਕਹੇਗਾ ਹੀਰੋ-ਜਵਾਹਰਾਤ, ਅਤੇ ਕੋਈ ਕਹੇਗਾ ਸਿਹਤ। ਪਰ ਸੱਚ ਇਹ ਹੈ ਕਿ ਇਹ ਸਭ ਚੀਜ਼ਾਂ ਗੁਆਚ ਜਾਣ ਤਾਂ ਦੁਬਾਰਾ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕੀਤੀਆਂ ਜਾ ਸਕਦੀਆਂ ਹਨ, ਪਰ ਸਮਾਂ ਇੱਕ ਵਾਰ ਲੰਘ ਜਾਵੇ ਤਾਂ ਦੁਨੀਆ ਦੀ ਕੋਈ ਵੀ ਤਾਕਤ ਉਸਨੂੰ ਵਾਪਸ ਨਹੀਂ ਲਿਆ ਸਕਦੀ। ਇਸ ਲਈ ਸਮਾਂ ਹੀ ਸੱਚਾ ਧਨ ਹੈ ਅਤੇ ਸਮੇਂ ਦੀ ਸਹੀ ਵਰਤੋਂ ਕਰਨਾ ਹੀ ਮਨੁੱਖ ਦੀ ਸਭ ਤੋਂ ਵੱਡੀ ਸਮਝਦਾਰੀ ਹੈ।

ਸਮਾਂ ਨਦੀ ਦੇ ਵਹਿੰਦੇ ਪਾਣੀ ਵਾਂਗੂ ਹੈ — ਨਿਰੰਤਰ ਅੱਗੇ ਵਧਦਾ ਰਹਿੰਦਾ ਹੈ, ਕਿਸੇ ਦੀ ਉਡੀਕ ਨਹੀਂ ਕਰਦਾ। ਜਦੋਂ ਅਸੀਂ ਕਿਸੇ ਕੰਮ ਨੂੰ ਟਾਲਦੇ ਹਾਂ, ਕਹਿੰਦੇ ਹਾਂ "ਕੱਲ੍ਹ ਕਰ ਲਵਾਂਗੇ" ਜਾਂ "ਬਾਅਦ ਵਿੱਚ ਦੇਖਾਂਗੇ," ਤਾਂ ਅਸੀਂ ਅਸਲ ਵਿੱਚ ਆਪਣੀ ਕਿਸਮਤ ਨਾਲ ਖਿਲਵਾੜ ਕਰ ਰਹੇ ਹੁੰਦੇ ਹਾਂ। ਉਹ ਪਲ ਜੋ ਅੱਜ ਖੁੰਝ ਗਿਆ, ਕੱਲ੍ਹ ਉਹ ਕਦੇ ਵਾਪਸ ਨਹੀਂ ਆਵੇਗਾ। ਸਮੇਂ ਦੀ ਇਹੀ ਅਟੱਲ ਸੱਚਾਈ ਹੈ।

ਸਮੇਂ ਦੀ ਅਹਿਮੀਅਤ – ਇੱਕ ਡੂੰਘੀ ਸਮਝ

ਮਨੁੱਖ ਦੀ ਔਸਤ ਉਮਰ ਸੱਤਰ ਤੋਂ ਅੱਸੀ ਸਾਲ ਹੈ। ਜੇ ਅਸੀਂ ਸੋਚੀਏ ਕਿ ਇਸ ਵਿੱਚੋਂ ਸੌਣ, ਖਾਣ-ਪੀਣ ਅਤੇ ਹੋਰ ਜ਼ਰੂਰੀ ਕੰਮਾਂ ਵਿੱਚ ਕਿੰਨਾ ਸਮਾਂ ਲੱਗਦਾ ਹੈ, ਤਾਂ ਅਸਲ ਵਿੱਚ ਸਾਡੇ ਕੋਲ ਉਪਯੋਗੀ ਸਮਾਂ ਬਹੁਤ ਸੀਮਤ ਹੈ। ਇਸ ਸੀਮਤ ਸਮੇਂ ਵਿੱਚ ਹੀ ਅਸੀਂ ਆਪਣੇ ਸੁਪਨੇ ਪੂਰੇ ਕਰਨੇ ਹਨ, ਆਪਣੇ ਟੀਚੇ ਹਾਸਲ ਕਰਨੇ ਹਨ ਅਤੇ ਸਮਾਜ ਲਈ ਕੁਝ ਕਰਨਾ ਹੈ। ਜੇ ਮਨੁੱਖ ਇਸ ਸੱਚਾਈ ਨੂੰ ਸਮਝ ਲੈਂਦਾ ਹੈ, ਉਹ ਕਦੇ ਵੀ ਵਿਹਲਾ ਨਹੀਂ ਬੈਠਦਾ।

ਸਾਡੇ ਧਾਰਮਿਕ ਗ੍ਰੰਥਾਂ ਅਤੇ ਮਹਾਨ ਗੁਰੂਆਂ ਨੇ ਵੀ ਸਮੇਂ ਦੀ ਕੀਮਤ ਬਾਰੇ ਬਹੁਤ ਕੁਝ ਕਿਹਾ ਹੈ। ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਵਿੱਚ ਆਉਂਦਾ ਹੈ ਕਿ ਮਨੁੱਖਾ ਜਨਮ ਦੁਰਲੱਭ ਹੈ ਅਤੇ ਇਸਨੂੰ ਪ੍ਰਭੂ ਦੀ ਯਾਦ ਅਤੇ ਨੇਕ ਕੰਮਾਂ ਵਿੱਚ ਬਿਤਾਉਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਭਗਤ ਕਬੀਰ ਜੀ ਨੇ ਫ਼ਰਮਾਇਆ ਹੈ ਕਿ ਜੇ ਸਮਾਂ ਬੀਤ ਗਿਆ ਉਹ ਵਾਪਸ ਨਹੀਂ ਆਉਂਦਾ, ਇਸ ਲਈ ਹਰ ਪਲ ਨੂੰ ਸੋਚ-ਸਮਝ ਕੇ ਵਰਤਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਇਹ ਸਿੱਖਿਆਵਾਂ ਅੱਜ ਵੀ ਓਨੀਆਂ ਹੀ ਪ੍ਰਾਸੰਗਿਕ ਹਨ ਜਿੰਨੀਆਂ ਸਦੀਆਂ ਪਹਿਲਾਂ ਸਨ।

"ਕਬੀਰ ਮਾਟੀ ਕੇ ਕਰਵਾ ਮਾਟੀ ਮੇਹਿ ਸਮਾਇ॥

ਕਾਲਿ ਕਰੈ ਸੇਈ ਆਜੁ ਕਰਿ ਆਜੁ ਕਰੈ ਸੇਈ ਅਬ॥"

— ਭਗਤ ਕਬੀਰ ਜੀ

ਸਮੇਂ ਦੀ ਬਰਬਾਦੀ – ਅਸਫਲਤਾ ਦੀ ਜੜ੍ਹ

ਅੱਜ ਦੇ ਆਧੁਨਿਕ ਯੁੱਗ ਵਿੱਚ ਸਮੇਂ ਦੀ ਬਰਬਾਦੀ ਦੇ ਨਵੇਂ-ਨਵੇਂ ਸਾਧਨ ਪੈਦਾ ਹੋ ਗਏ ਹਨ। ਮੋਬਾਈਲ ਫੋਨ, ਸੋਸ਼ਲ ਮੀਡੀਆ, ਵੀਡੀਓ ਗੇਮਾਂ ਅਤੇ ਬੇਲੋੜੀਆਂ ਗੱਲਾਂਬਾਤਾਂ — ਇਹ ਸਭ ਸਾਡੇ ਕੀਮਤੀ ਸਮੇਂ ਨੂੰ ਚੁੱਪ-ਚੁਪੀਤੇ ਖਾ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਇੱਕ ਅਧਿਐਨ ਅਨੁਸਾਰ ਔਸਤ ਵਿਅਕਤੀ ਦਿਨ ਵਿੱਚ ਤਿੰਨ ਤੋਂ

ਚਾਰ ਘੰਟੇ ਮੇਬਾਈਲ ਸਕਰੀਨ ਉੱਤੇ ਬਿਤਾਉਂਦਾ ਹੈ। ਜੇਕਰ ਇਹ ਸਮਾਂ ਕਿਸੇ ਉਸਾਰੂ ਕੰਮ ਵਿੱਚ ਲਗਾਇਆ ਜਾਵੇ ਤਾਂ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਵਿੱਚ ਕਿੰਨਾ ਕੁਝ ਕੀਤਾ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ।

ਸਮੇਂ ਦੀ ਬਰਬਾਦੀ ਸਿਰਫ਼ ਵਿਅਕਤੀਗਤ ਨੁਕਸਾਨ ਨਹੀਂ ਕਰਦੀ — ਇਹ ਸਮਾਜਿਕ ਅਤੇ ਕੌਮੀ ਨੁਕਸਾਨ ਵੀ ਕਰਦੀ ਹੈ। ਜਦੋਂ ਕੋਈ ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਪੜ੍ਹਾਈ ਛੱਡ ਕੇ ਫ਼ਜ਼ੂਲ ਕੰਮਾਂ ਵਿੱਚ ਲੱਗਾ ਰਹਿੰਦਾ ਹੈ, ਜਦੋਂ ਕੋਈ ਕਾਮਾ ਕੰਮ ਟਾਲਦਾ ਰਹਿੰਦਾ ਹੈ, ਜਦੋਂ ਕੋਈ ਆਗੂ ਦੇਸ਼ ਦੇ ਜ਼ਰੂਰੀ ਫ਼ੈਸਲੇ ਦੇਰੀ ਨਾਲ ਕਰਦਾ ਹੈ — ਤਾਂ ਇਹ ਸਭ ਮਿਲ ਕੇ ਪੂਰੀ ਕੌਮ ਨੂੰ ਪਿੱਛੇ ਧੱਕਦੇ ਹਨ। ਆਲਸ ਅਤੇ ਢਿੱਲ-ਮੱਠ ਕਿਸੇ ਵੀ ਕੌਮ ਦੀ ਤਰੱਕੀ ਦੇ ਸਭ ਤੋਂ ਵੱਡੇ ਦੁਸ਼ਮਣ ਹਨ। ਜੇ ਸਮੇਂ ਨੂੰ ਸੰਭਾਲਦਾ ਹੈ, ਸਮਾਂ ਉਸਨੂੰ ਸੰਭਾਲਦਾ ਹੈ।

ਮਹਾਨ ਵਿਅਕਤੀਆਂ ਦੀਆਂ ਮਿਸਾਲਾਂ

ਇਤਿਹਾਸ ਵਿੱਚ ਉਹੀ ਵਿਅਕਤੀ ਮਹਾਨ ਬਣੇ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਸਮੇਂ ਦੀ ਇੱਕ-ਇੱਕ ਪਲ ਦੀ ਕਦਰ ਕੀਤੀ। ਮਹਾਨ ਵਿਗਿਆਨੀ ਆਇਨਸਟਾਈਨ ਦਿਨ ਵਿੱਚ ਸੋਲ੍ਹਾਂ ਘੰਟੇ ਕੰਮ ਕਰਦੇ ਸਨ। ਭਾਰਤ ਦੇ ਮਹਾਨ ਸ਼ਹੀਦ ਭਗਤ ਸਿੰਘ ਨੇ ਆਪਣੀ ਛੋਟੀ ਜਿਹੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਵਿੱਚ ਇੰਨੇ ਕਿਤਾਬਾਂ ਪੜ੍ਹੀਆਂ ਅਤੇ ਇੰਨੇ ਲੇਖ ਲਿਖੇ ਕਿ ਬਹੁਤ ਸਾਰੇ ਲੋਕ ਸਾਰੀ ਉਮਰ ਵੀ ਨਹੀਂ ਕਰ ਸਕਦੇ। ਡਾ. ਭੀਮਰਾਓ ਅੰਬੇਡਕਰ ਨੇ ਗਰੀਬੀ ਅਤੇ ਮੁਸ਼ਕਲਾਂ ਵਿੱਚ ਵੀ ਸਮੇਂ ਦੀ ਸਹੀ ਵਰਤੋਂ ਕੀਤੀ ਅਤੇ ਦੁਨੀਆ ਦੇ ਸਭ ਤੋਂ ਪੜ੍ਹੇ-ਲਿਖੇ ਵਿਅਕਤੀਆਂ ਵਿੱਚੋਂ ਇੱਕ ਬਣੇ। ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਕਿਸਾਨ ਵੀ ਸਮੇਂ ਦੀ ਕੀਮਤ ਬਹੁਤ ਚੰਗੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਜਾਣਦੇ ਹਨ। ਬੀਜਣ ਦਾ ਸਮਾਂ ਲੰਘ ਜਾਵੇ ਤਾਂ ਫ਼ਸਲ ਨਹੀਂ ਉੱਗਦੀ। ਵਾਢੀ ਦਾ ਵੇਲਾ ਖੁੰਝ ਜਾਵੇ ਤਾਂ ਖੇਤਾਂ ਵਿੱਚ ਹੀ ਅਨਾਜ ਖਰਾਬ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਕੁਦਰਤ ਨੇ ਹਰ ਕੰਮ ਦਾ ਇੱਕ ਵੇਲਾ ਮਿੱਥਿਆ ਹੋਇਆ ਹੈ ਅਤੇ ਉਸ ਵੇਲੇ ਉਹ ਕੰਮ ਕਰਨਾ ਹੀ ਅਕਲਮੰਦੀ ਹੈ।

ਸਮੇਂ ਦੀ ਸਹੀ ਵਰਤੋਂ – ਵਿਹਾਰਕ ਸੁਝਾਅ

ਸਮੇਂ ਦੀ ਸਹੀ ਵਰਤੋਂ ਕੋਈ ਜਾਦੂ ਨਹੀਂ — ਇਹ ਇੱਕ ਆਦਤ ਹੈ ਜੋ ਅਭਿਆਸ ਨਾਲ ਬਣਦੀ ਹੈ। ਸਭ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਸਵੇਰੇ ਜਲਦੀ ਉੱਠਣ ਦੀ ਆਦਤ ਪਾਉਣੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ। ਸਾਡੇ ਵੱਡੇ-ਵੱਡੇ ਕਿਹਾ ਕਰਦੇ ਸਨ "ਉੱਠ ਜਾਗ ਮੁਸਾਫ਼ਿਰ ਭੇਰ ਭਈ" ਭਾਵ ਸਵੇਰ ਹੋ ਗਈ ਹੈ, ਹੁਣ ਸੌਂਦਾ ਰਿਹਾ ਤਾਂ ਸਮਾਂ

ਲੰਘ ਜਾਵੇਗਾ। ਸਵੇਰ ਦੇ ਸਮੇਂ ਦੀ ਸ਼ਾਂਤੀ ਅਤੇ ਤਾਜ਼ਗੀ ਵਿੱਚ ਕੀਤਾ ਕੰਮ ਦੁੱਗਣੀ ਤੇਜ਼ੀ ਨਾਲ ਹੁੰਦਾ ਹੈ।

ਦੂਜਾ ਜ਼ਰੂਰੀ ਕਦਮ ਹੈ ਕੰਮਾਂ ਦੀ ਸੂਚੀ ਬਣਾਉਣਾ। ਹਰ ਰੋਜ਼ ਰਾਤ ਨੂੰ ਅਗਲੇ ਦਿਨ ਦੇ ਕੰਮਾਂ ਦੀ ਯੋਜਨਾ ਬਣਾਓ। ਸਭ ਤੋਂ ਜ਼ਰੂਰੀ ਕੰਮ ਪਹਿਲਾਂ ਕਰੋ। ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਕਰਨ ਨਾਲ ਸਮਾਂ ਅਜ਼ਾਈ ਨਹੀਂ ਜਾਂਦਾ ਅਤੇ ਹਰ ਕੰਮ ਸਮੇਂ ਸਿਰ ਮੁੱਕਦਾ ਹੈ। ਤੀਜਾ, ਮੋਬਾਈਲ ਅਤੇ ਸੋਸ਼ਲ ਮੀਡੀਆ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਸੀਮਤ ਕਰੋ। ਇਹ ਸਾਧਨ ਜ਼ਰੂਰੀ ਹਨ ਪਰ ਇਹਨਾਂ ਦੇ ਗੁਲਾਮ ਨਾ ਬਣੋ। ਅੱਜ ਦਾ ਕੰਮ ਕੱਲ੍ਹ ਉੱਤੇ ਨਾ ਛੱਡੋ, ਕੱਲ੍ਹ ਕਦੇ ਨਹੀਂ ਆਉਂਦਾ — ਜੇ ਆਉਂਦਾ ਹੈ ਉਹ ਫਿਰ 'ਅੱਜ' ਬਣ ਜਾਂਦਾ ਹੈ।

ਵਿਦਿਆਰਥੀਆਂ ਲਈ ਸਮੇਂ ਦੀ ਮਹੱਤਤਾ ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਜੀਵਨ ਸਭ ਤੋਂ ਕੀਮਤੀ ਸਮਾਂ ਹੈ। ਇਸ ਸਮੇਂ ਵਿੱਚ ਜੇ ਬੀਜਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ, ਉਹੀ ਸਾਰੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਕੰਮ ਆਉਂਦਾ ਹੈ। ਜੇ ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਸਮੇਂ ਸਿਰ ਪੜ੍ਹਦੇ ਹਨ, ਸਮੇਂ ਸਿਰ ਸੈਂਦੇ ਅਤੇ ਜਾਗਦੇ ਹਨ, ਉਹ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਵਿੱਚ ਅੱਗੇ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਇਮਤਿਹਾਨ ਤੋਂ ਇੱਕ ਰਾਤ ਪਹਿਲਾਂ ਰਾਤ ਭਰ ਜਾਗ ਕੇ ਪੜ੍ਹਨਾ ਸਮੇਂ ਦੀ ਬਰਬਾਦੀ ਅਤੇ ਬੇਸਮਝੀ ਦੀ ਨਿਸ਼ਾਨੀ ਹੈ। ਨਿਯਮਤ ਪੜ੍ਹਾਈ ਅਤੇ ਸਮੇਂ ਦੀ ਵੰਡ ਹੀ ਸੱਚੀ ਕਾਮਯਾਬੀ ਦੀ ਕੁੰਜੀ ਹੈ। ਸਮੇਂ ਦੀ ਸਹੀ ਵਰਤੋਂ ਸਿਰਫ਼ ਪੜ੍ਹਾਈ ਤੱਕ ਸੀਮਤ ਨਹੀਂ ਹੋਣੀ ਚਾਹੀਦੀ। ਖੇਡਾਂ, ਕਲਾਵਾਂ, ਸਮਾਜ ਸੇਵਾ ਅਤੇ ਮਨੋਰੰਜਨ ਲਈ ਵੀ ਸਮਾਂ ਕੱਢਣਾ ਜ਼ਰੂਰੀ ਹੈ। ਸੰਤੁਲਿਤ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਉਹੀ ਹੈ ਜਿਸ ਵਿੱਚ ਹਰ ਚੀਜ਼ ਲਈ ਉਚਿਤ ਸਮਾਂ ਨਿਰਧਾਰਿਤ ਹੋਵੇ। ਸਾਰਾ ਦਿਨ ਸਿਰਫ਼ ਕੰਮ ਕਰਨਾ ਅਤੇ ਆਰਾਮ ਨਾ ਕਰਨਾ ਵੀ ਸਹੀ ਨਹੀਂ — ਸਰੀਰ ਅਤੇ ਮਨ ਨੂੰ ਵੀ ਆਰਾਮ ਦੀ ਲੋੜ ਹੁੰਦੀ ਹੈ।

ਆਧੁਨਿਕ ਯੁੱਗ ਅਤੇ ਸਮਾਂ ਪ੍ਰਬੰਧਨ

ਅੱਜ ਦੇ ਮੁਕਾਬਲੇਬਾਜ਼ੀ ਵਾਲੇ ਸੰਸਾਰ ਵਿੱਚ ਸਮਾਂ ਪ੍ਰਬੰਧਨ ਇੱਕ ਮਹੱਤਵਪੂਰਨ ਕੌਸ਼ਲ ਬਣ ਗਿਆ ਹੈ। ਸਫ਼ਲ ਕਾਰੋਬਾਰੀ, ਪ੍ਰਸ਼ਾਸਕ, ਡਾਕਟਰ, ਇੰਜੀਨੀਅਰ — ਸਭ ਆਪਣੇ ਸਮੇਂ ਦੀ ਯੋਜਨਾਬੱਧ ਵਰਤੋਂ ਕਰਦੇ ਹਨ। ਵੱਡੀਆਂ ਕੰਪਨੀਆਂ ਵਿੱਚ ਸਮਾਂ ਪ੍ਰਬੰਧਨ ਦੀਆਂ ਸਿਖਲਾਈਆਂ ਦਿੱਤੀਆਂ ਜਾਂਦੀਆਂ ਹਨ ਕਿਉਂਕਿ ਉਹ ਜਾਣਦੇ ਹਨ ਕਿ ਸਮੇਂ ਦੀ ਚੰਗੀ ਵਰਤੋਂ ਹੀ ਤਰੱਕੀ ਦਾ ਰਾਹ ਹੈ। ਡਿਜੀਟਲ

ਕੈਲੰਡਰ, ਟੂ-ਡੂ ਐਪਸ ਅਤੇ ਹੋਰ ਸਾਧਨ ਵੀ ਸਾਡੀ ਮਦਦ ਕਰ ਸਕਦੇ ਹਨ ਜੇ ਅਸੀਂ ਉਹਨਾਂ ਦੀ ਸਮਝਦਾਰੀ ਨਾਲ ਵਰਤੋਂ ਕਰੀਏ।

ਸਮੇਂ ਦੀ ਸਹੀ ਵਰਤੋਂ ਦਾ ਇੱਕ ਹੋਰ ਮਹੱਤਵਪੂਰਨ ਪਹਿਲੂ ਹੈ — "ਨਾਂਹ" ਕਹਿਣਾ ਸਿੱਖਣਾ। ਬਹੁਤ ਵਾਰ ਅਸੀਂ ਦੂਜਿਆਂ ਦੀਆਂ ਬੇਲੋੜੀਆਂ ਬੇਨਤੀਆਂ ਮੰਨਦੇ ਰਹਿੰਦੇ ਹਾਂ ਅਤੇ ਆਪਣੇ ਜ਼ਰੂਰੀ ਕੰਮ ਛੱਡ ਦਿੰਦੇ ਹਾਂ। ਆਪਣੇ ਟੀਚਿਆਂ ਪ੍ਰਤੀ ਪੱਕੇ ਰਹਿਣਾ ਅਤੇ ਬੇਲੋੜੀਆਂ ਵਿਅਰਥ ਗਤੀਵਿਧੀਆਂ ਤੋਂ ਦੂਰ ਰਹਿਣਾ ਵੀ ਸਮੇਂ ਦੀ ਕਦਰ ਕਰਨ ਦੀ ਨਿਸ਼ਾਨੀ ਹੈ।

ਸਮਾਪਤੀ – ਸੰਕਲਪ ਅਤੇ ਸੁਨੇਹਾ

ਸਮਾਂ ਉਹ ਅਦਿੱਖ ਧਾਗਾ ਹੈ ਜਿਸ ਉੱਤੇ ਸਾਡੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਦੇ ਸਾਰੇ ਪਲ ਪਰੇਏ ਹੋਏ ਹਨ। ਇਸਨੂੰ ਸੰਭਾਲੋ, ਇਸਦੀ ਕਦਰ ਕਰੋ ਅਤੇ ਇਸਨੂੰ ਅਜਿਹੇ ਕੰਮਾਂ ਵਿੱਚ ਲਗਾਓ ਜੋ ਤੁਹਾਨੂੰ, ਤੁਹਾਡੇ ਪਰਿਵਾਰ ਨੂੰ ਅਤੇ ਸਮਾਜ ਨੂੰ ਅੱਗੇ ਲੈ ਜਾਣ। ਜੇ ਵਿਅਕਤੀ ਸਮੇਂ ਦਾ ਸੱਚਾ ਕਦਰਦਾਨ ਹੁੰਦਾ ਹੈ, ਉਹ ਕਿਸੇ ਦਾ ਮੁਹਤਾਜ ਨਹੀਂ ਰਹਿੰਦਾ। ਸਮੇਂ ਦੀ ਕੀਮਤ ਸਮਝਣ ਵਾਲੇ ਨੂੰ ਕਾਮਯਾਬੀ ਖੁਦ ਲੱਭਦੀ ਆਉਂਦੀ ਹੈ। ਆਓ, ਅਸੀਂ ਸਾਰੇ ਮਿਲ ਕੇ ਸੰਕਲਪ ਕਰੀਏ ਕਿ ਅੱਜ ਤੋਂ ਹੀ ਆਪਣੇ ਸਮੇਂ ਦੀ ਸਹੀ ਵਰਤੋਂ ਕਰਾਂਗੇ। ਸਵੇਰੇ ਜਲਦੀ ਉੱਠਾਂਗੇ, ਯੋਜਨਾ ਬਣਾਵਾਂਗੇ ਅਤੇ ਹਰ ਕੰਮ ਸਮੇਂ ਸਿਰ ਕਰਾਂਗੇ। ਆਲਸ ਅਤੇ ਢਿੱਲ-ਮੱਠ ਨੂੰ ਛੱਡਾਂਗੇ ਅਤੇ ਮਿਹਨਤ, ਲਗਨ ਅਤੇ ਸਮਰਪਣ ਨਾਲ ਅੱਗੇ ਵਧਾਂਗੇ। ਯਾਦ ਰੱਖੋ — ਸਮੇਂ ਦੀ ਕਦਰ ਕਰਨ ਵਾਲਾ ਮਨੁੱਖ ਹੀ ਇਤਿਹਾਸ ਬਣਾਉਂਦਾ ਹੈ, ਅਤੇ ਜੇ ਸਮੇਂ ਨੂੰ ਗੁਆਉਂਦਾ ਹੈ, ਉਹ ਕੇਵਲ ਇਤਿਹਾਸ ਪੜ੍ਹਦਾ ਰਹਿ ਜਾਂਦਾ ਹੈ।

ਪੂਜਾ ਚੌਹਾਨ

ਸਮੈਸਟਰ 6

ਰੋਲ ਨੰਬਰ : 23/0207, ਬੀ.ਏ. ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ

দেশ
২০২৫-২৬

বাংলা বিভাগ

শিক্ষক সম্পাদক : অধ্যাপক অন্তরা চৌধুরী
ছাত্র সম্পাদক : খুশবু কুমারী

সূচীপত্র

বিপ্লবী শচিন্দ্রনাথ বক্সী	-	আয়ুষ বারুহ	94-95
শিল্প রসায়ন	-	অনুরাগ ঘোষ	96-102
রঞ্জি, ভারতীয় ক্রিকেটের নায়ক	-	মাধব ঘোষ	103-104
শরৎচন্দ্র চট্টোপাধ্যায় জীবনী	-	পবিত্র রায়	105-106
বাংলা প্রবন্ধ : রাজা রামমোহন রায়	-	খুশবু কুমারী	107-108

বিপ্লবী শচিন্দ্রনাথ বক্সী

ভারতীয় স্বাধীনতা সংগ্রামের এক যোদ্ধা, বিপ্লবী শচিন্দ্রনাথ বক্সী, ১৯০০ সালের ২৭শে ডিসেম্বর বারাণসীর এক ধনী বাঙালি পরিবারে জন্মগ্রহণ করেন। মেধাবী ও তীক্ষ্ণ ছাত্র হওয়ায় তিনি তাঁর বিদ্যালয় ও পাড়ায় সুপরিচিত ছিলেন। জাতীয় আন্দোলন তাঁর উপর এতটাই প্রভাব ফেলেছিল যে, ১৯২১ সালে ইন্টারমিডিয়েট পরীক্ষা পাশ করার পর তিনি বিপ্লবী আন্দোলনে যোগ দেন।

১৯২২ সালে বারাণসীতে অনুশীলন সমিতির একটি শাখা খোলা হলে তিনি তাতে যোগ দেন এবং নতুন বিপ্লবী নিয়োগ ও প্রশিক্ষণ কেন্দ্র পরিচালনা শুরু করেন। অল্প সময়ের মধ্যেই অনুশীলন সমিতির কাজ প্রসারিত ও শক্তিশালী হয়; কিন্তু এতে গোয়েন্দা বিভাগ সতর্ক হয়ে যায় এবং ব্রিটিশ পুলিশ তাঁর উপর নজর রাখতে শুরু করে। তাই তিনি বারাণসী ছেড়ে লখনউকে তাঁর কার্যকলাপের কেন্দ্র করে তোলেন।

১৯২৪ সালে হিন্দুস্তান রিপাবলিকান অ্যাসোসিয়েশন গঠিত হলে, বক্সী লখনউতে সংগঠনটির কাজ প্রতিষ্ঠা করার উদ্যোগ নেন। বারাণসী ও লখনউতে তাঁর সাংগঠনিক দক্ষতা দেখে, তাঁকে বাঁসি পর্যন্তও সংগঠনের কাজ সম্প্রসারণের দায়িত্ব দেওয়া হয়েছিল। সেখানেও তিনি অনেক যুবককে নিয়োগ করেছিলেন।

১৯২৫ সালের ৯ই আগস্ট, লখনউয়ের কাছে কাকোরিতে একটি ট্রেন থামানো হয় এবং ব্রিটিশ কোষাগার লুট করা হয়। এই অভিযানের সময়, বক্সী, আশফাক এবং রাজেন্দ্র লাহিড়ী একটি দ্বিতীয় শ্রেণীর কামরায় বসেছিলেন। ট্রেনটি থামানোর দায়িত্বে ছিলেন আশফাক ও লাহিড়ী, আর কাজটি সম্পন্ন না হওয়া পর্যন্ত গার্ডকে নিজেদের হেফাজতে রাখার দায়িত্বে ছিলেন বক্সী। প্রত্যেকেই নিষ্ঠার সাথে নিজ নিজ দায়িত্ব পালন করেন, যার ফলে অভিযানটি সম্পূর্ণ সফল হয় এবং বিপ্লবীরা বিপুল পরিমাণ অর্থ লাভ করেন।

এই সংবাদ জনগণের মধ্যে আনন্দ বয়ে আনে; তবে, এটি ব্রিটিশ সরকারকে ক্ষুব্ধ করে তোলে। বিপ্লবীদের পক্ষ থেকে এটি ছিল তাদের মুখে এক প্রচণ্ড আঘাত। ঠিক পরের দিন থেকেই লখনউ এবং তার আশেপাশের জঙ্গলে ব্যাপক তল্লাশি শুরু হয়। বিভিন্ন সূত্রের মধ্যে সংযোগ স্থাপন করে পুলিশ চন্দ্রশেখর আজাদ, আশফাকুল্লাহ খান এবং বক্সী ছাড়া বাকি সবাইকে গ্রেপ্তার করে। কাকোরি

ষড়যন্ত্রের জন্য তাদের বিরুদ্ধে একটি ঐতিহাসিক বিচার অনুষ্ঠিত হয়।

এই তিন বিপ্লবী পালিয়ে যান। এরপরও পুলিশ তাদের সন্ধান চালিয়ে যায়। আজাদ পুলিশের হাতে কখনও ধরা পড়েননি এবং ১৯৩১ সালের ২৭শে ফেব্রুয়ারি প্রয়াগরাজের আলফ্রেড পার্কে পুলিশের সাথে লড়াই করতে করতে নিজের জীবন উৎসর্গ করেন। আশফাক দিল্লিতে এবং বক্সী ১৯২৭ সালে ভাগলপুরে গ্রেপ্তার হন। কাকোরি ঘটনার জন্য তাদের বিরুদ্ধে দ্বিতীয়বার বিচার অনুষ্ঠিত হয়। আশফাককে মৃত্যুদণ্ড এবং বক্সীকে যাবজ্জীবন কারাদণ্ড দেওয়া হয়।

কারাগারেও তাদের সংগ্রামের চেতনা অটুট ছিল। তারা বন্দীদের অধিকার ও সুযোগ-সুবিধার সংগ্রামে সর্বদা অগ্রভাগে ছিলেন। এই লক্ষ্যে তারা উত্তর প্রদেশের বেরেলি জেলে ৫৩ দিনের এক ঐতিহাসিক অনশন ধর্মঘট পালন করেন। তাদের সঙ্গে ছিলেন মন্মথনাথ গুপ্ত এবং রাজকুমার সিনহা।

স্বাধীন ভারতে, বক্সী ১৯৬৯ সালের বিধানসভা নির্বাচনে কমিউনিস্ট নেতা রুস্তম সাতিনকে পরাজিত করে বেনারস দক্ষিণ থেকে জয়লাভ করেন। ১৯৭৫ সালে, তিনি সক্রিয় রাজনীতি ছেড়ে দেন এবং তাঁর আত্মজীবনী লেখা শুরু করেন। তাঁর বই, ‘বিপ্লবের পথে’-তে অনেক দুর্লভ বিপ্লবী ঘটনার তথ্য রয়েছে। ১৯৮৪ সালের ২৩শে নভেম্বর সুলতানপুরে থাকাকালীন তিনি মৃত্যুবরণ করেন।

— আয়ুষ বারুহ

এনএসএস

শিল্প রসায়ন

ভারতে গুরুত্ব • শিক্ষার্থীর অভিজ্ঞতা • বিভিন্ন ক্ষেত্র • ক্যারিয়ার স্কোপ

কয়লা ও পেট্রোলিয়াম শিল্পের চাকরির সুযোগ ও ভবিষ্যৎ

“শিল্প রসায়ন হলো সেই বিজ্ঞান যা পরীক্ষাগারের স্বপ্নকে কারখানার বাস্তবে রূপ দেয় — এবং সেই বাস্তবতাই ভারতকে আত্মনির্ভর করে তোলে।”

এই বিশেষ সংখ্যায় শিল্প রসায়নের সামগ্রিক চিত্র তুলে ধরা হয়েছে — ভারতে এর গুরুত্ব, শিক্ষার্থীদের পাঠ অভিজ্ঞতা, কয়লা ও পেট্রোলিয়াম ক্ষেত্রে ক্যারিয়ারের সুযোগ এবং ভবিষ্যতের সম্ভাবনা নিয়ে বিস্তারিত আলোচনা করা হয়েছে।

পাঁচটি সমৃদ্ধ অধ্যায়ে বিভক্ত এই আর্টিকেলটি শিল্প রসায়নের প্রতিটি গুরুত্বপূর্ণ দিক নিয়ে আলোকপাত করেছে।

শিল্প রসায়ন কোর্সের পরিচয়

♦ শিল্প রসায়ন কী?

শিল্প রসায়ন (Industrial Chemistry) হলো রসায়ন বিজ্ঞানের একটি বিশেষ ও ফলিত শাখা যেখানে প্রাকৃতিক কাঁচামাল থেকে মানব সমাজের প্রয়োজনীয় পণ্য তৈরির রাসায়নিক প্রক্রিয়া, উৎপাদন প্রযুক্তি এবং শিল্প ব্যবস্থাপনা নিয়ে পড়াশোনা করা হয়। এটি বিশুদ্ধ রসায়ন ও রাসায়নিক প্রকৌশলের মধ্যে একটি গুরুত্বপূর্ণ সেতুবন্ধন।

সহজ কথায়, শিল্প রসায়ন হলো সেই বিষয় যা শেখায় — কীভাবে মাটির নিচের তেল থেকে পেট্রোল তৈরি হয়, বায়ু থেকে সার তৈরি হয়, সাধারণ লবণ থেকে ক্লোরিন ও সোডা তৈরি হয় এবং কয়লার আলকাতরা থেকে ওষুধ তৈরি হয়। প্রতিটি রূপান্তরের পেছনে রয়েছে শিল্প রসায়নের গভীর জ্ঞান ও প্রযুক্তি।

॥ কোর্সের মূল বিষয়সমূহ: রাসায়নিক প্রক্রিয়া প্রকৌশল • জ্বালানি রসায়ন • জৈব ও অজৈব রসায়ন • পরিবেশ রসায়ন • সার ও কীটনাশক শিল্প • ফার্মাসিউটিক্যাল রসায়ন • পলিমার ও প্লাস্টিক শিল্প • পানি পরিশোধন প্রযুক্তি ॥

◆ ভারতে শিল্প রসায়নের ইতিহাস

ভারতে শিল্প রসায়নের সূচনা হয় ব্রিটিশ আমলে, যখন প্রথম রাসায়নিক কারখানাগুলো মুম্বাই ও কলকাতায় স্থাপিত হয়। স্বাধীনতার পর নেহেরুর শিল্পায়ন নীতির অধীনে দেশজুড়ে রাসায়নিক শিল্প দ্রুত বিকাশ লাভ করে। বর্তমানে ভারত বিশ্বের ষষ্ঠ বৃহত্তম রাসায়নিক উৎপাদনকারী দেশ।

IIT, NIT এবং বিভিন্ন বিশ্ববিদ্যালয়ে শিল্প রসায়ন বিভাগ প্রতিষ্ঠার মাধ্যমে ভারতে এই বিষয়ের পাঠ্যক্রম সুদৃঢ় হয়েছে। বর্তমানে প্রতি বছর হাজার হাজার শিক্ষার্থী শিল্প রসায়নে স্নাতক ও স্নাতকোত্তর ডিগ্রি অর্জন করেন।

ভারতের অর্থনীতিতে শিল্প রসায়নের গুরুত্ব

◆ রাসায়নিক শিল্পের অর্থনৈতিক অবদান

ভারতের রাসায়নিক শিল্প বর্তমানে দেশের GDP-তে প্রায় ৭% অবদান রাখছে এবং বার্ষিক উৎপাদনের পরিমাণ প্রায় ২২০ বিলিয়ন মার্কিন ডলার ছাড়িয়েছে। কৃষি, স্বাস্থ্য, নির্মাণ, বস্ত্র এবং প্রতিরক্ষা — প্রতিটি খাতে রাসায়নিক শিল্পের সরাসরি অবদান রয়েছে।

পরিসংখ্যান: ভারতের রাসায়নিক শিল্পে ২০২৫ সালে প্রায় ২০ লক্ষ মানুষ কর্মরত আছেন।
২০৩০ সালের মধ্যে এই সংখ্যা ৩৫ লক্ষ ছাড়িয়ে যাবে বলে আশা করা হচ্ছে।

◆ আত্মনির্ভর ভারত ও শিল্প রসায়ন

প্রধানমন্ত্রী নরেন্দ্র মোদির ‘আত্মনির্ভর ভারত’ প্রকল্পে শিল্প রসায়ন সবচেয়ে গুরুত্বপূর্ণ ভূমিকা পালন করছে। আমদানি নির্ভরতা কমিয়ে দেশেই রাসায়নিক পণ্য উৎপাদন বাড়ানো এই নীতির মূল লক্ষ্য। বিশেষভাবে ওষুধ, সার, পেট্রোকেমিক্যাল ও বিশেষায়িত রাসায়নিক পণ্যে ভারত এখন বিশ্বের কাছে বিশ্বস্ত সরবরাহকারী।

ভারতের পেট্রোকেমিক্যাল শিল্প, যেখানে রিলায়েন্স ইন্ডাস্ট্রিজ, ONGC, GAIL এবং IOC এর মতো বিশাল কোম্পানি কাজ করে, সেখানে শিল্প রসায়নবিদদের অবদান অতুলনীয়। গুজরাটের হাজিরা ও দাহেজ পেট্রোকেমিক্যাল হাব থেকে শুরু করে ওড়িশার পারাদ্বীপ রিফাইনারি পর্যন্ত সর্বত্র শিল্প রসায়নের জ্ঞান কাজে আসছে।

◆ মেক ইন ইন্ডিয়া ও রাসায়নিক উৎপাদন

‘মেক ইন ইন্ডিয়া’ উদ্যোগের আওতায় দেশে রাসায়নিক উৎপাদন খাতে বিশাল বিনিয়োগ আসছে। চীন থেকে রাসায়নিক পণ্যের আমদানি কমাতে এবং বৈশ্বিক সরবরাহ শৃঙ্খলে ভারতের অবস্থান শক্তিশালী করতে শিল্প রসায়নের দক্ষ জনশক্তি গড়ে তোলা এখন সর্বোচ্চ অগ্রাধিকার।

রাজস্থানের বারমার থেকে অসমের ডিগবয় — ভারতের প্রতিটি কোণে রাসায়নিক শিল্পের বিস্তার ঘটছে। এই ব্যাপক শিল্পায়নে প্রশিক্ষিত শিল্প রসায়নবিদদের চাহিদা ক্রমাগত বাড়ছে।

“ভারতকে বিশ্বের রাসায়নিক উৎপাদনের কেন্দ্রে পরিণত করতে শিল্প রসায়নের শিক্ষিত প্রজন্মই হবে প্রধান চালিকাশক্তি।”

কেন শিক্ষার্থীরা শিল্প রসায়ন পড়েন?

◆ শিক্ষার্থীদের অনুপ্রেরণা ও কারণ

প্রতি বছর ভারতে লক্ষাধিক শিক্ষার্থী বিজ্ঞান বিভাগে উচ্চশিক্ষার জন্য ভর্তি হন। তাদের মধ্যে একটি বড় অংশ শিল্প রসায়ন বেছে নেন কারণ এই বিষয়টি বিজ্ঞান ও প্রযুক্তির এক অনন্য সমন্বয়। পশ্চিমবঙ্গের যাদবপুর বিশ্ববিদ্যালয়ের ছাত্র সৌম্যদীপ মজুমদার বলেন, “রসায়ন ভালোবাসতাম, কিন্তু শুধু গবেষণাগারে থাকতে চাইনি। শিল্প রসায়নে ভর্তি হওয়ার পর বুঝলাম, এখানে প্রতিটি তত্ত্বের একটি জীবন্ত প্রয়োগ আছে।”

কলকাতার প্রেসিডেন্সি বিশ্ববিদ্যালয়ের ছাত্রী মৌমিতা চক্রবর্তী জানান, “আমার পরিবারে অর্থনৈতিক চাপ ছিল। শিল্প রসায়নে পড়ার সিদ্ধান্ত নিয়েছিলাম কারণ এই বিষয়ে স্নাতকদের চাকরির সুযোগ সবচেয়ে বেশি। আজ আমি ONGC-তে কর্মরত এবং পরিবারের স্বপ্ন পূরণ করতে পারছি।”

মূল কারণগুলি যা শিক্ষার্থীদের আকর্ষণ করে: বিজ্ঞান ও প্রকৌশলের সমন্বয় • উচ্চ বেতনের কর্মসংস্থান • হাতে-কলমে শিক্ষা পদ্ধতি • বহুমাত্রিক গবেষণার সুযোগ • দেশ-বিদেশে ক্যারিয়ার
• সমাজের সরাসরি উপকারে কাজ করার সুযোগ

◆ ব্যবহারিক শিক্ষার অভিজ্ঞতা

শিল্প রসায়নের সবচেয়ে বড় আকর্ষণ হলো এর হাতে-কলমে পদ্ধতি। প্রতিটি তাত্ত্বিক পাঠের পর ল্যাবরেটরিতে সেই তত্ত্বকে যাচাই করার সুযোগ থাকে। গ্যাস ক্রোমাটোগ্রাফি, HPLC বিশ্লেষণ, UV-Vis স্পেকট্রোস্কোপি, রিঅ্যাক্টর ডিজাইন — এই আধুনিক প্রযুক্তিগুলোর সাথে পরিচয় শিক্ষার্থীদের শিল্পক্ষেত্রের জন্য সরাসরি প্রস্তুত করে।

IIT বম্বের শিল্প রসায়নের শিক্ষার্থী রাহুল গুপ্তা বলেন, “প্রথম বর্ষে পাতন কলামে হাত দিয়ে কাজ করার অভিজ্ঞতা ছিল অবিশ্বাস্য। বাষ্প উঠতে দেখা, ভগ্নাংশ আলাদা হতে দেখা — এটি বইয়ের কোনো ছবি দিয়ে বোঝানো সম্ভব নয়।”

শিল্প রসায়নের বিভিন্ন ক্ষেত্র

◆ পেট্রোকেমিক্যাল শিল্প

পেট্রোকেমিক্যাল শিল্প ভারতের শিল্প রসায়নের সবচেয়ে বড় ক্ষেত্র। কাঁচা তেল পরিশোধন থেকে শুরু করে পলিথিন, পলিপ্রপিলিন, নাইলন, পলিস্টাইরিন উৎপাদন পর্যন্ত পুরো প্রক্রিয়ায় শিল্প রসায়নের জ্ঞান অপরিহার্য। ভারতে রিলায়েন্স ইন্ডাস্ট্রিজের জামনগর রিফাইনারি বিশ্বের বৃহত্তম একক অবস্থানের রিফাইনারি।

◆ ওষুধ ও ফার্মাসিউটিক্যাল শিল্প

ভারত বিশ্বের ‘ফার্মেসি’ নামে পরিচিত। Sun Pharma, Cipla, Dr. Reddy's, Lupin — এই

কোম্পানিগুলো বিশ্বব্যাপী ওষুধ সরবরাহ করে। ওষুধের সক্রিয় উপাদান (API) সংশ্লেষণ, মান নিয়ন্ত্রণ (QC) এবং ফর্মুলেশন ডেভেলপমেন্টে শিল্প রসায়নবিদরা মুখ্য ভূমিকা পালন করেন। হায়দরাবাদের ফার্মা সিটি এর সবচেয়ে বড় কেন্দ্র।

◆ সার ও কৃষি রসায়ন শিল্প

ভারতের কৃষিনির্ভর অর্থনীতিতে সার শিল্প অত্যন্ত গুরুত্বপূর্ণ। হেবার-বশ প্রক্রিয়ায় ইউরিয়া, ডাই-অ্যামোনিয়াম ফসফেট (DAP) উৎপাদন থেকে শুরু করে জৈব সার গবেষণা — সব ক্ষেত্রেই শিল্প রসায়নের শিক্ষার্থীরা কাজ করেন। ইন্ডিয়ান ফার্টিলাইজার কর্পোরেশন এই ক্ষেত্রের বৃহত্তম নিয়োগদাতা।

◆ পলিমার ও প্লাস্টিক শিল্প

প্লাস্টিক, রাবার, ফাইবার এবং আধুনিক কম্পোজিট উপকরণ তৈরিতে শিল্প রসায়নের জ্ঞান অপরিহার্য। পলিমার কেমিস্ট্রি শিল্প রসায়নের একটি দ্রুত বর্ধমান শাখা যেখানে বায়োডিগ্রেডেবল প্লাস্টিক, উচ্চ-কার্যক্ষমতার ফাইবার এবং ন্যানো কম্পোজিট নিয়ে গবেষণা হচ্ছে।

◆ পরিবেশ ও সবুজ রসায়ন

জলবায়ু পরিবর্তন মোকাবেলায় সবুজ রসায়ন (Green Chemistry) এখন ভারতের অগ্রাধিকার তালিকায় শীর্ষে। শিল্প রসায়নবিদরা বর্জ্যমুক্ত উৎপাদন প্রক্রিয়া, দূষণ নিয়ন্ত্রণ প্রযুক্তি এবং পুনর্ব্যবহারযোগ্য শক্তি থেকে রাসায়নিক পণ্য তৈরি নিয়ে কাজ করছেন।

“শিল্প রসায়নের জ্ঞান একজন শিক্ষার্থীকে পেট্রোলিয়াম থেকে ওষুধ, সার থেকে প্লাস্টিক — সর্বত্র কাজ করার যোগ্যতা দেয়।”

কয়লার রসায়ন: অধ্যয়ন ও অভিজ্ঞতা

◆ কয়লার বৈজ্ঞানিক পরিচয়

কয়লা (Coal) হলো কার্বন, হাইড্রোজেন, অক্সিজেন, নাইট্রোজেন ও সালফারের জটিল জৈব যৌগের মিশ্রণ, যা কোটি বছর ধরে উদ্ভিদ ও জৈব পদার্থ ভূগর্ভে চাপ ও তাপে রূপান্তরিত হয়ে তৈরি হয়েছে। শিল্প রসায়নে শিক্ষার্থীরা কয়লার চারটি প্রধান শ্রেণী বিস্তারিত পড়েন।

কয়লার শ্রেণীবিভাগ ও কার্বন পরিমাণ: পিট (Peat): ৫০-৬০% কার্বন — সবচেয়ে নিম্নমানের, সদ্য রূপান্তরিত লিগনাইট (Lignite): ৬০-৭০% কার্বন — বাদামি কয়লা, স্বল্প তাপমান বিটুমিনাস (Bituminous): ৭০-৮৫% কার্বন — সাধারণ শিল্পে ব্যবহৃত অ্যানথ্রাসাইট (Anthracite): ৯০%+ কার্বন — সর্বোচ্চ মান ও তাপমান

◆ কয়লার ধ্বংসাত্মক পাতন — ল্যাব অভিজ্ঞতা

শিল্প রসায়নের শিক্ষার্থীদের কাছে কয়লার ধ্বংসাত্মক পাতন (Destructive Distillation) সবচেয়ে স্মরণীয় পরীক্ষাগুলোর একটি। বায়ুহীন পরিবেশে কয়লাকে ৯০০-১০০০°C তাপমাত্রায় উত্তপ্ত করলে চারটি মূল্যবান পণ্য পাওয়া যায়: কোক (ধাতু শিল্পে ব্যবহৃত), কয়লা গ্যাস (H_2 , CH_4 , CO-র মিশ্রণ),

অ্যামোনিয়াকাল তরল (সার শিল্পের কাঁচামাল) এবং কোলতার (coal tar)।

আইআইটি খড়গপুরের শিক্ষার্থী অনিবার্ণ দত্ত বলেন, “কোলতার থেকে ফ্রেম্যাটোগ্রাফির মাধ্যমে বেনজিন, টলুইন, নেপথালিন আলাদা করার সময় মনে হলো, এই কালো পদার্থের মধ্যে শত শত মূল্যবান যৌগ লুকিয়ে আছে। সেদিন থেকে কয়লার প্রতি দৃষ্টিভঙ্গি সম্পূর্ণ বদলে গেছে।”

◆ ভারতে কয়লা শিল্পের বিস্তার

ভারত বিশ্বের দ্বিতীয় বৃহত্তম কয়লা উৎপাদনকারী এবং তৃতীয় বৃহত্তম কয়লা আমদানিকারক দেশ। ঝাড়খণ্ড, ওড়িশা, ছত্তিশগড়, পশ্চিমবঙ্গ ও মধ্যপ্রদেশে বিশাল কয়লা খনি রয়েছে। Coal India Limited (CIL) — বিশ্বের বৃহত্তম কয়লা উৎপাদনকারী কোম্পানি — প্রতি বছর ৭০০ মিলিয়ন টনেরও বেশি কয়লা উৎপাদন করে।

কয়লা শিল্পে কর্মসংস্থান: Coal India Limited-এ ২.৫ লক্ষেরও বেশি কর্মচারী কর্মরত।
তাপবিদ্যুৎ কেন্দ্র, কোক কারখানা ও কয়লা-ভিত্তিক রাসায়নিক শিল্পে শিল্প
রসায়নবিদদের ব্যাপক চাহিদা রয়েছে।

পেট্রোলিয়াম রসায়ন ও ক্যারিয়ার সুযোগ

◆ পেট্রোলিয়ামের রাসায়নিক গঠন ও পাতন

পেট্রোলিয়াম বা ক্রুড অয়েল হলো অ্যালকেন, সাইক্লোঅ্যালকেন ও অ্যারোমেটিক হাইড্রোকার্বনের একটি জটিল প্রাকৃতিক মিশ্রণ। শিল্প রসায়নের শিক্ষার্থীরা ভগ্নাংশীয় পাতন (Fractional Distillation) প্রক্রিয়া বিস্তারিতভাবে পড়েন এবং ল্যাবে হাতে-কলমে করেন।

পাতন প্রক্রিয়ায় বিভিন্ন তাপমাত্রায় পাওয়া যায়: পেট্রোলিয়াম গ্যাস ($<80^{\circ}\text{C}$, LPG ও প্লাস্টিকের কাঁচামাল), পেট্রোল/ন্যাপথা ($80-180^{\circ}\text{C}$, যানবাহনের জ্বালানি ও পেট্রোকেমিক্যাল), কেরোসিন ($180-280^{\circ}\text{C}$, জ্বালানি ও বিমানের জ্বালানি), ডিজেল ($280-380^{\circ}\text{C}$), লুব্রিকেটিং তেল, প্যারাফিন মোম ও বিটুমেন।

বিশ্বভারতী বিশ্ববিদ্যালয়ের শিক্ষার্থী প্রিয়াঙ্কা রায় বলেন, “পেট্রোলিয়াম পাতনের ল্যাব পরীক্ষায় গ্যাস ফ্রেম্যাটোগ্রাফ দিয়ে বিভিন্ন হাইড্রোকার্বন সনাক্ত করার সময় মনে হচ্ছিল — এই একটি তরল থেকে কতটা সম্পদ বের করা সম্ভব! পেট্রোলিয়াম যেন এক সভ্যতার ভরসা।”

◆ ক্র্যাকিং ও রিফর্মিং — উন্নত প্রযুক্তি

শিল্প রসায়নে ক্র্যাকিং প্রক্রিয়া অত্যন্ত গুরুত্বপূর্ণ বিষয়। থার্মাল ক্র্যাকিং ও ক্যাটালিটিক ক্র্যাকিং (FCC — Fluid Catalytic Cracking) পদ্ধতিতে দীর্ঘশৃঙ্খল হাইড্রোকার্বনকে ছোট করে পেট্রোল ও পেট্রোকেমিক্যাল তৈরি করা হয়। রিফর্মিং প্রক্রিয়ায় কম মানের ন্যাপথা থেকে উচ্চ অকটেন সংখ্যার পেট্রোল তৈরি হয়।

“কয়লার আলকাতরা থেকে ওষুধ, পেট্রোলিয়াম থেকে পলিথিন — শিল্প রসায়ন প্রকৃতির দানকে সভ্যতার অস্ত্রে পরিণত করে।”

কয়লা ও পেট্রোলিয়ামে ক্যারিয়ার সুযোগ

◆ ভারতের শীর্ষ নিয়োগদাতা কোম্পানি

শিল্প রসায়নে স্নাতকদের জন্য ভারতে কয়লা ও পেট্রোলিয়াম খাতে বিশাল কর্মসংস্থানের সুযোগ রয়েছে। সরকারি ও বেসরকারি উভয় ক্ষেত্রেই দক্ষ শিল্প রসায়নবিদদের ব্যাপক চাহিদা।

কোম্পানি / প্রতিষ্ঠান	পদ ও সুযোগের ক্ষেত্র
Coal India Limited (CIL)	রাসায়নিক বিশ্লেষক, খনি প্রক্রিয়া প্রকৌশলী, গবেষণা কর্মকর্তা
ONGC (Oil & Natural Gas Corp)	পেট্রোকেমিক্যাল বিশেষজ্ঞ, রিফাইনারি কেমিস্ট, প্রসেস ইঞ্জিনিয়ার
Indian Oil Corporation (IOC)	রিফাইনারি অপারেটর, QC কেমিস্ট, R&D বিজ্ঞানী
Reliance Industries Ltd	পেট্রোকেমিক্যাল টেকনোলজিস্ট, প্রসেস কেমিস্ট, উৎপাদন বিশেষজ্ঞ
GAIL India Limited	গ্যাস প্রক্রিয়া প্রকৌশলী, পেট্রোকেমিক্যাল বিশ্লেষক
Hindustan Petroleum (HPCL)	রিফাইনারি কেমিস্ট, পরিবেশ বিশেষজ্ঞ, মান নিয়ন্ত্রক
BHEL / NTPC	জ্বালানি বিশ্লেষক, বয়লার কেমিস্ট, পরিবেশ কর্মকর্তা
CMPDI / CMRS	খনি পরিবেশ গবেষক, কয়লা গুণমান বিশেষজ্ঞ

◆ বিভিন্ন ক্যারিয়ার পথ ও বেতন কাঠামো

শিল্প রসায়নের স্নাতকরা বিভিন্ন পদে যোগ দিতে পারেন এবং অভিজ্ঞতা অনুযায়ী তাদের বেতন ও পদোন্নতির সুযোগ উল্লেখযোগ্য।

ক্যারিয়ার পর্যায়	প্রাথমিক মাসিক বেতন (ভারতীয় টাকায়)
Junior Chemist / Analyst	₹৩০,০০০ - ₹৫০,০০০
Process Engineer	₹৪৫,০০০ - ₹৭৫,০০০
Senior Chemical Engineer	₹৮০,০০০ - ₹১,৫০,০০০
R&D Scientist (PhD)	₹৬০,০০০ - ₹১,২০,০০০
Plant Manager / Director	₹১,৫০,০০০ - ₹৩,০০,০০০+
বিদেশে (মধ্যপ্রাচ্য/ইউরোপ)	₹২,০০,০০০ - ₹৫,০০,০০০+

◆ সরকারি চাকরির সুযোগ ও পরীক্ষা

ভারতে শিল্প রসায়নবিদদের জন্য সরকারি খাতেও প্রচুর সুযোগ রয়েছে। UPSC, GATE (Chemical Engineering/Chemistry), SSC JE এবং বিভিন্ন রাজ্য সরকারের PSC পরীক্ষায় সফল হলে সরকারি

প্রতিষ্ঠানে স্থায়ী চাকরি পাওয়া যায়।

CSIR (Council of Scientific and Industrial Research)-এর অধীনে NCL, CPCRI, IICT, CGCRI সহ ৩৮টি গবেষণা প্রতিষ্ঠানে শিল্প রসায়নবিদদের জন্য বৈজ্ঞানিক পদ রয়েছে। বার্ষিক CBI বা CSIR-NET পরীক্ষায় উত্তীর্ণ হলে এই গবেষণা পদে যোগ দেওয়া যায়।

উচ্চশিক্ষার সুযোগ: M.Tech, MBA (Chemical Industry), PhD — এই পথগুলো শিল্প রসায়নের স্নাতকদের আরও উচ্চ পদ ও বেশি বেতনের সুযোগ দেয়। IIT ও IISc-এ গবেষণা বৃত্তির (Fellowship) মাধ্যমে বিনামূল্যে PhD করা সম্ভব।

◆ ভবিষ্যতের সম্ভাবনা: সবুজ হাইড্রোজেন ও বায়োফুয়েল

ভারত সরকার ২০৩০ সালের মধ্যে ৫ মিলিয়ন টন সবুজ হাইড্রোজেন উৎপাদনের লক্ষ্যমাত্রা নির্ধারণ করেছে। এই বিশাল প্রকল্পে শিল্প রসায়নবিদদের ভূমিকা সবচেয়ে গুরুত্বপূর্ণ হবে। পাশাপাশি বায়োফুয়েল, কোল গ্যাসিফিকেশন এবং কার্বন ক্যাপচার প্রযুক্তিও নতুন কর্মসংস্থানের দ্বার উন্মোচন করেছে।

কয়লা-ভিত্তিক শিল্পে CTL (Coal to Liquid) প্রযুক্তি এবং পেট্রোলিয়াম খাতে ডিপওয়াটার ড্রিলিং ও LNG টার্মিনাল প্রযুক্তিও আগামী শিল্প রসায়নবিদদের জন্য নতুন দিগন্ত খুলে দিচ্ছে।

ভারতের লক্ষ্য: ২০৩০ সালের মধ্যে পেট্রোকেমিক্যাল উৎপাদন ক্ষমতা তিনগুণ বৃদ্ধি করা।
এই লক্ষ্য পূরণে আরও ৫ লক্ষ দক্ষ শিল্প রসায়নবিদ প্রয়োজন হবে।

উপসংহার

শিল্প রসায়ন ভারতের শিল্পায়নের মেরুদণ্ড। কয়লার আলকাতরা থেকে জীবনদায়ী ওষুধ, পেট্রোলিয়াম থেকে পরিবেশবান্ধব জ্বালানি — প্রতিটি রূপান্তরের কারিগর হলেন শিল্প রসায়নবিদরা। যারা এই কোর্স বেছে নিচ্ছেন, তারা শুধু একটি ডিগ্রি নিচ্ছেন না — তারা ভারতের ‘আত্মনির্ভর’ ও ‘সবুজ’ স্বপ্নকে বাস্তব রূপ দেওয়ার দায়িত্ব কাঁধে তুলে নিচ্ছেন।

কয়লা ও পেট্রোলিয়াম শিল্পে ক্যারিয়ারের সুযোগ আগামী দশকে আরও বিস্তৃত হবে, কারণ ভারত জীবাশ্ম জ্বালানির দক্ষ ব্যবহার ও সবুজ শক্তির দিকে একসাথে যাত্রা করছে। এই যাত্রায় শিল্প রসায়নের শিক্ষার্থীরাই হবেন পথিকৃৎ।

“কয়লা ও পেট্রোলিয়ামের রসায়ন জানা মানে ভারতের
শক্তি ও ভবিষ্যতের চাবিকাঠি হাতে রাখা।”

— অনুরাগ ঘোষ
আইসি, তৃতীয় বর্ষ

রঞ্জি, ভারতীয় ক্রিকেটের নায়ক

আজকাল ভারতের প্রতিটি রাস্তা ও পাড়ায় বাচ্চাদের ক্রিকেট খেলতে দেখা যায়। ক্রিকেট এখন এক উন্মাদনায় পরিণত হয়েছে। মানুষ সব কাজ ফেলে রেডিওর সামনে বা টেলিভিশন দেখতে দেখতে এটি নিয়ে আলোচনা করে। এর সাথে প্রচুর অর্থ জড়িত থাকায় দুর্নীতি এবং রাজনীতিও এতে প্রবেশ করতে শুরু করেছে; কিন্তু ৫০-৬০ বছর আগে এমনটা ছিল না।

ভারতে ক্রিকেটকে জনপ্রিয় করার কৃতিত্ব দেওয়া হয় গুজরাট রাজ্যের নওয়ানগরের রাজকুমার রণজিৎ সিংকে। তিনি একজন মহান ক্রীড়াবিদ এবং দেশপ্রেমিক ছিলেন। তিনি ১৮৭২ সালে জন্মগ্রহণ করেন। তিনি তাঁর শৈশব সরোদর এবং তারপর রাজকোটে কাটান। রাজকোটে তাঁর ক্রিকেটের সাথে পরিচয় হয়। তিনি দ্রুত এই খেলায় পারদর্শী হয়ে ওঠেন।

১৮৯২ সালে, তিনি ইংল্যান্ডে যান এবং প্রাথমিক ইংরেজি শেখার জন্য এক বছরের জন্য মেলবোর্ন স্কুলে ভর্তি হন। এরপর তিনি কেমব্রিজ বিশ্ববিদ্যালয়ে ভর্তি হন। ইংল্যান্ডে তীব্র শীত পড়ে। জুন, জুলাই এবং আগস্ট মাসগুলো উষ্ণ থাকে এবং রোদ উপভোগ করা যায়। সেই দিনগুলিতে লোকেরা সারাদিন ধরে ক্রিকেট খেলতে ভালোবাসত। ক্রিকেটে ইংরেজদের মতো একই স্তরের নৈপুণ্য অর্জন করার জন্য রঞ্জি পেশাদার বোলারদের সাথে অনুশীলন শুরু করেন।

ইংল্যান্ডে ভারতীয়দের যথেষ্ট বৈষম্যের শিকার হতে হয়েছিল; কিন্তু নিজের দক্ষতার কারণে রঞ্জি এক বছরের মধ্যেই প্রথম-শ্রেণীর ক্রিকেট খেলা শুরু করেন। অল্প সময়ের মধ্যেই তিনি তাঁর বিশ্ববিদ্যালয় দলে অন্তর্ভুক্ত হন এবং এই অবস্থানে পৌঁছানো প্রথম ভারতীয় হন। দ্রুত রান করার ক্ষমতার কারণে তাঁকে রণজিৎ সিং-এর পরিবর্তে রুঙ্গতে সিং নামে ডাকা হতো।

১৯০৭ সালে রঞ্জিকে তাঁর রাজ্যের রাজা করা হয়। তিনি তখন নওয়ানগরের জাম সাহেব নামে পরিচিত হন। এই দায়িত্বের কারণে ক্রিকেটের জন্য তাঁর হাতে সময় কমে যায়। তা সত্ত্বেও, তিনি বছরে সাত থেকে আট মাস ক্রিকেট খেলার জন্য ইংল্যান্ডে যেতেন।

রাজ্যের প্রশাসনিক কাজেও রঞ্জির গভীর আগ্রহ ছিল। ১৯১৪ সালে তিনি প্রথম বিশ্বযুদ্ধে একজন সৈনিক হিসেবে তালিকাভুক্ত হন। ১৯২০ সালে লীগ অফ নেশনস সম্মেলনে রঞ্জি ভারতীয় শাসকদের প্রতিনিধিদলের নেতৃত্বও দিয়েছিলেন।

ভারতে ক্রিকেটের প্রসারের জন্য রঞ্জি ইংল্যান্ড থেকে সেরা খেলোয়াড়দের আমন্ত্রণ জানিয়েছিলেন। এর ফলে ভারতে অনেক চমৎকার খেলোয়াড়ের বিকাশ ঘটে, যার মধ্যে ছিলেন তাঁর ভাইপো দিলীপ সিং। তিনি বিদেশে গমনকারী খেলোয়াড়দের ভারতের জন্য গৌরব বয়ে আনতে সর্বদা উৎসাহিত করতেন। তিনি ক্রিকেটে ব্যাকফুটে খেলা এবং লেগ গ্লান্স-এর মতো নতুন কৌশল জনপ্রিয় করেছিলেন।

রঞ্জির একটি উদার হৃদয় ছিল। উচ্চশিক্ষার জন্য বিদেশে গমনকারী যেই হোক না কেন, তিনি রাজপুত্র বা সাধারণ যুবক, সকলকেই উৎসাহিত ও সমর্থন করতেন। একবার একটি শুটিং প্রতিযোগিতা দেখার সময় হঠাৎ একটি গুলি তাঁর চোখে লাগে, যার ফলে তিনি অচল হয়ে পড়েন। কিন্তু, খেলাটির অনুরাগী হওয়ায় রঞ্জি সেই খেলোয়াড়ের নাম কারও কাছে প্রকাশ করেননি।

আজ, অনেক ভারতীয় ক্রিকেটার বিশ্বজুড়ে অত্যন্ত সম্মানিত; তবুও, রঞ্জিকে ভারতীয় ক্রিকেটের নায়ক হিসেবে বিবেচনা করা হয়। রঞ্জি ১৯৩৩ সালের ২ এপ্রিল মৃত্যুবরণ করেন। তাঁর স্মরণে ভারতে প্রতি বছর রঞ্জি ট্রফি অনুষ্ঠিত হয়।

.....
সংকলন করেছেন: মাধব ঘোষ

গণিত বিভাগ (কর্মচারী)

শরৎচন্দ্র চট্টোপাধ্যায় জীবনী

তিনি হুগলি জেলার দেবানন্দপুরে জন্মগ্রহণ করেন। তিনি তাঁর পিতামাতার নয় সন্তানের মধ্যে একজন ছিলেন। তিনি তাঁর শৈশব দেবানন্দপুরে এবং কৈশোর ভাগলপুরে কাটান। বাড়িতে সন্তানদের ঠিকমতো শাসন করা হতো না। পাঁচ বছর বয়সে তাঁকে দেবানন্দপুরের পেয়ারি পণ্ডিত স্কুলে ভর্তি করা হয়। ভাগলপুর ছিল শরৎচন্দ্রের পিত্রালয়। তাঁর মাতামহ, কেদারনাথ গাঙ্গুলীর আদমপুরে একটি বাড়ি ছিল এবং তাঁর পরিবারকে একটি সম্ভ্রম, অভিজাত বাঙালি পরিবার হিসেবে গণ্য করা হতো। তাঁর মাতামহের বেশ কয়েকজন ভাই ছিলেন এবং তাঁরা একটি যৌথ পরিবারে বাস করতেন। তাই তাঁর অনেক মামা-মামী ও খালা-খালু ছিলেন। তাঁর ছোট পিতামহ, অঘোরনাথ গাঙ্গুলীর ছেলে, মনীন্দ্রনাথ তাঁর সহপাঠী ছিলেন।

তাঁর বাবা, মতিলাল, ছিলেন দায়িত্বজ্ঞানহীন এবং কোনো চাকরি ধরে রাখতে তাঁর অসুবিধা হতো। এর ফলে পরিবারটি দারিদ্র্যের কবলে পড়ে এবং তাদের সন্তানদের নিয়ে দেবানন্দপুর ছেড়ে ভাগলপুরে শ্বশুরবাড়িতে থাকতে যেতে হয়। ফলস্বরূপ, শরৎচন্দ্র তাঁর শৈশব ভাগলপুরেই কাটান এবং সেখানেই শিক্ষা লাভ করেন।

দারিদ্র্য ও বঞ্চনার মধ্যে বড় হওয়া সত্ত্বেও, শরৎ স্বভাবগতভাবে দয়ালু ও দুষ্ট প্রকৃতির ছিলেন। তিনি প্রায়শই তাঁর মামা ও শৈশবের বন্ধুদের সাথে দুষ্টমি করতেন। গল্পকার শরতের বিখ্যাত চরিত্র দেবদাস, শ্রীকান্ত, সত্যসাচী এবং দুরদত্ত রামের চরিত্র পর্যবেক্ষণ করলে তাদের শৈশবের দুষ্টমি প্রকাশ পায়। যখন শরৎ পালিয়ে যাওয়ার মতো বড় হলেন, তখন তিনি মাঝে মাঝে পড়াশোনা থেকে পালিয়ে যেতেন। এতে কোনো শোরগোল হতো না, কিন্তু ফিরে এলে তাঁকে মারধর করা হতো।

১৮৮৩ সালে, শরৎচন্দ্র ভাগলপুরের দুর্গাচরণ এম.ই. স্কুলের বৃত্তিপ্রাপ্ত শ্রেণিতে ভর্তি হন। তাঁর মাতামহ কেদারনাথ গাঙ্গুলী ছিলেন সেই স্কুলের অধ্যক্ষ। বৃত্তি পেয়ে শরৎ টি.এন. জুবিলি কলেজিয়েট স্কুলে ভর্তি হন। তাঁর প্রতিভা ক্রমাগত বিকশিত হতে থাকে। ১৮৯৩ সালে হুগলি স্কুলে ছাত্র থাকাকালীন তাঁর সাহিত্যচর্চা শুরু হয়। ১৮৯৪ সালে তিনি দশম শ্রেণির পর অনুষ্ঠিত প্রবেশিকা পরীক্ষায় দ্বিতীয় বিভাগে উত্তীর্ণ হন। এই সময়েই তিনি ভাগলপুর সাহিত্য সভা প্রতিষ্ঠা করেন। সভার মুখপত্র ছিল হাতে লেখা মাসিক পত্রিকা ‘ছায়া’। এই সময়ে তিনি ‘বাসা’ নামে একটি উপন্যাস লেখেন, কিন্তু সেটি কখনও প্রকাশিত হয়নি। তাঁর কলেজের পড়াশোনা অসমাপ্ত থেকে যায়।

কলেজ ছাড়ার পর, ১৮৯৬ থেকে ১৮৯৯ সাল পর্যন্ত শরৎচন্দ্র ভাগলপুরের আদমপুর ক্লাবের সদস্যদের সঙ্গে খেলাধুলা ও অভিনয় করে সময় কাটাতেন। এই সময়ে তিনি বিভূতিভূষণ ভট্টের বাড়িতে একটি সাহিত্য সমাবেশের আয়োজন করেন, যার ফলস্বরূপ ‘বড়দি’, ‘দেবদাস’, ‘চন্দ্রনাথ’, ‘শুভদা’-র মতো উপন্যাস এবং ‘অনুপমার প্রেম’, ‘আলো ও ছায়া’, ‘বোঝা’ ও ‘হরিচরণ’-এর মতো ছোটগল্প রচিত হয়। তিনি কিছুকাল বানেলি এস্টেটেও কাজ করেছিলেন। কিন্তু ১৯০০ সালে, পিতার

মৃত্যুতে ভ্রূদ্ধ হয়ে তিনি সন্ধ্যাসীর ছদ্মবেশে বাড়ি ছেড়ে চলে যান। এই সময়েই তাঁর পিতা মারা যান এবং তিনি তাঁর অন্তিম সংস্কার সম্পন্ন করতে ভাগলপুরে ফিরে আসেন। ১৯০২ সালে, তিনি কলকাতা হাইকোর্টের আইনজীবী, তাঁর মামা লালমোহন গঙ্গোপাধ্যায়ের সঙ্গে থাকার জন্য কলকাতায় চলে যান। তাঁর বাড়িতে থেকে তিনি হিন্দি বই ইংরেজিতে অনুবাদ করতে শুরু করেন এবং মাসে ত্রিশ টাকা উপার্জন করতেন। এই সময়ে তিনি ‘মন্দির’ শিরোনামে একটি ছোটগল্প লিখে ‘কুন্তলিন’ নামক একটি প্রতিযোগিতায় জমা দেন এবং সেখানে বিজয়ী হন।

লালমোহন গঙ্গোপাধ্যায়ের বাড়িতে ছয় মাস থাকার পর, শরৎচন্দ্র ১৯০৩ সালের জানুয়ারিতে রেশ্মুনে লালমোহন গঙ্গোপাধ্যায়ের শ্যালক, আইনজীবী অঘোরনাথ চট্টোপাধ্যায়ের বাড়িতে চলে যান। অঘোরনাথ বার্মা রেলওয়ের অডিট অফিসে তাঁর জন্য একটি অস্থায়ী চাকরির ব্যবস্থা করে দেন। এই সময়ে বঙ্গচন্দ্র নামে এক ব্যক্তির সঙ্গে তাঁর পরিচয় হয়, যিনি পণ্ডিত হলেও ছিলেন একজন মদ্যপ এবং ঝামেলাবাজ। এটিই ছিল ‘চরিত্রহীন’ উপন্যাসের বীজ, যেখানে মেসের জীবন এবং এক মেস পরিচারিকার (সাবিত্রী) সঙ্গে প্রেমের কাহিনী বর্ণিত হয়েছে। সেখানে দুই বছর থাকার পর, তিনি তাঁর ভাই গিরিন্দ্রনাথ সরকারের সঙ্গে পেগুতে চলে যান এবং সেখানে অবিনাশ চট্টোপাধ্যায়ের বাড়িতে থাকতেন। ১৯০৬ সালের এপ্রিল মাসে, বার্মার গণপূর্ত হিসাব দপ্তরের উপ-পরীক্ষক মনীন্দ্রনাথ মিত্রের সহায়তায় শরৎচন্দ্র রেশ্মুন দপ্তরে একটি চাকরি পান, যে পদে তিনি পরবর্তী দশ বছর অধিষ্ঠিত ছিলেন।

১৯১২ সালের অক্টোবর মাসে, শরৎচন্দ্র এক মাসের ছুটি কাটিয়ে দেশে ফিরলে, ‘যমুনা’ পত্রিকার সম্পাদক ফনিন্দ্রনাথ পাল তাঁকে তাঁর পত্রিকার জন্য একটি প্রবন্ধ জমা দিতে অনুরোধ করেন। রেশ্মুনে ফিরে শরৎচন্দ্র ‘রামের সুমতি’ শিরোনামে একটি গল্প জমা দেন, যা বঙ্গবন্ধু ১৩১৯ সালে ‘যমুনা’ পত্রিকার ফাল্গুন ও চৈত্র সংখ্যায় প্রকাশিত হয়। পরবর্তীকালে, তিনি ‘ভারতবর্ষ’ পত্রিকায় প্রবন্ধ জমা দিতে শুরু করেন। ফনিন্দ্রনাথ পাল তাঁর উপন্যাস ‘বড় দিদি’ বই আকারে প্রকাশ করেন (১৯১৩)। এটি ছিল শরতের প্রথম প্রকাশিত রচনা। এম সি সরকার অ্যান্ড সন্স এবং গুরুদাস চট্টোপাধ্যায় অ্যান্ড সন্স তাঁর উপন্যাসগুলো বই আকারে প্রকাশ করে।

১৯১৫ সালে শরৎ ‘যমুনা’ পত্রিকার সঙ্গে তাঁর সম্পর্ক ছিল করেন এবং এরপর তিনি ‘ভারতবর্ষ’-এ নিয়মিত লিখতে শুরু করেন। ১৯১৬ সালে ছুটি নিয়ে মতবিরোধের কারণে শরৎচন্দ্র চাকরি ছেড়ে রেশ্মুন থেকে ওয়াজে-শিবপুরে ফিরে আসেন।

বার্মা থেকে ফিরে তিনি তাঁর বিখ্যাত উপন্যাস ‘শ্রীকান্ত’ লিখতে শুরু করেন, যা ১৯১৭ সালে প্রকাশিত হয়।

শরৎচন্দ্র ১৯৩৮ সালের ১৬ই জানুয়ারি, ৬২ বছর বয়সে কলকাতা পার্ক নার্সিং হোমে মৃত্যুবরণ করেন।

তথ্যসূত্র - উইকিপিডিয়া

— পবিত্র রায়

আইসি - তৃতীয় বর্ষ

বাংলা প্রবন্ধ: রাজা রামমোহন রায়

• ভূমিকা

রাজা রামমোহন রায় ছিলেন ভারতের একজন মহান সমাজ সংস্কারক। তাঁকে ভারতীয় নবজাগরণের জনকও বলা হয়। তিনি ১৭৭২ সালে বাংলার রাধানগর গ্রামে জন্মগ্রহণ করেন। সেই সময় ভারতীয় সমাজ অনেক কুসংস্কার ও অন্ধবিশ্বাসে ভরা ছিল। মানুষের মধ্যে শিক্ষার অভাব ছিল এবং নারীদের অবস্থাও খুব খারাপ ছিল।

এই পরিস্থিতিতে রাজা রামমোহন রায় সমাজকে বদলানোর চেষ্টা করেন। তিনি মানুষকে সঠিক ও ভুলের পার্থক্য বোঝাতে চেয়েছিলেন এবং সমাজকে একটি নতুন দিশা দেখিয়েছিলেন।

• শৈশব ও শিক্ষা

রাজা রামমোহন রায় ছোটবেলা থেকেই পড়াশোনায় খুব ভালো ছিলেন। নতুন নতুন বিষয় শেখার প্রতি তাঁর খুব আগ্রহ ছিল। তিনি বাংলা, সংস্কৃত, আরবি, পারসি এবং ইংরেজি ভাষা শিখেছিলেন। সেই সময় এত ভাষা জানা সত্যিই বড় বিষয় ছিল।

তিনি বিভিন্ন ধর্ম সম্পর্কে জানতেও আগ্রহী ছিলেন। তিনি হিন্দু, ইসলাম এবং খ্রিস্টান ধর্ম সম্পর্কে পড়াশোনা করেন এবং বুঝতে পারেন যে সব ধর্মই মানুষকে ভালো হতে শেখায়। এই কারণেই তাঁর চিন্তাধারা ছিল খুব উদার ও খোলা মনের।

• সতীদাহ প্রথার বিরুদ্ধে তাঁর প্রচেষ্টা

রাজা রামমোহন রায়ের সবচেয়ে বড় অবদান ছিল সতীদাহ প্রথার বিরুদ্ধে তাঁর সংগ্রাম। সেই সময় কোনো মহিলার স্বামী মারা গেলে, তাকে জোর করে চিতায় পুড়িয়ে মারা হতো। এটি ছিল খুবই নিষ্ঠুর ও অমানবিক প্রথা।

রাজা রামমোহন রায় এই প্রথার বিরুদ্ধে প্রতিবাদ করেন। তিনি মানুষকে বোঝানোর চেষ্টা করেন যে এটি ভুল এবং এটি বন্ধ হওয়া উচিত। তিনি এই বিষয়ে লেখা লিখেছিলেন এবং সরকারকেও এই প্রথা বন্ধ করার জন্য অনুরোধ করেছিলেন।

তাঁর প্রচেষ্টার ফলে ১৮২৯ সালে সতীদাহ প্রথা বন্ধ হয়ে যায়। এটি সমাজের জন্য একটি বড় পরিবর্তন ছিল।

• ব্রাহ্ম সমাজ প্রতিষ্ঠা

রাজা রামমোহন রায় ১৮২৮ সালে ব্রাহ্ম সমাজ প্রতিষ্ঠা করেন। এর উদ্দেশ্য ছিল সমাজের খারাপ প্রথাগুলো দূর করা। তিনি চাইতেন মানুষ অন্ধবিশ্বাস ছেড়ে যুক্তি দিয়ে চিন্তা করুক।

ব্রাহ্ম সমাজ মানুষকে বোঝাতে যে ঈশ্বর এক এবং আমাদের সব ধর্মকে সম্মান করা উচিত। এই প্রতিষ্ঠান সমাজে সচেতনতা বাড়াতে অনেক সাহায্য করে।

• শিক্ষার প্রতি তাঁর ভাবনা

রাজা রামমোহন রায় মনে করতেন যে শিক্ষা খুবই গুরুত্বপূর্ণ। শিক্ষা ছাড়া কোনো সমাজ উন্নতি করতে পারে না। তিনি আধুনিক শিক্ষাকে সমর্থন করতেন এবং মানুষকে পড়াশোনা করতে উৎসাহ দিতেন।

তিনি চাইতেন মানুষ শুধু ধর্মীয় শিক্ষা নয়, বরং বিজ্ঞান ও অন্যান্য বিষয়ও শিখুক, যাতে তারা পৃথিবীকে ভালোভাবে বুঝতে পারে।

• নারীদের জন্য তাঁর ভাবনা

রাজা রামমোহন রায় নারীদের অবস্থার উন্নতি নিয়ে খুব চিন্তিত ছিলেন। তিনি নারীদের অধিকার ও শিক্ষার পক্ষে ছিলেন। তিনি চাইতেন নারীরা সমাজে সম্মান পায় এবং স্বাধীনভাবে বাঁচতে পারে।

তিনি বাল্যবিবাহ ও অন্যান্য খারাপ প্রথার বিরোধিতা করেন। তাঁর মতে, নারীরা উন্নত না হলে সমাজও উন্নত হতে পারে না।

• তাঁর চিন্তাধারা

রাজা রামমোহন রায়ের চিন্তাধারা ছিল খুব আধুনিক। তিনি অন্ধবিশ্বাসের বিরুদ্ধে ছিলেন এবং যুক্তির উপর বিশ্বাস করতেন। তিনি চাইতেন মানুষ নিজের মতো করে ভাবুক এবং সঠিক সিদ্ধান্ত নিক।

তিনি সব ধর্মের প্রতি সম্মান দেখাতে বলতেন এবং মানুষকে মিলেমিশে থাকার শিক্ষা দিতেন। এই কারণেই তিনি একজন মহান সমাজ সংস্কারক হিসেবে পরিচিত।

— খুশবু কুমারী

বি.এ. প্রোগ্রাম (ইতিহাস + বাংলা)

देश

2025-26

सिंधी विभाग

संपादक : आचार्य ललित मोहन

छात्र संपादक : विपिन करनोजिया

विषय सूची

1. पाडेसरी	110
2. आज़ादी	111
3. बाबो	112
4. संतु तुकाराम	113-115

पाडेसारी

सभिनि जा थींदा आहिनि पाडेसरी तमामु
कुझु कंदा आहिनि निण्ड हरामु
सुबुह थींदे ई हली था अचनि बियनि जे घरु
मुफ्त जी चाहिं पीअंदा आहिनि
कपड़ा धोअण लाइ सर्फ बि न घणी ईदा आहिनि
हर छंछरु हिक मुठि सर्फ घुरण ईदा आहिनि संदनि घर
वजु त गिलास पाणी बि न पुछनि
असांजे घरु अची पीअण लाइ
शर्बत जो गिलास घुरनि ।

कुझु पाडेसिरी हुदां आहिनि डाढा सुठा
जेको इहो सभु न कंदा आहिनि
ऐ हूँदा अहिनि दिल जा सच्चा
असांजो बि आहे पाडेसिरी हिक अहिडो
ख्याल जो आहे डाढो सुठो
घुरण बदिरां असांखे ही डेई वेदो आहे
पर असांखे बि इहो याद रखण घुरिजे
हिक सुठो पाडेसिरी ठहण जी कोशिश करण खपे ।

वर्षा लुधवानी

आज़ादी

पखी आहिनि कैद जेकडहिं
उडामण में करि मदद तूं
राति आहे कारी जहिं करें
डीओ बारे करि रोशन तूं

गुजरी विया घणा ई साल
पुराणे वीचारनि में रहि करे

मर्द ऐं औरत या हुजे कोई बार
सभिनी जे जीवन जो करि आदरु तू भजी छदि दीवारु सभु
अगिते वधु जीत जी राह ते
उन्हनि वीरनि छा पातो
जेकडहि तूं हाणे बि डिजी वियों आहीं
उथु, वज्रु ऐं छू आसमान खे
आज़ादीअ ते आहे सभिनि जो हकु।

- वर्षा लुधवानी

बाबो

हिक किरदारु वांगुरु आसान लफ़्ज़ु आहे.

उहो जेको आसान आहे ,

उहो जयईणु वधीक मुश्किल आहे.

जीअं तवहां गडु हुआ ,

सभु कुझु आसान हो पर

अलिफ़ु जडुहिं तवहां मूं सां नाहियो ,

मूं खे अहिसासु थियो आहे त

तवहां जो किरदारु केतिरो मुश्किल हो ,

जेकडुहिं तवहां सां नाहियो ,

सभु कुझु नाहे मुकमिलु लग्ने थो ,

जेकडुहिं तवहां सां नाहियो ,

सभु कुझु विखरियल लग्ने थो

पर मां अणूं थो त जेको बि सुठो

वक्रतु मूं तवहां सां गुज़ारियो आहे ,

आऊं हुन जे यादगीरीन सां

आहसती आहसती सिखंदासि

(निशा बाटनी एज़ाज़ु)

संतु तुकाराम

हिन्दुस्तान जे अजीमु संतनि में , संत टोकारम हिकु खासि मुकामु रखे थो. हुन 8 मार्च 1608 ते पोने में पैदाइश थी. हुन जो पीउ मस्टर वलोबा ऐं माउ कनकाई तमामु घणो सतवक फ़ितरत जा ब्रिजु हुआ. तंहिं करे टोकारम खे पंहिंजे बचपनु खां ई वथाल भकती सनसकार में पालियो व्यो.

हुन जे खानदानु जे माली हालति तमामु खराबु हुई. तंहिं हूंदे , टोकारम कइहिं बि पंहिंजी मुतमइन नौईयत खां विचलितु न थियो. बैदि में , हुन जे वालदीनि ऐं पोइ हुन जे ज़ाल ऐं पुटु पिणु मरी व्या , पर टोकारम रबु जी इबादत खां पवईती न वरितो.

तोकारम फ़ितरत सां मशीन तरजमो खां मुतासिर हो. हू अक्सर भामगरी ऐं भंडारु जे पहाड़नि ते वेंदो हो ऐं अकीलाई में वेंदो हो. हुन जन्नेश्वरी ऐं एकनथी भागवत जो बि तइलीम कयो. हुन खे कीरतन ऐं सतसंग जो तमामु घणो शौकीन हो. जइहिं हू सिर्फ़ 9 सालनि जो हो , हुन खे पंहिंजे ख्वाब में हिक ताक़तवर संत तर्फ़ां नज़र डिनी वई ऐं मंतरु रामकरशन हरी जी तबलीग़ कई. इहो हुन जी ज़िंदगी खे तब्दील करे छडियो ऐं हू ड़िंहं ऐं रातु रब में रफ़्तार थी व्यो.

हिकु भैरो मशहूर संत नामदेव टोकारम खे पंहिंजे ख्वाब में ड़ेखारु ड़िनो हो ऐं हुन खे भजनु लखणु लाइ चयो हो.

तोकारम अगु कड़हिं बि का शाइरी तरतीब न डिनी हुई , पर संत नामदीफ़ जे बरकत सां हुन जे ज़हनु में शाइरी जो वहकरो पैदा थी व्यो.

हुन जे कमनि खे अबनगा सड़ियो वेंदो आहे हुन तकरीबनि 6000 अहिइनि अबहनगन खे तरतीब डिनो. इहो हुन जी प्रसिद्धि दुनिया में फैलियो. माण्हू हुन खे डिसणु लाइ परी परी खां आया. हर डींहुं हुन जे आश्रम में हिकु मेला थी रहियो हो.

कुझु माण्हू जहिइकि रामेश्वर भट्टु ऐं मुंबजी हुन जे प्रसिद्धि जे करे बुधणु शुरू कया. उन्हनि टोकारम खे जिस्मानी ऐं ज़हनी तौर ते परेशान करणु शुरू कयो. हिक भेरो हुन पंहिंजे अबहंग गडिजाणी नदी में गरक करे छड़ियो. टोकराम खे इन खां तमामु घणो तकलीफ़ हुई. उहे मंदरु में खुदा जी मूर्ति जे अग्रियां वेठा. उन्हनि फ़ेसिलो कयो त उहे भोजन ऐं पाणे न वठंदा जीसताईन उन्हनि जा किताबु वापस न कया वजनि.

पर 13 डींहुं गुज़िरी व्या आहिनि. इन ते टोकारम जज़बाती थी वई ऐं खुदा जी तमामु घणी तौहीन कई. हुन चयो , नाथ , तवहां मुजस्समा जे पुठियां छुपी रहिया आहियो ऐं हिते आऊं बख़्शु ऐं तरसायो वेंदो आहियां. हाणि बि , जेकड़हिं तवहां मुंहिंजी ख्वाहिश पूरी न कई , आऊं खुदकुशी कंदो ऐं उन जो इल्ज़ामु मुकमिलु तौर ते तवहां ते लही वेंदो.

इहो चयो वेंदो आहे त हिक ई भेरो रबु नौजवाननि में ज़ाहिरु थी व्यो हूद ऐं संत टोकारम जा सभिनी किताबनि खे महफूज़ु तौर ते वापसु करे छड़ियो.

इहो सभिनी जी अखियुनि खोलियो जेकी हुन खे परेशान करे रहिया हुआ.
हाणे हू पिणु टोकारम जे तहफुजु में आयव ऐं हुन जो अक्रीदो बणिजी व्यो.

इहो चयो वेंदो आहे त हिक भेरो शेवाजी महाराज संत तुकरम जे वेझो वेठो
हो जडुहिं मुगल संदसि आश्रमु जो घीरो कयो. टोकारम जे दरख्वास्त ते ,
सनकारा अती ज़ाहिरु थी ऐं शेवाजी जे चालाकी वारो रूपु वरितो ऐं बीं तरफ़
भ ranण लग्गो. इन ते मुगल सिपाहियनि उन जे पुठियां भजिकड़ी कई ऐं
असुलु शेवाजी खे कुझु बि न थियो. इन खां मुतासिर थी , शेवाजी टोकारम
खे कुझु सोना जा सिक्का गिफ़्ट कया , पर टोकारम उन्हनि खे कबूल
करणु खां इन्कारु कयो त सोना ऐं ज़मीन मुंहिंजे लाइ बराबर आहिनि.

सैंट टोकारम 1650 ए डी में वथबा जी रिहाइश ते व्यो , हमेशा लाइ , भागी
भागी जो पैगामु पंहिंजे अबहनगनि ज़रिए शेयर कयो.

.....

वपन कारनोगया ,

(विपिन करनोजिया)

प्रोग्राम



छात्र संपादक



अर्हत (हिंदी)



अद्रिता चक्रवर्ती (अंग्रेजी)



बाल मुकुंद सिंह (संस्कृत)



कोमल (पंजाबी)



खुशबू कुमारी (बांग्ला)



विपिन करनोजिया (सिंधी)



DESHBANDHU COLLEGE

(UNIVERSITY OF DELHI)

Kalkaji Main Rd, Block H, Kalkaji,
New Delhi, Delhi 110019

A++ NAAC Accredited Institute with CGPA 3.65
13 Ranked in NIRF 2025 in Colleges Category



CONTACT INFO:

Phone : 011- 26439565,011-26235542

Anti-Ragging : +91-9818385270

E-mail : dbccollege.du@gmail.com

WEBSITE

Website: www.deshbandhucollege.ac.in

Facebook : www.facebook.com/deshbandhucollege

Twitter : www.twitter.com/deshbandhucollege